मङ्गलकोष॥

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दों का तात्पर्यप्रकाशक

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जनमण्डलीमण्डन कालिन् औनिंग साहब
एम० ए० पूर्व डैरेक्टर बीरेशके समय में

मुंशी मंगलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर प्रदेश
सीतापुर ने अतिपरिश्रम से रचना किया

श्रीयुत विद्यागुणग्राहक, गुणियन सुखदायक जान० सी० न्यस्फील्ड साहब अंग्रेजदेशीय
पाठशालाध्यक्ष बीरेश ने पौरज्ञानपदार्थपाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के उपकारार्थ
अंगीकार किया॥

चौथी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया सितम्बर सन् १९०३ ई०॥

दाम

कोष व व्याकरणकी पुस्तकें।

अमरकोष भाषाटीकासहित क़ी० ॥।)

पण्डित महेशदत्त जी की भाषा टीका समेत जिसमें हरएक नामके अर्थ सुगमरीति से लिखे हैं कि कमपढ़ेहुये मनुष्य भी सुगमता से जान सक्ते हैं कागज़ सफ़ेद गुन्दा छापा टैप पैमाना १०+६॥ जुज़२३ वर्क ३ ॥

तथा कागज हिनाई छापा पत्थर जुज़ २१ वर्क़ १ क़ीमत ॥)

अमरकोष भाषा क़ी० ।≡)॥

महन्तरामाजी चतुरदासकृत दोहा चौपाई इत्यादि मनोहर छन्दों में वर्णित है पैमाना १०+६॥ जुज़ १८ ॥

शब्दार्थ संग्रहकोष १।) पुख़्ता ॥

विदित होकि यह शब्दार्थ संग्रहकोष बहुतही अद्वितीय अनुपम है इसमें अमरकोष व वैद्यककोष आदिकों से शब्दोंका संग्रह अकारादि क्रमसे किया है ऐसा कोष आजतक नहीं बनाथा जिसकी पुस्तक हाथमें लेतेही तुरन्त विनागुरु की सहायता शब्द व शब्दार्थ का ज्ञान होजाता है यद्यपि इस समय बहुत से कोष अंगरेज़ी, फ़ारसी तथा हिन्दी के बनकर तैयार होगये हैं परन्तु उनके बड़े होने से अधिक मूल्य होजाने से सर्वजन नहीं पासक्ते हैं और इनदिनोंमें ऐसे ग्रन्थकी चाहना सबोंको रहती है क्योंकि विना कोषके विद्वानों, बालकों तथा अल्पज्ञों का काम नहीं चलता है इस आशयको विचार कर यन्त्रालयाधीश श्रीयुत बाबूप्रयागनारायणजी ने बहुतसा धन व्ययकर श्रीपण्डितवर शिवरत्न व चन्द्रमौलिआदि शास्त्रियों के द्वारा

Jata Shanker Singh
sarai Goberdhan
Benares.

मङ्गलकोष ॥

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दों का तात्पर्यप्रकाशक

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जनमण्डलीमण्डन कालिन् ब्रौनिंग साहब
एम० ए० पूर्व डैरेक्टर वीरेशके समय में

मुंशी मंगलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर प्रदेश
सीतापुर ने अतिपरिश्रम से रचना किया

श्रीयुत विद्यागुणग्राहक, गुणियन सुखदायक जान० सी० न्यस्फ़ील्ड साहब अवधदेशीय
पाठशालाध्यक्ष धीरेश ने पौरजानपदीयपाठाशालान्तर्गत विद्यार्थियों के उपकारार्थ
अंगीकार किया ॥

चौथी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया।

सितम्बर सन् १९०३ ई० ॥

होगये तब श्रीमन्निखिलसुखसमाज विराजमान विमल धार्मिकानेकसुरसमाज समान सामन्तोपहारीकृत कनकमय गजाश्व शब्दायित द्वारदेश प्रोद्दण्ड प्रचण्डाखण्ड विपक्षबल प्रोद्भटभटसमूहसंकर्त्तन निर्दयातिशय तीक्ष्णधार सहायीकृत खड्ग दिग्विजयी विनोदानन्दित महाभूताधिप शिव श्रीयुत कालिन् ब्रौनिंग साहब एम,ए, अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल वर्णमाला के अक्षरानुहारि निज शिष्य सीताराम और हरदेवबख़्श की सहायता पाकर सानुप्रासकरके मंगलकोष नाम रख–उक्त साहब वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित प्रतिष्ठा में निवेदन किया,तब साहिब सुजान गुणखानने दृष्टिगोचरकर आज्ञादी कि यह पुस्तक और अधिक कीजावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोष कृपा किया और एक ग्रन्थ तसलीमुल्लुग़ात द्वितीयभाग जिसमें भाषा शब्दोंकी फ़ारसीभाषा लिखी है हस्तामलक हुआ फिरसन् १८७२ ईसवी में यह कोष और अधिक कियागया परन्तु इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयमेंही रहगये थे कि दैवयोगसे हमलोगों के आनन्ददायी स्वस्ति श्रीमदुद्दाम गुणगणग्राम विस्फुरत्कमल मुख भरत विशदीकृतानेक संगीत प्रकारास्मदीय विद्या प्रचाराग्रणीय गुणिजनजेगीयमान यशोदानन्दकन्द कर्म्म पराक्रम श्रवण रसास्वादानन्दार्थि मनोभिलषित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान, सी, न्यस्फील्ड साहब एम, ए, पूर्व्वोक्त नागपुरगामी के स्थानपर अवधदेशीय पाठशालाओं के डैरेक्टर पबलिक इन्स्ट्रक्शन वीरेश नियतहोय ब्रह्मलोक से सुशोभितहुये और ग्रन्थ को कृपा कटाक्ष से अवलोकन करतेही आधीन के

अ० अव्य० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होजाता है यथा अकारण अर्थात् कारण रहित और स्वरादि शब्द के पहिले जब आवे तब अन् होजाता है यथा अनन्त अर्थात् अअन्त।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कौला।

अंगरखा० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।

अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्र विशेष।

अंगीठी० ना० स्त्री० पात्र जिसमेंआग रखते हैं।

अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुलीमें पहिनते हैं।

अंगोछा० ना० पु० देहपोंछनेका वस्त्र, रूमाल।

अंत० ना० पु० अन्त, समाप्ति, पूरा।

अंतर० अव्य० अन्तर, फरक।

अंतर्गति० ना० स्त्री० भीतरी चाल।

अंतरिक्ष० }
अंतरीक्ष० } ना० पु० छत। ऊपरकी जगह।

अंतर्यामी० गु० अंतर्जामी, जो दिल में रहै यह शब्द ईश्वर के लिये है।

अंतर्ध्यान० गु० अंतर्द्धान, छिपजाना, गुप्तहोना।

अंतःपट० ना० पु० भीतर का वस्त्र।

अंधाकुंवा० }
अंधकूप० } ना० पु० कुआं जो कूड़ाआदि से भरगया हो।

अन्धेर० ना० पु० अन्याय, उपद्रव।

अन्धकार० गु० अंधेरा।

अम्ब० ना० पु० आम।

अम्बर० ना० पु० आकाश, कपड़ा।

अंबारी० ना० स्त्री० हौदा जो हाथीपर रखते हैं।

अंश० ना० पु० भाग, हिस्सः दर्जा जो ६९ $\frac{१}{२}$ मीलका होता है।

अंशी० गु० भागी अर्थात् हिस्सेदार।

अंशु० ना० पु० किरण।

अंशुमती० ना० स्त्री० शालपर्णी।

अंशुमान्० ना० पु० सूर्य, सूर्यवंशीराजा वि०।

अंशुमाली० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा।

अंस० ना० पु० कंधा।

अऊत० ना० पु० निर्वंशी, बिनब्याहा।

अनृण० गु० उद्धार, बेबाक।

अकच्छ० गु० नंगा, मेहरा, वस्त्र रहित।

अकण्टक० गु० बेखटके, बेधड़क।

अकथ० }
अकथनीय० }
अकथ्य० } गु० जो कहने के योग्य न हो जो वर्णन रहित होवे।

अकनि० अ० क्रि० सुनिके, रामायणे यथा (तुरंग नचावहिं कुंवर वर अकनि मृदंग निशान)।

अकम्पन० ना० पु० राक्षसविशेष, कम्पहीन।

अकर्कश० गु० कोमल, नरम।

अकर्म० ना० पु० अपराध, कुकर्म।

अकर्मक० गु० कर्म रहित धातु ना० क्रिया अर्थात् जो कर्त्ता की शक्ति में होवे।

अकर्मण्य० गु० निकम्मा, बेकाम।

अकलंक० }
अकलंकित० } गु० निर्दोष, बेदाग।

अकल्याण० गु० कल्याण रहित, अमंगल।

अकवार० ना० स्त्री० अंकवार।

अकस्० ना० स्त्री० वैर, अदावत।

अकस्मात्० अव्य० अचानक, निमित्तहीन।

अकाज० ना० पु० कामका विनाश, खराबी।

अकाम० ना० पु० व्यर्थ, निष्फल, कामहीन।

अकारण० ना० पु० निमित्तहीन, बेमतलब, बेसबब।

अकारथ० गु० व्यर्थ, निष्फल।

अकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में अकार होवे।

अकाल० ना० पु० दुर्भिक्ष, कुसमय, कहत।

अकालफल० ना० पु० कुसमय के फल, बेमोसिमकी वस्तु, दुर्भिक्ष की वस्तु वा फल।

अकालमृत्यु० ना० पु० कुसमयमेंमरना, धोखे में मरना, बे मौतमरना।

अकाश० ना० पु० आकाश, प्रकाश हीन।
अकिञ्चन० गु० कंगाल, कुछ पास नहीं, केवल भगवान् भरोसे।
अक्रिय० गु० कुछ नहीं करता, करने के योग्यें न होवे।
अकुण्ठ० गु० तीक्ष्ण, तेज, विनाशरहित।
अकुताना० अ० क्रि० ऊबना, घबड़ाना।
अकुताई० गु० ऊबै, घबरावै।
अकुल० गु० कुछजातिनहीं, नीचघराना ना० पु० विशेष ईश्वर।
अकुलाना० अ० क्रि० व्याकुलहोना, घबड़ाना।
अकुलीन० } गु० धाकर, कुलहीन, नीचे।
अकुलीना० }
अकेल० } गु० दुःखी, एकही।
अकेली० }
अक्रूर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी के चचा। गु० जिसका अन्तःकरण कोमल हो।
अखण्ड० गु० समस्त, सम्पूर्ण, खंडहीन।
अखर्ब० गु० समस्त, बहुत।
अखल० गु० आखिल, ना० पु० देवता, सुर।
अखाड़ा० } ना० पु० जहां मल्लयुद्ध होता है, अंगनाई।
अखारा० }
अखिल० गु० समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल।
अखेट० ना० स्त्री० मृगया, शिकार।
अखयवट० } ना० पु० अक्षय वृक्ष।
अखयवृक्ष० }
अख्याति० ना० स्त्री० अपयश, अयश, बदनामी।
अग० ना० पु० पर्वत, अगम्य, जहां जा न सके।
अगम० } गु० जहां जाय न सके, जो बूझने के योग्य नहीं।
अगम्य० }
अगर० ना० पु० सुगन्धि प्रसिद्ध।
अगस्त० ना० पु० वृक्षविशेष।
अगस्ति० } ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने समुद्र को सुखा दिया था।
अगस्त्य० }
अगणित० गु० बहुत, जो गिना न जावे, बेहिसाब।

अगवानी० ना० स्त्री० आगेजाकर लेना, पेशवाई।
अगहन० ना० पु० नवयें महीना का नाम।
अगाऊ० अव्य० पहिले से, आगे।
अगाध० गु० अथाह, अत्यन्त गम्भीर।
अगार० ना० पु० घर, आगे।
अगास० ना० पु० अपराध, दोष, नाममालायां, अघ अगास हेलन अहित औगुण जो कछु पीय।
अगुवा० ना० पु० मार्ग दिखानेवाला, संदेशी, आगे चलनेहारा, प्रधान, चौधरी।
अगुण० गु० औगुण, गुणहीन, ना० पु० ईश्वर।
अगुरु० ना० पु० जिसका गुरु नहीं, नीच, ह्रस्व।
अगूढ़० गु० सुगम, जो गूढ़ नहीं।
अगूढ़गन्धा० ना० स्त्री० हींग।
अगोचर० गु० अदृश्य, अलख, अव्यय।
अगोटना० } स० क्रि० चौकीदेना, रखाना।
अगोरना० }
अगौनी० ना० स्त्री० अगवानी।
अग्नि० ना० पु० आगि, अगुआ।
अग्निका० ना० स्त्री० कलिहारी।
अग्निजिह्वा० ना० पु० देवता।
अग्निपाली० ना० स्त्री० चीता, बूटी।
अग्निमन्थ० ना० पु० अरणी।
अग्निमुखी० } ना० पु० भिलावांवृक्ष।
अग्निवक्रक० }
अग्निवल्लभ० ना० पु० राल, रार।
अग्निशिखा० ना० स्त्री० केशर, जाफ़रान।
अग्निसंस्कार० ना० पु० दाह देना, मृतक को जलाना वा उसके हेतु क्रिया विशेष।
अग्निहोत्री० ना० पु० अग्निपूजनेहारा, ब्राह्मणजाति विशेष।
अग्र० ना० पु० मुख्य, आगे, प्रथम भाग।
अग्रगण्य० गु० जो पहिले होवे, वा गिनाजावे।

अग्रगामी॰ गु॰ आगे चलनेहारा, पेशवा।

अग्रज॰ गु॰ जो पहिले प्रकट हुआ होवे, बड़ा।

अग्रता॰ } ना॰ स्त्री॰ पु॰ अगुआपन, ना॰
अग्रत्व॰ } पु॰ पेशवाई।

अग्रशोची॰ ना॰ पु॰ गु॰ पहिले शोचनेवाला, प्रथमही समझनेहारा, दूर अंदेश।

अग्रसर॰ गु॰ वा॰ पु॰ मुखिया, प्रधान, पेशवा, आगे चलनेहारा, सरदार।

अग्रहायण॰ ना॰ पु॰ अगहन।

अघ॰ ना॰ पु॰ पाप, दोष, गुनाह, अघासुर दैत्य।

अघटित॰ गु॰ अयोग्य, जो पूरा न परै।

अघाई॰ गु॰ पूरी, भरी।

अघाना॰ अ॰ क्रि॰ अफरना, आसूदः होना गु॰ सन्तुष्ट, धनवान्।

अघारि॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी।

अघासुर॰ ना॰ पु॰ दैत्यविशेष, जिसको श्री कृष्णचन्द्रने वध कियाथा।

अघी॰ गु॰ पापी, दोषी।

अघोर॰ ना॰ पु॰ भयानक, अचूक, शिवकृत मंत्र, धर्मविशेष, श्रीमहादेवजी।

अघोरपन्थ॰ ना॰ पु॰ धर्मविशेष।

अघोरपन्थी॰ } ना॰ पु॰ जो अघोरपन्थ का
अघोरी॰ } सेवन करै, मलादि संयुक्त सर्वभक्षी।

अघ्न॰ गु॰ मारनेहारा ना॰ पु॰ मारण, हनन।

अंक॰ ना॰ पु॰ अक्षर, गोदी, कनियां, चिह्न, संख्या, गिनती के नवअक्षर, निशानी।

अंकदुन॰ ना॰ पु॰ दुःख पीड़ा, नाममाला (बिशुरेकदेन अरु अंकदुन गहन वृजिन अघनाउ)।

अङ्कना॰ अ॰ क्रि॰ मोलठहराना, परीक्षित होना।

अङ्काना॰ स॰ क्रि॰ मोलठहराना, खाना।

अङ्कित॰ गु॰ चिह्न किया गया, लिखित, परीक्षित।

अंकुर॰ ना॰ पु॰ बीज बोने से जो अँखुवा पहिले निकलता है।

अंकुश॰ ना॰ पु॰ आंकुशी जिससे महावत हाथी को मारता है।

अङ्कोल॰ ना॰ पु॰ औषधि प्रसिद्ध।

अङ्ग॰ ना॰ पु॰ अवयव, शरीर, देह।

अङ्गद॰ ना॰ पु॰ बालिकापुत्र, भूषण, बाजूबन्द।

अङ्गदा॰ ना॰ स्त्री॰ नाग चन्द्रमा की एक कला का वा शरीरकी दाता।

अङ्गन॰ ना॰ पु॰ आंगन, सहन।

अङ्गना॰ ना॰ स्त्री॰ पत्नी, जोरू, स्त्री, आंगन।

अङ्गवना॰ अ॰ क्रि॰ सहना, गवारा करना।

अङ्गराग॰ ना॰ पु॰ उबटन, केसर, चंदनादि का शरीर बिषे मर्दन।

अङ्गारक॰ ना॰ पु॰ मंगल, भंगरा, पौधा।

अङ्गाङ्गिभाव॰ ना॰ पु॰ शरीर के अवयवों का सम्बन्ध।

अङ्गिरा॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष, बृहस्पतिजी के पिता।

अङ्गीकार॰ ना॰ पु॰ स्वीकार, कबूल, मंजूर।

अंगुल॰ ना॰ पु॰ आंगुल।

अंगुली॰ ना॰ स्त्री॰ हाथ का अवयव।

अंगुष्ठ॰ } ना॰ पु॰ अंगूठा।
अंगुष्ठा॰ }

अंगूठा॰ ना॰ पु॰ अंगुष्ठ।

अंगूठी॰ ना॰ स्त्री॰ अंगूठी, मुन्दरी।

अंगेठी॰ ना॰ स्त्री॰ अंगीठी।

अचगरी॰ ना॰ स्त्री॰ अनुचित, अकर कर्म, व्रजविलासे, यथा—सुनो महरि निज सुतकी करनी। करत अचगरी जात न बरनी॥

अचम्भा॰ }
अचम्भव॰ } ना॰ पु॰ आश्चर्य्य, तअज्जुब।
अचरज॰ }

अचल॰ गु॰ जो चल नहीं सक्ता ना॰ पु॰ पर्वतादि।

अचला॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।

अचानक॰ अव्य॰ अकस्मात्, एकाएक ना॰पु॰ कलकत्ता के निकट नगर विशेष।

अचानचक॰ अव्य॰ अकस्मात्, नागहान।

अचाना॰ स॰ क्रि॰ भोजन करके मुखधोना।

अचार॰ ना॰ पु॰ आम इत्यादि का जो बनता है और आचार।

अचिन्त॰ गु॰ चिन्ता रहित, निधड़क।

अचूक॰ गु॰ जो न चूके, ठीक।

अचेत॰ गु॰ संज्ञा रहित, बेहोश, मूर्छित।

अच्छत॰ ना॰ पु॰ अक्षत, घाव रहित।

अच्छा॰ गु॰ भला, सुडौल, सुन्दर।

अच्युत॰ गु॰ स्थिर, अचल विशेष, ईश्वर।

अच्युताग्रज॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेवजी।

अछेह॰ गु॰ बहुत, विहारीलाल सप्तशतिकायां॰ धरे रूप गुण को गरब फिरै अछेह उछाह।

अज॰ अव्य॰ आज, अब, ना॰ पु॰ ब्रह्मा, बकरा, ईश्वर, शिव, यौवन और आभरण, गु॰ जो पैदा न होवे वा उपजा किसी से न हो।

अजगर॰ ना॰ पु॰ बड़ासांप, अजदहासांप।

अजगुत॰ गु॰ अद्भुत, अजायब।

अजगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ बबरी पौधा।

अजन्म॰ गु॰ जिसका जन्म न होवे।

अजय॰ गु॰ जय रहित, जो जीता न जावे, ना॰ स्त्री॰ वीरभूमि, ज़िले की नदी विशेष।

अजया॰ ना॰ स्त्री॰ अजा।

अजर॰ गु॰ जरा रहित अर्थात् जो बूढ़ा न हो, ना॰ पु॰ देवता।

अजलोक॰ ना॰ पु॰ अयोध्याजी, ब्रह्मलोक।

अजवीथी॰ ना॰ स्त्री॰ सफेदी जो छोटे २ घने तारागणों की आकाशमें दीखपड़ती है।

अजहुं॰ अव्य॰ अबभी, अभी।

अजा॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी, माया।

अजात॰ गु॰ जन्म रहित जो न उपजे।

अजातअरि॰ } **अजातरिपु॰** } ना॰ पु॰ राजा युधिष्ठिर।

अजान॰ गु॰ अज्ञान, मूर्ख, नादान।

अजामिल॰ } **अजामील॰** } ना॰ पु॰ नाम एक मनुष्य पापिष्ठका जो नारायण कह के मरा और मुक्ति पाई।

अजित॰ } **अजीत॰** } गु॰ जो जीता न जासके, ईश्वर।

अजिन॰ ना॰ पु॰ सिंह इत्यादि का चर्म जो ब्रह्मचारी लोग बिछाते हैं।

अजिर॰ ना॰ पु॰ आंगन, सहन।

अजीर्ण॰ ना॰ पु॰ कुपच, बाई, नवीन।

अजौं॰ अव्य॰ अब तक, अभी।

अज्झल॰ ना॰ पु॰ अच् और हल अर्थात् स्वर और व्यंजन।

अंचल॰ ना॰ पु॰ आंचल, अंचला, वस्त्रका अन्त।

अंजन॰ ना॰ पु॰ काजल, सुरमा।

अंजलि॰ } **अंजली॰** } ना॰ स्त्री॰ दोनों हाथका संपुट।

अंजि॰ क्रि॰ अंजन लगाकर।

अंजित॰ गु॰ अंजन अर्थात् सुरमा लगाये।

अटक॰ ना॰ स्त्री॰ रोक, प्रतिबन्ध, सिन्धु नदी।

अटकना॰ अ॰ क्रि॰ रुकना, लगना।

अटकल॰ ना॰ स्त्री॰ अनुमान, प्रमाण, अन्दाज़।

अटकलना॰ स॰ क्रि॰ ताड़ना, बूझना, जांचना।

अटका॰ ना॰ पु॰ श्रीजगन्नाथजी में प्रसाद पकानेका पात्र वा प्रसाद।

अटकाना॰ स॰ क्रि॰ रोकना, ठहराना।

अटकाव॰ ना॰ पु॰ रोक, प्रतिबन्ध।

अटखेल॰ गु॰ खिलाड़, चंचल।

अटखेली॰ ना॰ स्त्री॰ खिलाड़पन, चंचलाहट

अटन॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, घूमना, ना॰ पु॰ ऊपर की कोठरी।

अटना॰ अ॰ क्रि॰ समाना, भरजाना, फिरना।

अटपट॰ गु॰ उलट, पुलट॰ गोल बात।

अटपटी॰ गु॰ अशोच, अनरीति।

अटल॰ गु॰ पूरा, दृढ़, अचल, जो न टरै।

अटवी॰ ना॰ पु॰ वन, जंगल।

अटा॰ } ना॰ स्त्री॰ ऊपर की कोठरी,
अटारी॰ } कोठा।

अटाला॰ ना॰ पु॰ ढेर, सामग्री।

अटूट॰ गु॰ जो टूट न सके।

अटेक॰ गु॰ जो टेकरहित हो, सहाराविना।

अटेरन॰ ना॰ पु॰ फेंटी, चरखी, घोड़े को चक्कर देने का स्थान।

अटेरना॰ स॰ क्रि॰ फेंटी बनाना, घोड़े को चक्कर देना।

अटेरि॰ ना॰ पु॰ नगर विशेष।

अटोक॰ गु॰ टोक बिन, अछेड़।

अट्टहास॰ ना॰ पु॰ ठट्ठा मार के हँसना।

अट्टालिका॰ ना॰ स्त्री॰ अटारी।

अठतालीस॰ गु॰ चालीस और आठ ४८।

अठतीस॰ गु॰ तीस और आठ ३८।

अठवारा॰ ना॰ पु॰ आठवां दिन, सप्ताह।

अठसठ॰ गु॰ साठि और आठ ६८।

अठहत्तर॰ गु॰ सत्तर और आठ ७८।

अठाईस॰ गु॰ बीस और आठ २८।

अठानबे॰ गु॰ नब्बे और आठ ९८।

अठारह॰ गु॰ दश और आठ १८।

अठासी॰ गु॰ अस्सी और आठ ८८।

अठेल॰ गु॰ जो ठेला न जावे।

अड॰ ना॰ स्त्री॰ झगड़ा, विरोध, हठ।

अडंग॰ ना॰ पु॰ मंडी अर्थात् दिसावर की वस्तु का उतार, गु॰ झगड़ालू, टर्रा।

अड़ना॰ अ॰ क्रि॰ रुकना, हठकरना।

अड़ूसा॰ ना॰ पु॰ बांसा अर्थात् औषधि वि॰।

अडोल॰ गु॰ जो न डुले, अटल।

अणि॰ ना॰ स्त्री॰ मोनी, अनी, नोक।

अणिमा॰ ना॰ स्त्री॰ अन्तर्द्धान होने की शक्ति, सिद्धि विशेष।

अणु॰ ना॰ अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु।

अण्ड॰ ना॰ पु॰ अंडा, आंडा।

अण्डकोष॰ ना॰ पु॰ अण्डकटाह।

अंण्डज॰ ना॰ पु॰ गु॰ जो अण्ड से उपजे।

अण्डा॰ ना॰ पु॰ अण्ड॰ रण्ड।

अण्डाकार॰ } गु॰ अण्डे के डौल।
अण्डाकृति॰ }

अतनु॰ ना॰ पु॰ कामदेव, शरीर रहित।

अतर्क॰ गु॰ जो तर्क रहित है, बेदलील।

अतर्क्य॰ गु॰ जो लंघा न जावे, बेदलील।

अतल॰ ना॰ पु॰ सात पातालों में से एक।

अतलस्पर्श॰ गु॰ अथाह, अगाध।

अतसी॰ ना॰ स्त्री॰ अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।

अति॰ अव्य॰ जिस शब्द के प्रथम इसका मेल होता है उसका अर्थ अधिक लिया जाता है यथा अतिसुन्दर अर्थात् अधिक सुन्दर।

अतिकण्टक॰ ना॰ पु॰ जवासा।

अतिकाल॰ ना॰ पु॰ अबेर।

अतिकाय॰ ना॰ पु॰ रावण का पुत्र।

अतिकुचै॰ अ॰ क्रि॰ समिटै, सकुचै, झूले, राम चन्द्रिकायां, यथा कपैवर वाणी डगै उरडीठि त्वचातिकुचै सकुचै मतिबेली।

अतिगुहा॰ ना॰ स्त्री॰ शालपर्णी औषधि।

अतिचंचुल॰ ना॰ पु॰ लाल अरंड।

अतिजिह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी।

अतिथ॰ } ना॰ पु॰ यात्री, पाहुन, संन्यासी।
अतिथि॰ }

अतिपराक्रम॰ ना॰ पु॰ बड़ा प्रताप।

अतिपान॰ ना॰ पु॰ अधिक मदिराका पीना।

अतिपार्श्व॰ गु॰ बहुत निकट।

अतिरंडिका॰ ना॰ स्त्री॰ ऊधाहोली, औषधि।
अतिरसा॰ ना॰ स्त्री॰ रास्ना, औषधि।
अतिरिक्त॰ गु॰ अतिशय, अधिक।
अतिवक्ता॰ गु॰ बकवादी, जो बहुत बके।
अतिबला॰ ना॰ स्त्री॰ बलका औषधि।
अतिविकट॰ गु॰ बहुत दुर्गम, जिस हाथी में औगुण हो।
अतिवृष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत वर्षा।
अतिव्ययक॰ गु॰ उड़ाऊ, बहुत खर्च कर्त्ता।
अतिव्याप्ति॰ गु॰ स्त्री॰ अलक्ष्य में लक्षण का गमन।
अतिशय॰ गु॰ बहुत, अधिक।
अतिशीत॰ गु॰ बहुतशीत।
अतिसार॰ ना॰ पु॰ पेटीखा, संग्रहणी।
अतिस्थूल॰ गु॰ बहुतभारी।
अतीत॰ गु॰ होचुका, व्यतीत, रहित।
अतील॰ ना॰ पु॰ औषधिविशेष।
अतीसार॰ ना॰ पु॰ अतिसार।
अतुल॰ } गु॰ जो तोला नहीं गया, जो तोलने के योग्य नहीं, बहुत।
अतुलित॰
अतोल॰
अत्यंशु॰ ना॰ पु॰ सूरज।
अत्यन्त॰ गु॰ अतिशय, बहुत।
अत्यन्तसुन्दर॰ गु॰ बहुतसुन्दर।
अत्यल्पतर॰ गु॰ बहुतहीथोड़ा।
अत्यावश्यक॰ गु॰ बहुत आवश्यक, बहुत जरूरी जिसके बिना निबाह न हो सके।
अत्युग्र॰ गु॰ बहुतकठिन ना॰ पु॰ हींग।
अत्युत्तम॰ गु॰ बहुत अच्छा।
अत्युत्तमा॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्य अप्सरा।
अथ॰ अव्य॰ अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त।
अथर्वण॰ ना॰ पु॰ नाम चतुर्थ वेद का।
अथवा॰ अव्य॰ वा, या, प्रकारान्तर, किंवा।
अथाई॰ ना॰ स्त्री॰ बैठक का स्थान, समूह, चौपाड़।
अथान॰ गु॰ अचार, खटाई, बेठिकाने।
अथाह॰ गु॰ गम्भीर, अगाध, गहरा, ना॰ पु॰ खोह।
अदत्त॰ गु॰ जो नहीं दियागया, देने के योग्य नहीं है।
अदत्ता॰ गु॰ स्त्री॰ अविवाहिता।
अदर्शन॰ ना॰ पु॰ दर्शनाभाव गु॰ लुप्त, अगोचर।
अदवायन॰ ना॰ स्त्री॰ पांइती की रस्सी।
अदाता॰ } गु॰ लीचड़, अनदेना।
अदानी॰
अदिति॰ ना॰ स्त्री॰ कश्यप की स्त्री, देवमाता।
अदिष्ट॰ ना॰ पु॰ विपत्ति, भाग्य, कर्म।
अदृश्य॰ गु॰ जो देखा न जावे, अगोचर।
अदेय॰ गु॰ जो देने के योग्य नहीं।
अदेव॰ गु॰ दैत्य जो देने के योग्य न होवे।
अद्धी॰ ना॰ स्त्री॰ दमड़ी का आधा, कपड़ा विशेष।
अद्भुत॰ गु॰ अनोखा, अजायब।
अद्य॰ अव्य॰ आज।
अद्यापि॰ अव्य॰ अबतक।
अद्रक॰ ना॰ स्त्री॰ अदरक, कन्दविशेष।
अद्रि॰ ना॰ पु॰ पर्वत।
अद्वितीय॰ } गु॰ जिस के समान दूसरा नहीं
अद्वैत॰ } गु॰ एकता–ब्रह्मज्ञानी, भेदरहित।
अध॰ अव्य॰ नीचे ना॰ स्त्री॰ ऊंगाऔषधि।
अधकपाली॰ ना॰ स्त्री॰ आधाशीशी अर्थात् आधे शिर की पीड़ा।
अधगो॰ ना॰ स्त्री॰ गुदा, शंका करने की इन्द्रिय।
अधन॰ } गु॰ कंगाल, गरीब।
अधनी॰
अधबर॰ अव्य॰ आधी दूर अर्थात् मध्य।
अधम॰ गु॰ नीच, कुत्सित, धर्मरहित।
अधमाधम॰ गु॰ अतिनीच।
अधर॰ ना॰ पु॰ नीचेका होंठ, ओष्ठ, अन्तर, गु॰ मध्य।

अधरबुद्धि॰ गु॰ नासमझ, नादान।
अधरामृत॰ ना॰ पु॰ होठों मेंकी मिठास।
अधर्म॰ ना॰ पु॰ पाप, अन्धेर, अन्याय अथवा धर्म रहित।
अधर्मी॰ गु॰ अन्यायी, पापी।
अधि॰ अव्य॰ जिस शब्द के प्रथम में इसका संयोग होता है उसका अर्थ साहिब वा मालिक वा हाकिम का होता है यथा नराधि अर्थात् नरों का मालिक।
अधिक॰ गु॰ बहुत।
अधिकता॰ ना॰ स्त्री॰ / **अधिकत्व॰** ना॰ पु॰ } ना॰ पु॰ बहुतात,
अधिकरण॰ ना॰ पु॰ सातवां कारक विशेष।
अधिककोण॰ ना॰ पु॰ कोना जो समकोण से अधिक हो।
अधिकाई॰ ना॰ स्त्री॰ बढ़ती, हरसाई, बहुतात।
अधिकाना॰ स॰ क्रि॰ अधिककरना, बढ़ाना।
अधिकार॰ ना॰ पु॰ पदवी, ओहदा, योग्यता, स्वामित्व, राज्य, बपौती।
अधिकारी॰ गु॰ पाने के योग्य स्वामी, पुजारी, पण्डा।
अधिकार्द्धि॰ गु॰ बहुत सम्पदा।
अधिकृत॰ ना॰ पु॰ नियुक्त, देखनेवाला, जांचने वाला, पदाधिकार।
अधिप॰ ना॰ पु॰ नायक, मालिक, राजनीति प्रतिपालक, वा प्रजापालक।
अधिपति॰ ना॰ पु॰ अधिप।
अधिवास॰ ना॰ पु॰ निवास, सकूनत।
अधिभू॰ ना॰ पु॰ नायक, स्वामी, मालिक।
अधिमास॰ ना॰ पु॰ लौंद, मलमास।
अधियाना॰ स॰ क्रि॰ आधाकरना।
अधिराज॰ ना॰ पु॰ महाराज, राजाधिराज।
अधिरूढ़॰ ना॰ पु॰ सवार, असवार।
अधीन॰ गु॰ वशीभूत, आज्ञाकारी।
अधीनता॰ ना॰ स्त्री॰ आधीनता, परवश, दूसरे के इख्तियार में रहना।

अधीर॰ गु॰ उतावल, धीरज रहित, व्याकुल, चंचल।
अधीरता॰ ना॰ स्त्री॰ उतावली, व्याकुलता।
अधीश॰ ना॰ पु॰ स्वामी, मालिक।
अधूरा॰ गु॰ अधबना, अनबना।
अधेड़॰ गु॰ आधी आयुर्दाय व्यतीत भई।
अधेला॰ ना॰ पु॰ पैसेका आधा।
अधेली॰ ना॰ स्त्री॰ रुपया वा मुहरकाआधा।
अधो॰ ना॰ पु॰ नरक नीचे।
अधोबन्धन॰ ना॰ पु॰ ज़ेरबन्द, नीचे का बन्धन विशेष।
अधोमुख॰ गु॰ शिर झुकाये वा शिरनीचे और पांव ऊपर कियेहुये।
अधोयोनि॰ गु॰ नीचयोनि।
अधोलोक॰ ना॰ पु॰ पाताल, नरक।
अध्ययन॰ ना॰ पु॰ पाठ पढ़ना, सीखना।
अध्यक्ष॰ ना॰ पु॰ स्वामी, प्रधान, मालिक।
अध्यात्म॰ ना॰ पु॰ आत्मज्ञान, ईश्वरविचार।
अध्यापक॰ ना॰ पु॰ पाठपढ़ानेहारा, शिक्षक।
अध्यापन॰ ना॰ पु॰ पाठ पढ़ाना।
अध्याय॰ ना॰ पु॰ पाठ, पर्व, प्रकरण, टुकड़ा, बाब, हिस्सा।
अध्याहार॰ ना॰ पु॰ वाक्य को पूरा करने के निमित्त बाहर से शब्द लेआना।
अध्याहृत॰ गु॰ अध्याहार, कियागया शब्द।
अध्वग॰ / **अध्वनी॰** } गु॰ बटोही, यात्री, मुसाफिर।
अध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ राह, मार्ग, बाट।
अन॰ अव्य॰ निषेधार्थी शब्द, नहीं।
अनखु॰ ना॰ पु॰ बुरा।
अनखाई॰ गु॰ जो बुरा मानगया।
अनखाना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधितहोना, बुरा मानना।
अनगढ़॰ गु॰ अनबना, अनसीखा, जो वस्तु आपही आप बनी हो।
अनगढ़ा॰ ना॰ पु॰ अनगढ़।

अनगढ़ी० ना० स्त्री० अनगढ़।

अनगणित० गु० जो गिना नहीं वा गिना न जासके वा हिसाब में न आवे।

अनघ० गु० निष्पाप, निर्दोष, बे गुनाह।

अनंग० ना० पु० कामदेव, राजाजनक, गु० देहरहित जो तनमें न होवे।

अनजाना० गु० विना पहिचाना।

अनट० ना० स्त्री० गांठि।

अनत० अव्य० अन्यत्र, और स्थान में।

अनधन० ना० पु० सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात् अन्ननामा लक्ष्मी।

अनन्त० गु० जिसका अन्त नहीं वा भाद्र शुक्र चतुर्दशी को जो सूत्र में १४ ग्रन्थिदेकर पूजते हैं और बाहुपर बांधते हैं बहुत० ना० पु० ब्रह्म; आकाश, विष्णुजी, शेषजी, लक्ष्मणजी।

अनन्तकाल० गु० बहुत दिन।

अनन्तर० ना० पु० अत्यन्त, समीप, पीछे, दूसरा, अव्यवहित।

अनन्ता० ना० स्त्री० धरती, जवासा।

अनन्य० गु० एकभाव, एकभरोसे।

अनपढ़ा० गु० मूर्ख, कुपढ़ा, अज्ञानी।

अनपायन० गु० अचल, दृढ़।

अनबुझ० गु० जो समझा न जावे।

अनमन०
अनमना० } गु० घाबरा, उदास, बेदिल।

अनमिल० गु० मेलरहित, नादुरुस्त।

अनमिष० गु० समय, विनामिस बे उजर।

अनमेल० गु० अनमिल।

अंनमैल० गु० मैल रहित, उज्ज्वल, साफ।

अनमोल० गु० जिसका मोल नहीं अर्थात् जो बहुत अपूर्व है।

अनयास० गु० विना परिश्रम, बे मिहनत।

अनरस० ना० पु० रस रहित, झगड़ा, फीका, मित्रों में अनबनाव।

अनरीति० ना० स्त्री० कुचालि, असन्मान, अनादर।

अनर्गल० गु० निर्बाध, स्वेच्छक।

अनर्घ० गु० अपूज्य, अमूल।

अनर्थ० गु० अर्थहीन, अनुचित, बेमतलब।

अनर्थक० गु० निष्प्रयोजन, निष्कारण, झूठा।

अनल० ना० पु० पावक, अग्नि, आग।

अनलपक्ष० ना० पु० पक्षी विशेष जो सर्वदा काल आकाश में उड़ा करता है और जब ईश्वरेच्छा से उस के गर्भ होता है तो अंडे को आकाश से छोड़ देताहै और वह अण्डा पृथ्वी पर पहुँचने के पहिलेही मार्ग में पक फूटकर बच्चा बनजाता है और उड़ने लगता है और अपने माता पिताका स्मरण कर ऊपर लौट जाता है, (यथा विचार मालायाम्) अनलपक्ष को चेटुवा गिरेउ धरणि अरराय, बहु अलीन यह लीन है मिल्यो तासु को धाय।

अनवकाश० ना० पु० अवकाश रहित।

अनवट० ना० पु० भूषण विशेष जो स्त्रियां पांव के अंगूठे में पहनती हैं।

अनवस्थित० गु० बेठिकाने, रंग रंग की।

अनशन० ना० पु० उपवास, लंघन।

अनश्वर० गु० जिसका नाश न हो, जो न मिटे।

अनसीखा० गु० अनपढ़ा, अज्ञानी।

अनसुनीकरना० अ० क्रि० आनाकानीकरना।

अनसूया० ना० स्त्री० अत्रिमुनि की पत्नी।

अनहित० गु० स्नेह रहित, शत्रु, वैर, बुराई।

अनहोना० गु० असम्भव, जो होनहारनहीं।

अनाकुर० ना० पु० वृक्ष, पेड़।

अनाचार० ना० पु० कुचाल, आचाररहित।

अनाज० ना० पु० अन्न, गल्ला।

अनाजक० ना० पु० कालाअगरु।

अनाड़ी० गु० भदेसल, निर्गुणी, नवसिखा।

अनाथ० गु० दुःखी जिसका कोई रक्षक न हो, यथा विधवा, पिताहीन पुत्र।

अनादर० ना० पु० अपमान, तिरस्कार।
अनादि० गु० जिसकी आदि नहो, यथा ईश्वर।
अनामय० गु० रोगरहित, निर्दोष।
अनामिका० ना० स्त्री० तीसरी अंगुली।
अनायास० ना० पु० यत्नबिना, निरुपाय।
अनावृष्टि० ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।
अनाश्रम० गु० बिनमकान, बिना ठिकाने और चारों आश्रम रहित।
अनाहत० गु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अखण्ड होता है, ना० पु० चक्र विशेष।
अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।
अनिर्बचनीय० } गु० जो कहने के योग्य
अनिर्बाच्य० } नहीं है।
अनिल० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
अनिश्चित० गु० जो निश्चय नहीं कियागया।
अनिश्चितता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थिति।
अनिष्ट० गु० अप्रिय, अरुचि।
अनी० ना० स्त्री० सेन, बरछी और बाण आदि की नोक।
अनीक० ना० पु० मत्था, ना० स्त्री० सेन, समूह।
अनीकिनी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
अनीति० ना० स्त्री० कुचाल, अन्याय।
अनीश० ना० पु० ईश रहित, जीव।
अनीह० गु० चेष्टारहित, तृष्णारहित।
अनु० अव्य, यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ, कभी पुना, कभी सादृश्य, कभी निषेध, कभी संग, कभी पीछे, कभी समीप का होता है।
अनुकम्पा० ना० स्त्री० कृपा, दया, रहम, मेहरबानी।
अनुकरण० ना० पु० किसी के पीछे काम करना, किसीकी प्रति वा नकल करना।
अनुक्त० गु० जो उक्त नहीं, ना० पु० दृष्टान्त।
अनुक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी, रीति।
अनुक्रोश० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम।
अनुकारी० ना० पु० नौकर, सेवक।
अनुकूल० गु० प्रसन्न, सहायक, स्वाधीन।
अनुख० ना० पु० आलस, बुराई।
अनुखाल० ना० पु० किसी नदी का एक भाग किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न करै उसका नाम अर्थात् छोटाखाल।
अनुग० गु० सेवक वा सेवकिन, पीछे चलैया।
अनुगत० ना० पु० आश्रित।
अनुग्रह० ना० पु० कृपा, दया, मेहरबानी।
अनुगामी० गु० सेवक, पीछे चलनेहारा।
अनुचर० ना० पु० साथी, सहचर, दास, सेवक।
अनुचरी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
अनुचित० गु० अयोग्य, जो वाजिब न हो।
अनुज० ना० पु० छोटाभाई।
अनुजा० ना० स्त्री० छोटीबहिन।
अनुत्तर० गु० उत्तरहीन, महज्जन, श्रेष्ठ।
अनुताप० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच।
अनुतारा० ना० पु० तारे के पीछेका तारा।
अनुदिन० ना० पु० प्रतिदिन, नितप्रति।
अनुनासिक० ना० पु० जो नासिकासे निकले।
अनुपल० ना० पु० पलका साठिवां अंश।
अनुपस्थित० गु० जो उपस्थित न होवे।
अनुपान० ना० पु० औषधि आदिके साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं।
अनुप्रास० ना० पु० समान जाति के वर्णों से रचितपद, समूह, रदीफ़।
अनुभव० ना० पु० मानसज्ञान, अटकल, विचार, ध्यान।
अनुभूति० ना० व्याकरण के आचार्य का नाम है जिन्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के स्थिर निश्चय को भी कहते हैं, जिसका पर्याय अनुभव है।
अनुभाव० ना० पु० महिमा, बड़ाई।
अनुभूत० गु० बीता, जो मनसे जानागया है।
अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह।

अनुमरण० ना० पु० एक चिता में विधिपूर्वक शरीर का दहन, सती होना।
अनुमान० ना० पु० अटकल, युक्ति से जो निश्चय होवे।
अनुमति० गु० बिचारा गया।
अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा वा बड़ाई करना।
अनुयायी० गु० पीछे जानेवाला, सेवक।
अनुरत० गु० मग्न, रत, मस्त।
अनुराग० ना० पु० स्नेह, प्रीति, थोड़ी ललाई।
अनुरागी० गु० प्रियतम, दोस्त।
अनुराधा० ना० स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र।
अनुरूप० गु० सदृश, समान, तुल्य।
अनुरूपक० गु० समान करनेवाला, प्रतिमा।
अनुरोध० गु० अपेक्षा, उपकार, रोक, मुवाफ़िक़, अनुरूप होना।
अनुरोधी० गु० विरोधी।
अनुलाप० ना० पु० दुखित वार्त्ता।
अनुवह० ना० पु० मुख्यपवन।
अनुवाद० ना० पु० पुनः कथन, बातका पक्ष करना, हठ करना।
अनुशयना० ना० स्त्री० नायिका विशेष।
अनुशाखा० ना० स्त्री० पीछेकी डाली, प्रमाण।
अनुशासन० ना० पु० आज्ञा, हुक्म।
अनुसंधान० ना० पु० कामना, पीछे लगाना।
अनुसरना० अ० क्रि० पीछे चलना वा आना।
अनुसार० ना० पु० सदृश, तुल्य, अनुरूपहोना अथवा अनुरूप, मुवाफ़िक़।
अनुस्वार० ना० पु० बिन्दु जो अक्षर के मस्तक पर देते हैं।
अनुहर० ना० पु० तुल्य, अनुहार।
अनुहरण० ना० पु० चुराना, उठालेना।
अनुहार० / **अनुहारि०** } गु० तुल्य, सदृश, समान, योग्य।
अनुपम० / **अनुपमा०** / **अनूप०** } गु० उपमा रहित अर्थात् सबसे भला, एकता, बेनज़ीर।
अनूठा० गु० अपूर्व, निराला, नया, अजायब।
अन्यून० गु० सब, बिल्कुल।
अनृत० ना० पु० झूठ, मिथ्या।
अनेक० गु० बहुत, एक से अधिक।
अनेकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों।
अनैसी० ना० स्त्री० अनुचित, कुदृष्टि।
अनैसे० गु० कुदृष्टि, क्रोधदृष्टि, रामायणे यथा (अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे)।
अनौषधि० गु० जिसकी औषधि नहीं, लादवा।
अन्त० ना० पु० समाप्ति, शेषभाग, सीमा, दूसरी जगह, अव्य० निदान।
अन्तक० ना० पु० काल, यमराज।
अन्तकाल० ना० पु० मरने का समय।
अन्तःकरण० ना० पु० मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार।
अन्तःकोण० ना० पु० भीतर का कोना।
अन्तःपाती० गु० अन्तर्गत, भीतर।
अन्तःपुर० ना० पु० घर जिसमें रानी आदि स्त्रियां रहती हैं।
अन्तःसम्पात० ना० पु० भीतर छूना।
अन्तड़ी० ना० स्त्री० आंत।
अन्तर० अव्य० बीच, फ़र्क़, ना० पु० भीतर, समय, भेद, हृदय।
अन्तरंग० ना० पु० आत्मीय, अपना।
अन्तर्हित० गु० छुपजाना, ग़ायब होना।
अन्तरा० ना० पु० गीत के पहले पदको छोड़के जो पद हैं, अन्य, मध्य, बाहिर।
अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ।
अन्तरित० गु० छुपना, ग़ायब होना।
अन्तरिया० ना० पु० तिजारी, ज्वर विशेष।
अन्तरीप० ना० स्त्री० रास, धरती की नोक जो समुद्र में चलीगईहो।
अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गंगा यमुना के मध्य में है।
अन्तस्थ० गु० बीच में, दूरवाला, अन्तका।

अंतावली० ना० स्त्री० आंत।
अंतिम० गु० अन्तका।
अंतेवासी० ना० पु० पीछे रहनेवाला, दूररहने वाला शिष्य।
अन्त्य० गु० अन्तका, पिछला।
अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट, किरात, मेद, भिल्ल, पीछे उपजा, नीचजाति।
अन्त्याक्षर० ना० पु० अन्तका अक्षर।
अन्ध० गु० अन्धा।
अन्धक० ना० पु० दैत्यविशेष जो सदाशिव से लड़ा था और मारागया।
अंधकबन्ध० ना० पु० दैत्यविशेष।
अंधकरिपु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधकार० ना० पु० अंधेरा।
अंधकारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधला० गु० अन्धा।
अंधसुत० ना० पु० दुर्योधनादि सौ १००।
अंधा० गु० नेत्रहीन।
अन्न० ना० पु० पक्व ओदनादि, अनाज।
अन्नकूट० } **अन्नपर्वत०** } ना० पु० अन्नका ढेर लगाना। हिन्दुओंमें त्योहार दीवालीके दूसरे दिन होता है।
अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पांचवें वा छठेमास खीर चटाना, माड़ चटाना।
अन्ना० } **अन्नी०** } ना० स्त्री० दाया, दाई, धाय।
अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।
अन्यच्च० गु० अन्यभी, और भी।
अन्यथा० अव्य० औरप्रकार, प्रकारांतर, अशुद्ध, झूठ।
अन्यथाचरण० ना० पु० उलटाव्यवहार।
अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० औरप्रकार से ठहराना।
अन्यदेश० ना० पु० औरदेश, गैरमुल्क।
अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।
अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, आननर।

अन्यरक्त० ना० पु० लालऊंगा। यथा, (अन्यरक्तःवृत्तफलावसिरःकपिपिप्पली) इति निघंटे।
अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव।
अन्याय्य० } **अन्यायी०** } गु० अयोग्य, अधर्मी, ज़ालिम।
अन्यत्र० अव्य० और कहीं।
अन्योन्य० गु० परस्पर।
अन्वय० ना० पु० एकका एकके साथ सम्बन्ध, कुल।
अन्वहं० गु० निरन्तर, सत्यकर।
अन्वित० गु० संयुक्त, मिलित।
अन्वेषण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज।
अन्वेषिणी० ना० स्त्री० खोजनेवाली, ढूंढ़ने वाली।
अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ, कु० निषिद्धता, विरुद्धता, भिन्नता, आसन्नता इत्यादि होताहै सर्व० आप।
अपकर्म ना० पु० कुकर्म, बुराकाम।
अपकार० ना० पु० अनिष्ट, बिगाड़, द्वेष, अधर्म्म।
अपकारी० गु० द्वेषी, कुकर्म्मी।
अपकृष्ट० गु० अधम, न्यून, छोटा।
अपक्व० गु० जो पका न होवे।
अपघात० ना० पु० निज करसों आप को मारना।
अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि।
अपजस० ना० पु० कलंक, अपमान, अपयश।
अपटु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं, निर्बुद्धि।
अपडर० ना० पु० झूठडर, निजओर से डर।
अपत० गु० पापी, बेइज्जत।
अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान।
अपत्य० ना० पु० सन्तान, औलाद।
अपथ० ना० पु० कुमार्ग, मार्गरहित।

अपथ्य० गु० जिसके खानेसे रोग अधिकहोवे। अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके।
अपना० सर्व० निजका, स्वकीय।
अपनाइत० ना० स्त्री० घराना, कुटुम्ब, सम्बंध।
अपबस० गु० स्वाधीन, अपनेवश में।
अपभय० ना० पु० छूटडर, अपडर।
अपभाषा० ना० स्त्री० गंवारीबोली, वा यवनादिकों की बोली, फ़ारसीआदि।
अपभ्रंश० ना० पु० अपशब्द, अशुद्धशब्द।
अपमान० ना० पु० अनादर, इज्जत घटाना।
अपमानी० गु० जो अपमान के योग्य है।
अपमृत्यु० ना० स्त्री० अनमौत, रोगहीन, मरना, अकालमृत्यु।
अपर० ना० पु० तगर औषधि, गु० दूसरा, अन्य, विरुद्ध।
अपरम्पार० गु० जिसका पारनहीं है, अनन्त।
अपरा० ना० स्त्री० जूही।
अपराजय० ना० पु० पराभव, हीनता, हारि।
अपराजित० गु० जो जीता न जावे ना० पु० श्रीसदाशिवजी, श्रीविष्णुनारायण।
अपराजिता० ना० स्त्री० देवी विशेष, पुष्प विशेष, जिसको विष्णुकान्ता वा कौआगोढ़ी कहते हैं।
अपराध० ना० पु० दोष, पाप, घात, अधर्म।
अपराधी० गु० पापी, दोषी, अधर्मी।
अपराह्ण० ना० पु० तीसरापहर।
अपरिचित० गु० जातिवाचकशब्द, जिससे परिचय न हो, जिससे पहिचान न हो।
अपरिमित० गु० जो नापा नहींगया, बहुत।
अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती।
अपलक्षण० ना० पु० अपशकुन, बुरे चिह्न।
अपलोक० ना० पु० अपयश, बदनामी।
अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजात।
अपवाद० ना० पु० निन्दा, अपयश, उलङ्घना, बुरेबातें आनको कहना, अनियमशब्द।
अपवादी० गु० अर्थी, जो अपवाद करे।
अपवित्र० गु० अशुद्ध, छूतहरा, नापाक।
अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छूत, नापाकी।
अपशकुन० ना० पु० बुरासगुन।
अपशब्द० ना० पु० शब्द जो अशुद्ध है।
अपश्य० गु० जो देखा न जावे।
अपसव्य० गु० दाहिना भाग अंगका वा दाहिना हाथ वा कांधा वा जलदान में अँगोछा दाहिने कांधेपर रखना, विरुद्ध।
अपस्मार० ना० पु० रोगविशेष, जिसको मिरगी कहते हैं।
अप्सरा० ना० स्त्री० स्वर्वेश्या, परी।
अपहरण० ना० पु० हरलेना, लूटलेना, लूटना।
अपहर्त्ता०
अपहरता० } गु० चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहारी०
अपह्नव० ना० पु० छिपाव, नकार।
अपक्ष० गु० पक्षरहित।
अपाक० गु० जो पका नहीं है।
अपांग० ना० पु० नेत्रका अंत भाग, कटाक्ष।
अपादान० ना० पु० पांचवांकारक।
अपान० ना० पु० गुदा, नीचेकी वायु, पाद, प्राणविशेष, सर्व, अपना।
अपाप० गु० पापरहित।
अपामार्ग० ना० पु० ऊंगा।
अपार० गु० जिसका पारावार नहीं है, अनन्त।
अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक।
अपूत० गु० निर्वंश, कुपुत्र, कपूत।
अपूर्ण० गु० जो अभी पूरा नहीं भयाहै।
अपूर्णभूत० गु० अभी व्यतीत नहीं भया।
अपूरब०
अपूर्व० } गु० जो पहिले कभी नहीं देखा, अनूठा।
अपि० अव्य० निश्चय, ठीक, भी।
अपिधान० ना० पु० पोशाक, वस्त्र।
अपीड़० ना० पु० शिखा, भूषण।

अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहीं है ।
अपेल० गु० अचल, जो टल न सके ।
अपेक्षक० गु० अपेक्षा करनेहारा, निसबतकरनेहारा, अनुरोधक ।
अपेक्षा० ना० स्त्री० अनुरोध, आशा, भरोसा, रिश्तह, निसबत ।
अपेक्षित० गु० आश्रित, अपेक्षा कियागया ।
अपौरुष० गु० जिसके साध्यता नहीं है, नाताकत ।
अप्रकाश० ना० पु० अंधेरा, जो प्रकट नहीं है ।
अप्रतिहत० गु० जिसकी रोक नहीं है ।
अप्रतीत० गु० प्रतीति रहित अर्थात् जो विश्वास के योग्य नहीं है ।
अप्रत्यय० ना० पु० अविश्वास ।
अप्रत्यक्ष० गु० जो देखा न जावे ।
अप्रधान० गु० मुख्यनहीं है, जो सरदार नहीं है ।
अप्रबन्ध० ना० पु० बे बन्दोबस्त, प्रबन्धहीन ।
अप्रमाण० गु० बहुत, प्रमाणरहित, असत्य ।
अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, गंदला, नाखुश ।
अप्रसिद्ध० गु० जिसको कोई नहीं जानता है, गुप्त ।
अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहीं है ।
अप्राप्तयौवन० ना० पु० लड़का, नाबालिग ।
अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है ।
अफरना० अ० क्रि० अधिकभोजन से पेट फूलना, अधिक धनवान् होना ।
अफराना० स० क्रि० अधिक भोजन कराना ।
अफल० गु० निष्फल, व्यर्थ, बेफायदह ।
अब० अव्य० इससमय, इदानीं, ना० पु० पानी ।
अबतक० / अबतलक० } अव्य० अभीतक, इससमयतक ।
अब्भरण० ना० पु० पानीभरना ।
अबल० गु० निर्बल, पौरुष रहित ।
अबला० ना० स्त्री० नारी, स्त्री० गु० बलहीना ।
अबस० गु० निर्बल, वशरहित ।
अबार० ना० स्त्री० विलम्ब, देर, कुसमय ।
अबुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अहमक, दैत्य ।
अबूझ० गु० नासमझ, नादान ।
अबूझा० गु० बिना समझा, अनजाना ।
अबूझित० गु० जो बूझा नहीं गया ।
अबेर० ना० स्त्री० अबार ।
अबै० अव्य० अभी० गु० अनिश्चित ।
अब्ज० ना० पु० कमल, अर्ब, चन्द्रमा, देववैद्य, शंख, वृक्षविशेष ।
अब्द० ना० पु० वर्ष, साल, संवत् ।
अब्धि० ना० स्त्री० मंडूकी, सीपी, समुद्र ।
अभक्त० गु० जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो हिस्सह नहीं हुआ है ।
अभंग० गु० जिसका नाश न हो ।
अभय० गु० निर्भय, निडर ।
अभया० ना० स्त्री० हर्रे ।
अभरण० ना० पु० गहना, आभूषण, जेवर ।
अभरम० गु० पतिहीन, निडर ।
अभाग० / अभाग्य० } ना० पु० दुर्गति, विपत्ति ।
अभागा० ना० पु० / अभागी० ना० स्त्री० } गु० भाग्यहीन, निपक्ष ।
अभाय० ना० पु० अनहोना ।
अभार० गु० हलका ।
अभाव० ना० पु० अविद्यमान, नाश, मृत्यु, अनहोना ।
अभास० ना० पु० छाया, प्रतिबिम्ब ।
अभि० अव्य० सब दिशिते, यह जिस शब्द के प्रथममें संयुक्त होताहै उसका अर्थ यथा, आगे, प्रत्येक इत्यादि होताहै ।
अभिगम्य० अ० क्रि० आपुजाकर ।
अभिचार० ना० पु० मन्त्र जिस्से वधकिया जाता है ।
अभिजित्० ना० पु० मुहूर्त्त विशेष, इक्कीसवां नक्षत्र ।

अभिधान० ना० पु० नाम, कोष।
अभिनव० गु० नया, नूतन, नवीन।
अभिनन्दन० ना० पु० सराहे, सम्मति, सलाह।
अभिप्राय० ना० पु० मतलब, सारार्थ, अर्थ, आशय, कारण।
अभिभूत० गु० पराजित, बलहीन।
अभिमत० गु० वांछित, इच्छानुसार, सम्मत।
अभिमान० ना० पु० अहंकार, घमण्ड, गरूर।
अभिमानी० } **अभिमान्य०** } गु० अहंकारी, मगरूर।
अभिमुख० गु० सन्मुख, सामने, वर्त्तमान।
अभिरत० गु० संयुक्त, मिलित।
अभिराम० गु० सुन्दर, सुखद, रमण।
अभिरामी० गु० रमनेवाला।
अभिलाष० } **अभिलाषा०** } ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ, तमन्ना।
अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना।
अभिवाद० ना० पु० दुर्वचन, कुवचन और बुरा-बतकहाव।
अभिवादन० ना० पु० चरण ग्रहणपूर्वक नमस्कार।
अभिषिक्त० गु० जिसका अभिषेक भयाहो।
अभिषेक० ना० पु० जल छिरकना, शान्ति स्नान, पदकी प्राप्ति के लिये पहिली क्रिया विशेष राज्यतिलक।
अभिसार० ना० पु० नायक, रति।
अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, मैनापक्षी।
अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका।
अभिज्ञ० गु० प्रवीण, कदरदान, गुणग्राहक।
अभी० अव्य० इसीसमय।
अभीत० गु० निडर, अभय।
अभीप्सित० गु० प्रियवांछित, मनभावित।
अभीशु० ना० पु० जीव, प्राण।
अभीष्ट० गु० प्रियवांछित, मनभावित।
अभूत० गु० जो व्यतीत नहीं भया, अभाव।
अभूतरिपु० गु० शत्रुरहित।
अभेद० } **अभेव०** } गु० ऐक्य, परस्पर सम्बन्ध, प्रकट।
अभ्यन्तर० ना० पु० भीतरी, भीतरका।
अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्त्तव्य।
अभ्र० ना० पु० आकाश, मेघ।
अभ्रक० ना० पु० अबरक, धातुविशेष।
अमंगल० गु० मंगल रहित, अशोभा।
अमत्त० गु० सीधा, सावधान, होशमें।
अमर० गु० जो न मरे, ना० पु० देवता, निरंकार अविनाशी।
अमरपुर० ना० पु० ब्रह्मादेशका नगर विशेष, इन्द्र, विष्णु, शिव, लोक स्वर्ग।
अमरस० ना० स्त्री० आमका रस।
अमरावती० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी।
अमरीहत० ना० पु० कचनार वृक्ष।
अमर्याद० } **अमर्यादा०** } ना० स्त्री० अनीत, अवज्ञा, असन्मान।
अमल० गु० निर्मल, उजला, मादकवस्तु, राज्य।
अमलतास० ना० पु० बन्दर, लाठी, औषधि विशेष।
अमात्य० ना० पु० मन्त्री, दीवान।
अमान० गु० सीधेस्वभाव, मानरहित।
अमाना० अ० क्रि० समाना, भरना, खपना।
अमान्य० गु० जो मानने के योग्य नहीं है।
अमानुष० गु० मनुष्यतारहित, बिना मनुष्य।
अमावस० } **अमावस्या०** } **अमावास्या०** } ना० स्त्री० कृष्णपक्षकी समाप्ति की तिथि बदी १५।
अमर्ष० } **अमार्ष०** } गु० ईर्षा रहित, अक्रोध।
अमिट० गु० जो मिट न जावे वा मेटा न जासके।
अमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।
अमिय० ना० पु० अमृत, आबहयात।
अमियमूरि० ना० स्त्री० सजीवन बूटी।
अमिल० गु० खट्टा, जो न मिले।

अमी० ना० पु० अमृत ।
अमुक० सर्व० कोई, वह, अमुका, फलाना ।
अमूल० गु० जिसकी जड़ नहीं है ।
अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, विष, पानी, देवता, गु० जो न मरे ।
अमृतफल० ना० पु० आंवला ।
अमृतवल्लरी० ना० स्त्री० गुरच, गिलोय ।
अमृता० ना० स्त्री० हर्र, गुरच, फटकरी, नाम चन्द्रमा की एक कलाका ।
अमृताढ्‌य० ना० पु० खरबूजा, यथा (अमृताढ्यौ दशांगुलौ) इतिनिघंटः ।
अमृतेश० ना० पु० देवता, इन्द्र ।
अमेध्य० ना० पु० विष्ठा, मल ।
अमेय० गु० अप्रमाण, यथा श्रीभगवान् जिसका प्रमाण कोई न जानसके ।
अमोघ० गु० जो व्यर्थ नहीं, सफल, अचूक, फलदाता, ना० स्त्री० नदीविशेष ।
अमोघा० ना० स्त्री० हर्र ।
अमोल० गु० मोलरहित, अपूर्ववस्तु, बेकीमत ।
अम्बत० गु० खट्टा ।
अम्बक० ना० पु० नेत्र, आंख, यथा त्र्यम्बक, अर्थात् शिव ।
अम्बर० ना० पु० आदर, आकाश, वस्त्र ।
अम्बरमणि० ना० पु० सूर्य्य ।
अम्बरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
अम्बरीष० ना० पु० राजाविशेष ।
अम्बष्टकी० ना० स्त्री० माई औषधि ।
अम्बा० ना० स्त्री० माता, महतारी ।
अम्बारी० ना० स्त्री० हाथी परका आसन विशेष ।
अम्बिका० ना० स्त्री० माई औषधि, माता, देवी, पार्वती ।
अम्बिष्टा० ना० स्त्री० रायलता ।
अम्बु० ना० पु० जल, पानी ।
अम्बुज० ना० पु० कमल ।
अम्बुद० ना० पु० मेघ ।
अम्बुधि० ना० पु० समुद्र ।
अम्बुपति० ना० पु० वरुणदेव ।
अम्बुवल्लरी० ना० स्त्री० जल पिप्पल ।
अम्बुवह० ना० पु० मेघ ।
अम्बुवासिनी० ना० स्त्री० मछली, कुम्भी ।
अम्बुभृत्० ना० पु० मेघ ।
अम्भ्य० ना० पु० कमल ।
अम्भफल० ना० पु० आम्रसिव, यथा (अम्भफलः चापः) इति निघंटः ।
अम्भोज० } **अम्भोरुह०** } ना० पु० कमल ।
अम्मा० ना० स्त्री० माता, मा, चची, यह शब्द अरबी का है ।
अम्र० ना० पु० अम्ब, आम ।
अम्ल० गु० खट्टा, खटाई ।
अम्लान० गु० निर्मल ।
अम्लिका० ना० स्त्री० इमिलीवृक्ष ।
अम्लवेतस० ना० पु० अमलबेत ।
अय० ना० पु० लोहा, रामायणे यथा (अयमय खण्डन ऊखमय अजहुँ बूझ अबूझ) ।
अयं० अव्य० सर्व, यह ।
अयन० ना० पु० वर्षका आधा अर्थात् उत्तरायण वा दक्षिणायन, मार्ग, घर ।
अयथार्थ० ना० पु० अन्याय, अन्धेर ।
अयमात्मा० ना० पु० यह जीव ।
अयान० } **अयाना०** } गु० भोला, नादान, मूर्ख ।
अयुक्त० गु० अनुचित, विनामेल ।
अयुत० ना० पु० दश सहस्र १०००० ।
अयोग्य० गु० अनुचित, असमर्थ, बेजा ।
अयोध्या० ना० स्त्री० अवध की प्राचीनराजधानी जहां श्रीरामावतार भया था ।
अयोनि० ना० पु० ब्रह्मा ।
अरगट० ना० पु० छुपाव, घूंघट ।
अरगा० गु० अलग, भिन्न ।

अरगाना० स० क्रि० अलगाना, अ० क्रि० अलग होना, ना० पु० चुपलगाना।

अरगानी० ना० स्त्री० चुप, चुपकी।

अरगे० अ० क्रि० हठ किया।

अरझना० अ० क्रि० उलझना, फसना।

अरणता० ना० पु० देशविशेष।

अरणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष।

अरण्ड० ना० पु० रेंडी का वृक्ष, अण्डवृक्ष।

अरण्य० ना० पु० जंगल, वन।

अरना० ना० पु० जंगली भैंसा।

अरनी० ना० स्त्री० जंगली भैंस।

अरबराना० अ० क्रि० घबराना, हरबराना।

अरराना० अ० क्रि० विनारोक गिरनेकाशब्द।

अरराय० गु० विनारोक, विनासहारा।

अरलु० ना० पु० स्योनावृक्ष।

अरविन्द० ना० पु० कमल।

अराजक० गु० राजा विनादेश।

अरि० ना० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

अरिल० ना० पु० छन्दविशेष।

अरिष्ट० ना० पु० अशुभ, मृत्युदायक, रोग, नींबवृक्ष।

अरिष्टक० ना० पु० रीठा।

अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।

अरी० अव्य० स्त्रीका सम्बोधन।

अरु० अव्य० और, पुनः, ना० पु० कुम्हड़ा।

अरुचि० ना० स्त्री० मतलाई, अनिच्छा।

अरुण० ना० पु० लालरंग, सूर्य, लालअरण्ड, सूर्य का सारथी।

अरुणचूड़०
अरुणशिखा० } ना० पु० मुर्गा।

अरुणा० ना० स्त्री० जपापुष्प, गुड़हलकाफूल।

अरुणाई० ना० स्त्री० लाली।

अरुणारे० गु० लाल।

अरुणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले दो मुहूर्त, सूर्योदय।

अरुष्क० ना० पु० भिलावां।

अरे० अव्य० नीचनरका सम्बोधन, गु० अड़ा, हठा।

अरेव० ना० पु० अपराध।

अरोग० गु० भलाचंगा, रोगरहित।

अरोग्यशिवी० ना० स्त्री० किरवाली।

अर्क० ना० पु० सूर्य, मदारवृक्ष, स्फटिक।

अर्कपुष्पी० ना० स्त्री० ऊंधाहोली।

अर्कविशदा० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।

अर्गजा० ना० पु० सुगन्धि, द्रव्य विशेष। अर्गजी० गु० जो अर्गजे से रंगा गया।

अर्घ० ना० पु० पूजा करने की एकरीति, आठ वस्तु को मिलायके ईश्वर हेतु अर्पण, सूर्य की पूजा करके जल देना, मोल।

अर्घा० ना० पु० पात्रविशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं वा जल देते हैं।

अर्चक० गु० पुजारी।

अर्चन०
अर्चना० } स० क्रि० आराधना, पूजाकरना।

अर्चा० ना० स्त्री० पूजा।

अर्चि० ना० पु० आंच, टेम ज्योति चमक।

अर्चित० गु० पूजित।

अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति।

अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना।

अर्जुन० ना० पु० वृक्षविशेष, सफ़ेद, सुवर्ण, सहस्रबाहु, पांडुका तीसरा पुत्र, ककुभवृक्ष, धवल।

अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र।

अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य, धन, दौलत, माने, मतलब।

अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र।

अर्थसाधन० ना० पु० रीठा, अर्थ का ठीक करना।

अर्थात्० अव्य० जानो, अर्थ, यह, यानी।

अर्थानुरोध० ना० पु० नामके अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप।

अर्थान्तर० ना० पु० दूसराअर्थ।

अर्थी० गु० धनी, वादी, अर्थवक्ता, प्रयोजनयुक्त, ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री० लाश, ताबूत, टिकटी।

अर्दावा० ना० पु० मोटापिसान।

अर्द्ध० गु० आधा।

अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रमा।

अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसोत, आधीचांदनी।

अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल।

अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीराति।

अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीतांग।

अर्द्धांगी० गु० शीतांगी ना० स्त्री० पत्नी।

अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेटदेना।

अर्पना० स० क्रि० अर्पणकरना।

अर्ब० ना० पु० सौ किरोड़ १०००००००००।

अर्बुद० ना० पु० दशकिरोड़, पर्वत विशेष।

अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ।

अर्यमा० ना० पु० सूर्य।

अर्वाक्० गु० नीच, अव्य० पहिली।

अर्शपर्श० ना० पु० शुद्ध करनेके लिये जल छिड़कना, छूना।

अर्हन्त० ना० पु० जैनी।

अल० अव्य० अत्यर्थ, समर्थ, पूरण, ना० पु० आभरण, आलस, बहुतायत।

अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, घूंघर।

अलक्त० ना० पु० कुसुम्भ, महावरयुत।

अलकावली० ना० स्त्री० एक ओर के बालों की लटैं।

अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जो न पहिचाना जावे, यथा ईश्वर।

अलग० गु० भिन्न, जुदा, लगाव नहीं।

अलगनी० ना० स्त्री० रस्सी जिसपर कपड़े धरते हैं।

अलगर्द० ना० पु० पनिहासांप, यथा–अलगर्दो जलव्यालः इत्यमरः।

अलगा० गु० भिन्न, निर्बन्ध।

अलगाना० स० क्रि० जुदाकरना, अ० क्रि० जुदाहोना, अलग होना।

अलंकृत० गु० अलंकारयुत, आभूषित।

अलंकार० ना० पु० भूषण, गहना और शास्त्र विशेष।

अलंग० ना० स्त्री० ओर, पार।

अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो।

अलम्० अव्य० बहुत, ढेर।

अलम्बुषा० ना० स्त्री० श्वासा जो मुख से निकलती है, ज्ञानसारावल्यां यथा–(मुखमधि अवलम्बुषा विश्रामित, कुहूलिंग के देश बिरामित)।

अलवाई० गु० थोड़ेदिनकी ब्यानी, रामचन्द्रिकायां यथा–(ज्योंसुतको सुरभी अलवाई)।

अलवेश० गु० बहुतायत, अतिशयालवेशः इत्यभिधानः।

अलस० ना० पु० आलस्य।

अलसाना० अ० क्रि० औंघाना।

अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी।

अलक्षण० ना० पु० दुष्टचिह्न।

अलात० ना० स्त्री० बनेठी।

अलान० ना० स्त्री० हाथीबांधने की जंजीर। जिसको आंदू कहते हैं।

अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण।

अलापना० स० क्रि० आलापना।

अलाब० ना० पु० धूनी, पूरा।

अलि० ना० पु० बिच्छू, भ्रमर, वृश्चिक ना० स्त्री० सखी।

अलिक० ना० पु० माथा, झूठ।

अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० स्त्रियां।

अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी।

अली० ना० स्त्री० सखी, दूती, स्त्री।

अलीक० ना० पु० झूठ, मिथ्या।

अलीन॰ गु॰ अयोग्य, अनुचित, बेमेल।

अलीह॰ गु॰ अयोग्य, झूठ।

अलेख॰ गु॰ अत्यन्त, अगणित, बहुत।

अलैयाबलैया॰ ना॰ स्त्री॰ निछावर और दीवाली में पूला जलायके नचाना।

अलोन॰ } **अलोना॰** } गु॰ लोनरहित, फीका।

अलोप॰ गु॰ छुपा, बिगाड़ा, नष्ट, प्रकट।

अलोपना॰ स॰ क्रि॰ छुपाना, गुप्तकरना।

अलोल॰ गु॰ अटल, थिर, ना॰ स्त्री॰ खेलकूद।

अलौकिक॰ गु॰ जो लौकिक नहींहै अर्थात् परलोक का लोकातीत।

अल्प॰ गु॰ थोड़ा, किंचित्।

अल्पतर॰ गु॰ बहुतथोड़ा।

अल्पधी॰ गु॰ लघुबुद्धी, नासमुझ।

अल्पनिन्द्रा॰ गु॰ स्त्री॰ थोड़ासोना।

अल्पज्ञ॰ गु॰ कमसमझ, थोड़ाजानकार।

अल्लूक॰ ना॰ पु॰ आलूतरकारी।

अव॰ अव्य॰ जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी भिन्नता, कभी फैलान का होता है, कभी नास्ति, कभी अनादर।

अवकाश॰ ना॰ पु॰ औसर, सावकाश।

अवकेशी॰ गु॰ बांझ।

अवगति॰ ना॰ स्त्री॰ ज्ञान, वा बुरीदशा।

अवगाह॰ ना॰ पु॰ अथाह।

अवगाहन॰ ना॰ पु॰ स्नान, तैरना, थाह लगाना।

अवगाहि॰ अ॰ क्रि॰ थाहलगाके।

अवगीत॰ गु॰ निन्दित, दुष्ट, ना॰ पु॰ निन्दा, दोष।

अवगुण॰ ना॰ पु॰ खोट, दोष।

अवघट॰ गु॰ कुघाट।

अवचट॰ गु॰ एकदृष्टि, एकाएक।

अवडेरि॰ अ॰ क्रि॰ बहकाय, धोखादेकर, रामायणे यथा (पंचकहैं शिवसती विवाही, पुनिअवडेरि मराइनिताही)।

अवतंस॰ ना॰ पु॰ पताका, शिरोमणि।

अवतरना॰ अ॰ क्रि॰ उतरना, प्रकट होना।

अवतार॰ ना॰ पु॰ ईश्वर का मनुष्यादि के रूपसे पृथ्वीतलपर प्रकाशितहोना, जन्म।

अवतारिक॰ } **अवतारी॰** } गु॰ परमात्मा, ईश्वरअवतार लेनेहारा, यथा राम, कृष्ण।

अवदात॰ गु॰ उज्ज्वल, उत्तम, सुन्दर।

अवदीच॰ ना॰ पु॰ गुजराती ब्राह्मणोंकी जाति।

अवध॰ } **अवधि॰** } ना॰ स्त्री॰ वचन, मर्यादि, सीमा, समय वा श्रीअयोध्याजी वा उस के ओर पासका देश प्रसिद्ध।

अवधान॰ गु॰ चौकस, सावधान, ना॰ पु॰ चौकसाई, वचन।

अवध्य॰ गु॰ जो वधकरने के योग्य नहीं है।

अवधूत॰ ना॰ पु॰ योगी, शिवपूजक।

अवधूतनी॰ ना॰ स्त्री॰ योगिन।

अवना॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती, जमीन।

अवनीश॰ ना॰ पु॰ राजा, बादशाह।

अवन्तिका॰ } **अवन्ती॰** } ना॰ स्त्री॰ उज्जैननगरी, नदीविशेष।

अवम्॰ ना॰ पु॰ तिथिकाक्षय, गु॰ नीच।

अवयव॰ ना॰ पु॰ अंग वा शरीरका भाग।

अवराधक॰ गु॰ सेवक ध्यानी।

अवराधित॰ गु॰ सेवित, ध्यान कियेगये।

अवराधना॰ स॰ क्रि॰ सेवाकरना।

अवरुद्ध॰ बँधाहुआ।

अवरेखना॰ स॰ क्रि॰ लिखना, लकीरकरना।

अवरेखी॰ स॰ क्रि॰ लिखी, लकीर को।

अवरोध॰ ना॰ पु॰ बन्ध, रोक, अटक।

अवलम्ब॰ ना॰ पु॰ आश्रय, आसरा, सहारा।

अवि॰ ना॰ पु॰ पर्वत, शेष, सूर्य्य, रक्षक।

अविलम्बित॰ } **अविलम्बी॰** } गु॰ आश्रित, लटकता, पंथी।

अविरलि॰ ना॰ स्त्री॰ पांति, पंक्ति, कतार।

अवलोकन॰ ना॰ पु॰ दर्शन, दृष्टि, देखाव।
अवलोकना॰ स॰ क्रि॰ देखना, ताकना।
अवश॰ गु॰ पराधीन, असमर्थ।
अवशिष्ट॰ गु॰ शेष, उच्छिष्ट, बाकी।
अवशेष॰ ना॰ पु॰ शेषबचा, बाकीरहा।
अवशेषित॰ गु॰ जो बाकी रहगया।
अवश्य॰ अव्य॰ चाहिये, निश्चय, कर्त्तव्य, जरूरी।
अवसर॰ ना॰ पु॰ सावकाश, घात, समय, मौकअ, इत्तिफ़ाक।
अवसान॰ ना॰ पु॰ अन्त, समाप्ति, आखिर।
अवसेरि॰ ना॰ स्त्री॰ देर, राहदेखना, बाट हेरना।
अवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ दशा, उमर, हालत और दुर्दशा।
अवज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ अपमान, निन्दा, अनादर, तुच्छकरना, आबरूउतारना।
अवाई॰ ना॰ स्त्री॰ नगिचाई, आमद।
अवाक्॰ ना॰ पु॰ गूंगा, मूक, मौनी।
अवाच्य॰ गु॰ अकथ्य, मौनी, निरर्थ, कुवच।
अवाधी॰ गु॰ स्त्री॰ सुखरूपी, बाधारहित।
अवाध्य॰ गु॰ विना बाध, अतर्क्य।
अवाध्योपकर्म॰ गु॰ बाधारहितकर्म, अतर्क्यकर्म।
अवारी॰ ना॰ स्त्री॰ दुकान, पंक्ति, रामायणे यथा-(चारु बजारु विचित्र अवारी, मणिमय विधिजनु स्वकर संवारी) अम्बारा।
अवास॰ ना॰ पु॰ घर, मकान।
अविकल॰
अविकलित॰ } गु॰ निश्चित, आनन्द।
अविकार॰ ना॰ पु॰ विकाररहित।
अविकारी॰ गु॰ जन्मादि विकाररहित।
अविगत॰ गु॰ व्यापक।
अविगति॰ ना॰ स्त्री॰ ज्ञान।
अविचल॰ गु॰ अचल, थिर, कायम।
अविचार॰ ना॰ पु॰ भूल, अन्याय, नादानी।
अविचारी॰ गु॰ विचाररहित, अन्यायी।
अविदूरि॰ गु॰ पास, निकट।
अविद्या॰ ना॰ स्त्री॰ भूल, अज्ञानता, माया, विद्याहीन।
अविनय॰ गु॰ ढिठाई, चंचलाहट, गुस्ताखी।
अविनाश॰ ना॰ पु॰ नाशरहित, कुशल।
अविनाशी॰ गु॰ कुशल, जिसका नाश न होवे।
अविनीति॰ गु॰ चंचल, ढीठ।
अविन्दु॰ गु॰ बिन्दुरहित।
अविरल॰ गु॰ निरन्तर, अभेद।
अविरोध॰ ना॰ पु॰ चैन, सुख, आनन्द, गु॰ विरोध रहित।
अविरोधनी॰ ना॰ स्त्री॰ } गु॰ सुखी, बेख-
अविरोधी॰ ना॰ पु॰ } टके।
अविलम्ब॰ ना॰ पु॰ शीघ्रता, जल्दी, यत्न।
अविलम्बित॰ गु॰ शीघ्र, जल्द।
अविवादी॰ गु॰ जो विवाद न करे, शान्त।
अविवेक॰ ना॰ पु॰ अविचार, अज्ञानता, गु॰ जो विवेकरहित हो।
अविवेकी॰ गु॰ विचारहीन, अज्ञानी।
अविशेष॰ समान, जो विशेष नहीं।
अविश्वास॰ ना॰ पु॰ अप्रतीत, बेएतबार।
अविश्वासी॰ गु॰ जिसकी प्रतीति नहीं वा जो किसीकी प्रतीति न माने।
अविच्छिन्न॰ गु॰ निरन्तर, अखण्ड, पूरा।
अवेगी॰ ना॰ पु॰ विधाराऔषधि गु॰ जो वेगता रहित हो।
अवेर॰ ना॰ स्त्री॰ ढील, विलम्ब, कुसमय।
अवेला॰ ना॰ स्त्री॰ कुसमय, बे वक्त।
अव्यक्त॰ गु॰ जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम नहीं।
अव्यय॰ ना॰ पु॰ स्वर्ग, अक्षर, गु॰ जो व्यय नहो, जिस शब्दका कारकत्व न हो, कृपण।
अव्यवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ जो शास्त्र से सम्मत नहीं है।
अव्यवस्थित॰ गु॰ जो ठीक नहीं है।

अव्यवहारित० गु० त्यागित, छोड़ाहुआ।
अव्यवहित० गु० मिला, व्यवधान रहित।
अव्याप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षणका जो नहीं जाना, प्रकट में प्रकटतारहित।
अव्याहत० गु० बिनरोक, मायाजित, रामायणे यथा-(अव्याहत गति शम्भु प्रसादा)।
अशकुन० ना० पु० अपशकुन, बुराशकुन।
अशकुनी० गु० अपशकुनी, बुरे लक्षणयुत।
अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, असमर्थ।
अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्तिरहित देव।
अशक्य० गु० असाध्य, शक्यतारहित।
अशंक० } **अशंका०** } गु० निर्भय, निडर, बेखौफ़।
अशन० ना० पु० भोजन, खाना।
अशनि० ना० पु० वज्र।
अशरण० गु० रक्षारहित, पनाहनहीं।
अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है।
अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्तनहीं है।
अशिव० गु० मंगल रहित, अशुभ।
अशिष्ट० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।
अशुक० गु० अशोक, अदुःख।
अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।
अशुद्ध० गु० अपवित्र, जो ठीक नहीं है, गलता।
अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल।
अशुभ० गु० अमंगल, जो अच्छा न हो, ना० पु० पाप, दोष।
अशेष० गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब।
अशोक० ना० पु० वृक्षविशेष, सुख, चैन।
अशोभा० गु० अनगढ़, कुरूप, ना० स्त्री० सुंदरतारहित, शोभाहीन।
अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध।
अश्म० ना पु० पत्थर।
अश्मरी० ना० स्त्री० पथरी वा मूत्रकृच्छ्ररोग।
अश्मभेद० ना० पु० पाषाणभेद।
अश्रद्धा० ना० स्त्री० घिन, चिढ़, अविश्वास।
अश्रु० ना० पु० आंसू।
अश्रुपात० ना० पु० आंसुओं का गिरना।
अश्लेषा० ना० स्त्री० श्लेषा, नवाँनक्षत्र।
अश्व० ना० स्त्री० घोड़ा।
अश्वगन्धा० ना० स्त्री० असगंध औषधि।
अश्वतर० ना० पु० खच्चर।
अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष।
अश्वपति० ना० पु० वहराजा जिनकेपास बहुत घोड़े वा घुड़चढ़ेहों।
अश्वमेध० ना० पु० यज्ञविशेष यह यज्ञ राजाधिराज करसक्ता है, जो जगत्‌जीतहो।
अश्वयुज० ना० पु० कुंवारमास।
अश्वरक्षक० ना० पु० साईस।
अश्ववार० ना पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।
अश्वशाला० ना० स्त्री० तबेला, घोड़साल।
अश्वहा० ना० स्त्री० कनेरवृक्ष।
अश्वा० ना० स्त्री० असगंध।
अश्वारूढ़० ना० पु० अश्ववार, सवार, घुड़चढ़ा।
अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथमनक्षत्र।
अषय० गु० जिसका क्षय नहीं, अमिट।
अषयवट० ना० पु० वह बरगद जो प्रयाग में है।
अषाढ़० ना० पु० चतुर्थमास, अषाढ़, असाढ़।
अष्ट० ना० पु० आठ ८।
अष्टकुरीसर्प० ना० पु० आठकुरी सांपों की अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तक्षक ३ कर्कोटक ४ शंख ५ कुलिक६पद्मक ७ महापद्मक ८।
अष्टकोण० ना० पु० आठकोने।
अष्टचत्वारिंशत० गु० अठतालीस ४८।
अष्टदिशाग्रह० ना० पु० आठों दिशा के ग्रह अर्थात् सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनैश्चर, चन्द्रमा, बुध, गुरु।
अष्टधातु० ना० पु० आठधातु अर्थात् सोना।

रूपा, तांबा, पीतल, रांगा, कांसा, सीसा, लोहा।

अष्टपंचाशत्॰ गु॰ अट्ठावन ५८।

अष्टप्रहर॰ गु॰ आठपहर, दिनराति।

अष्टभैरव॰ ना॰ पु॰ आठ भैरव अर्थात् असितांगरुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध, कपाली, भीषण, काल।

अष्टम॰ गु॰ आठवां।

अष्टमांश॰ ना॰ पु॰ आठवांभाग $\frac{1}{8}$।

अष्टमी॰ ना॰ स्त्री॰ आठवीं तिथि, आठैं।

अष्टवसू॰ ना॰ पु॰ आठवसु अर्थात् आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभावन्त।

अष्टविंशकुलक्षण॰ ना॰ पु॰ अट्ठाईसकुलक्षण अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहत ३ दुर्वाद ४ लोभ ५ लम्पटता ६ अलज्जा ७ अविद्या ८ अशोभा ९ आलस्य १० अतिनिद्रा ११ दुष्टता १२ अदया १३ कृपणता १४ दरिद्रता १५ रोग १६ मलिनता १७ कुपात्रदान १८ अबूझता १९ भोग्यता २० अत्याहार २१ अहंकार २२ अदृढ़ता २३ कुदान २४ दुर्भावता २५ अप्रतीति २६ मोह २७ व्यंग्यवाक्यता २८।

अष्टविंशति॰ गु॰ अट्ठाईस २८।

अष्टसिद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ आठसिद्धि अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ वशीकरण ७ ईशता ८।

अष्टांगप्रणाम } **वादण्डवत्॰** } ना॰ पु॰ स्त्री॰ आठअंग से प्रणाम अर्थात् उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पद, कर, जानुसे नमस्कार करना।

अष्टांगयोग॰ ना॰ पु॰ योगके आठअंग अर्थात् यम १ संयम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८।

अष्टादश॰ ना॰ पु॰ अठारह १८।

अष्टादशपुराण॰ ना॰ पु॰ अठारहपुराण अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मत्स्य ४ ब्रह्मांड ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त्त ७ विष्णु ८ वायु ९ वामन १० वराह ११ अग्नि १२ नारद १३ पद्म १४ कूर्म १५ स्कन्द १६ लिंग १७ गरुड़ १८।

अष्टादशस्मृति॰ ना॰ स्त्री॰ अठारह स्मृति। अर्थात् मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४ हारीत ५ उशना ६ अंगिरा ७ आपस्तम्ब ८ संवर्त्त ९ यम १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ पाराशर १३ व्यास १४ शंखलिखित १५ गौतम १६ वशिष्ठ १७ दक्ष १८।

अष्टापद॰ ना॰ पु॰ कंचन, सुवर्ण, पशु।

अष्टाशीति॰ गु॰ अस्सी ८०।

असंख्या॰ } **असंख्यात॰** } गु॰ अगणित, बेशुमार, बहुत।

असंशय॰ ना॰ पु॰ निश्चय, निस्सन्देह।

असकति॰ ना॰ स्त्री॰ आलस्य।

असकती॰ गु॰ आलसी।

असगन्ध॰ ना॰ पु॰ औषधि विशेष।

असंगत॰ गु॰ मिथ्या, अनुचित, अनर्थ।

असज्जन॰ गु॰ कुपात्र, नीच, दुष्ट।

असत्॰ गु॰ असाधु, अधर्मी।

असन॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना, वृक्षविशेष।

असनि॰ ना॰ पु॰ वज्र।

असन्तान॰ गु॰ पुत्रहीन, निर्वंश।

असन्तुष्ट॰ गु॰ अप्रसन्न, धीरजरहित।

असन्तोष॰ गु॰ अधीरजता।

असभ्य॰ गु॰ जो सभाके योग्यनहीं, दुष्ट, गवांर।

असभ्यता॰ ना॰ स्त्री॰ दुष्टता, सज्जनता, गवांरपन, वहशत।

असम॰ गु॰ जो बराबर न हो, विषम।

असमंजस॰ ना॰ पु॰ दुबिधा, सन्देह, बिनु लगाव।

असमय॰ गु॰ अकाल, विपत्तिकाल।

असमर्थ॰ गु॰ जो समर्थ न हो, निर्बल।

असमशर॰ ना॰ पु॰ कामदेव।

असम्पूर्ण॰ गु॰ जो पूरा न हो।

असम्बन्ध॰ गु॰ अनमेल, अनर्थ।

असम्भव॰ गु॰ अनहोना, जो न होसके।

असम्मत० गु० विरुद्ध, बेसलाह ।

असह्य० } गु० जो सहा न जावे, कठिन ।
असह्य० }

असमाधि० गु० जो दूर न होसके रामायणे यथा-(देखी व्याधि असाधि बढ़ि)।

असाधु० गु० अधर्मी, दुष्टमति, कमीना ।

असाध्य० गु० जो कामसिद्धि न होसके, रोगी जो जीवे नहीं ।

असामर्थ० } ना० पु० कुछ सामर्थनहीं, लाचार
असामर्थ्य० } गु० कुछ सामर्थ्य नहीं रखता ।

असार० गु० छूछा, पोला, सूखा, कच्चा काठ, विनापौरुष, निर्बल ।

असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० है, ऐसे ।

असिद्ध० गु० अनबना,अनपका, जो सिद्धनहीं ।

असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी ।

असिनि० ना० स्त्री० तलवारें ।

असिपत्री० ना० स्त्री० सेंहुड़ ।

असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी, कटारी ।

असिदंष्ट्रक० ना० पु० मगर, मच्छ ।

असीम० गु० सीमारहित अर्थात् अनन्त ।

अशीश० गु० शिररहित ।

असीस० ना० पु० आशीर्वाद, दुआ ।

असु० ना० पु० पंचप्राण, जीव, शोच ।

असुग० ना० पु० किरण, बाण ।

असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।

असुरविनायक० ना० पु० बाणासुर ।

असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीरामकृष्णादि ।

असुहर० गु० प्राणहर, मारनेवाला ।

असूझ० गु० अदृश्य, निरूप ।

असूया० ना० स्त्री० कलंक, दोष ।

असों० अव्य० यहवर्ष, इसवर्ष ।

असोक० ना० पु० अशोक ।

असोची० गु० अचेत, जो विद्या या विचार से न होसके, जो पछिताने के योग्य नहीं ।

असोचा० गु० निर्मोही, प्रमादी ।

असोस० ना० स्त्री० सूखी नदी ।

असौ० अव्य० यह ।

असौंध० ना० स्त्री० कुबास, बदबूय ।

अस्त० ना० पु० छिपाव, छुपना ।

अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न, उलटा पुलटा, बेमेल ।

अस्ताचल० ना० पु० वह पर्वत विशेष जहां सूर्यनारायण अस्त होते हैं ।

अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी ।

अस्थि० ना० पु० हाड़, हड्डी ।

अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर ।

अस्थिर० गु० चंचल, चलायमान ।

अस्थिरता० ना० स्त्री० चंचलाहट, थिरताहीन ।

अस्थिरशृंखला० } ना० स्त्री० हरसिंघाड़ ।
अस्थिसंहार० }

अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, न्यून ।

अस्थूलभटा० ना० स्त्री० बड़ीकटाई ।

अस्मसार० ना० पु० लोहा ।

अस्वच्छन्द० } गु० आधीन, अपराधीन जो
अस्वतन्त्र० } अपने वश में नहीं है ।

अस्वत्थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य्य का पुत्र ।

अस्वीकार० ना० पु० नामंजूर, अंगीकार नहीं ।

अस्सी० गु० असी ८० ।

अस्त्र० ना० पु० जिसको फेंकके मारते हैं यथा बाण आदि ।

अह० ना० पु० दिन, अहंकार, कष्ट ।

अहं० सर्व, मैं, हम, निजकाबोधक ।

अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद, घमण्ड ।

अहङ्कारी० } गु० अभिमानी, दम्भी, मग़रूर ।
अहंकृत० }

अहमित० गु० अहंकारयुक्त, मग़रूर ।

अहरेणुका० ना० स्त्री० रेणुका, बालू ।

अहर्निश० ना० पु० रातिदिन ।

अहलाद० ना० पु० प्रेम, अनुराग ।

अहल्या० ना० स्त्री० गौतममीकी स्त्री ।

अहह० अव्य० आर्त शब्द यथा हाय हाय ।

अहार० ना० पु० आहार, कलेऊ, लेई ।

अहारना॰ स॰ क्रि॰ मड़ियाना, चिपकाना, लेई लगाना, जमाना।

अहारी॰ गु॰ खानेवाला, छाँटीहुई लकड़ी, कोई वस्तु जो मड़ियाई गई ना॰ स्त्री॰ कोयल पक्षी।

अहि॰ ना॰ पु॰ सांप, रुधिर, दैत्यविशेष।

अहिंसक॰ गु॰ भोला, साधु जो हिंसा न करे।

अहित॰ ना॰ पु॰ शत्रु, बैर, शत्रुता।

अहिफेन॰ ना॰ स्त्री॰ अफयून, अफ़ीम।

अहिमाली॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

अहिर॰ ना॰ पु॰ मोरपक्षी, जातिविशेष।

अहिवल्लरी॰ ना॰ स्त्री॰ नागबेलि, पानआदि।

अहिवात॰ ना॰ पु॰ सुहागस्त्रीका।

अहिवेलि॰ ना॰ स्त्री॰ नागबेलि, पानआदि।

अहीर॰ ना॰ पु॰ ग्वाला, आभीर।

अहीरणी॰ ना॰ स्त्री॰ ग्वालिन।

अहीला॰ गु॰ साहसी, निडर, बहादुर।

अहीश॰ ना॰ पु॰ शेषादि, सर्पादि।

अहे॰ अव्य॰ सम्बोधन, थे।

अहेर॰ ना॰ स्त्री॰ आखेट, शिकार।

अहेरिया॰ / **अहेरी॰** } गु॰ आखेटकी, शिकारी।

अहो॰ अव्य॰ सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में बोला जाता है, यथा अहोभाग्य।

अहोरात्र॰ ना॰ पु॰ दिनराति।

अहौ॰ अव्य॰ अहो।

अक्ष॰ ना॰ पु॰ नेत्र, बहेरावृक्ष, पांसा।

अक्षत॰ ना॰ पु॰ चावल, जव पूजा आदि के गु॰ घावरहित, फोड़ारहित।

अक्षर॰ ना॰ पु॰ ककारादि वर्ण, गु॰ सूक्ष्म, अविनाशी।

अक्षविद्या॰ ना॰ स्त्री॰ रमल।

अक्षविद्वान्॰ गु॰ रम्माल, पांसावाला।

अक्षांस॰ ना॰ पु॰ रेखा, भूमिके उत्तर वा दक्षिण केन्द्रतक नव्वे २ अंश।

अक्षि॰ ना॰ पु॰ नेत्र, आंखि।

अक्षिसंकेत॰ ना॰ पु॰ आंखि से इसारःकरना। कटाक्ष, हावभाव।

अक्षुब्ध॰ गु॰ स्थिर, शान्त।

अक्षौहिणी॰ ना॰ स्त्री॰ सैन प्रमाण, इसका कथन कई प्रकारका है। यथा (नवनाग सहस्राणि नागे नागे शतं रथा, रथे रथे शतंचाश्वा अश्वेअश्वे शतन्नराः) अथवा दश बाहनी अथवा १०९३५० पैदल, ६५६१० सवार, २१८०० रथ, २१८७० हाथी।

अत्र॰ अव्य॰ यहां, इसजगह।

अत्रि॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा के पिता, मुनिविशेष।

अत्रिज॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, दुर्वासा, दत्तात्रेय।

अज्ञ॰ गु॰ मूर्ख॰ अजान, नादान।

अज्ञता॰ ना॰ स्त्री॰ मूर्खता, नादानी।

अज्ञात॰ गु॰ अनजान, नामालूम।

अज्ञाता॰ गु॰ मूर्ख, भोला, नादान।

अज्ञान॰ गु॰ मूर्ख, मूर्खता।

अज्ञानता॰ ना॰ स्त्री॰ मूर्खता, नादानी।

(आ)

आ॰ अव्य॰ जिस॰ शब्दके प्रथम में यह संयुक्त होताहै उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाताहै और कभी क्रिया॰ के अवधिका ज्ञापक होताहै।

आं॰ अव्य॰ खेदोक्तिका सूचक शब्द।

आंक॰ ना॰ पु॰ अंक, चिह्न, मदार।

आंकना॰ स॰ क्रि॰ लखना, अँकाना।

आंख॰ ना॰ स्त्री॰ चक्षु, नेत्र।

आंग॰ ना॰ पु॰ अंग।

आंगन॰ / **आंगना॰** } ना॰ पु॰ अंगना, सहन।

आंच॰ स्त्री॰ अग्निकी ताप।

आंचर॰ / **आंचल॰** } ना॰ पु॰ अंचला।

आंशू॰ ना॰ पु॰ आंसू।

आंट॰ ना॰ स्त्री॰ गांठि, विरुद्धता, ताक।

आंटना॰ अ॰ क्रि॰ समाना, पहुंचना।

आंटी० ना० स्त्री० फेंटी, अंटिया ।
आंड० ना० पु० वृषण, अंड ।
आंत० ना० स्त्री० आंतड़ी ।
आंधी० ना० स्त्री० झकड़, झंझावायु ।
आंब० ना० पु० आम्र ।

अम्र० } ना० पु० पेट में रोग विशेष, आम्र,
आंव० } आमाशय ।

आंवला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष ।
आंसू० ना० पु० आंखोंका पानी ।
आक० ना० पु० अर्क, मदार ।
आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि के उत्पन्न होनेका स्थान ।
आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्नहो ।
आकर्षण० ना० पु० बल से खींचना ।
आकर्षित० गु० जो खींचागया ।
आकांक्षा० ना० स्त्री० वांछा, इच्छा, चाह ।
आकांक्षित० गु० वांछित, चाहिता ।
आकांक्षी० गु० इच्छाकरनेवाला, चाहक ।
आकार० ना० पु० स्वरूप, डौल, सैन, सूरति ।
आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकारहोवे ।
आकाश० ना० पु० गगन, आस्मान, अम्बर ।
आकाशपवन० ना० पु० लताविशेष, आकाशबेलि वा आकाशका पवन ।
आकाशवाणी० ना० स्त्री० वाणी जो आकाश से होती है ।
आकाशविलासी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु० जो आकाशमें विलासकरे यथा पक्षी ।
आकाशबेलि० ना० स्त्री० अमरबेलि ।
आकाशी० गु० आकाशका, स्वर्गीय ।
आकुल० गु० व्याकुल, कातर ।
आकृति० ना० स्त्री० रूप, आकार, सूरति, डौल ।
आकृष्ट० गु० खींचाहुआ ।

आक्रम० ना० पु० बलको प्रकाश करके किसी काम में दूसरे से अधिक होना, चढ़ाव ।
आखण्डल० ना० पु० इन्द्र ।
आखण्डलपुर० ना० पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग ।
आखत० ना० पु० अक्षत ।
आखा० ना० पु० बोरा, गठिया, चलनी ।
आखात० ना० पु० खलीज ।

आखु० } ना० पु० मूश, चूहा ।
आखुख० }

आखेट० ना० पु० अहेर, शिकार, मृगया ।
आखेटकी० गु० शिकारी, अहेरी ।
आख्या० ना० स्त्री० संज्ञा, नाम ।
आग० ना० पु० अग्नि ।
आगत० गु० उपस्थित ।
आगम० ना० पु० वेद व शिवोक्तशास्त्र।विशेष भविष्यत् वा द अवाई ।
आगमन० ना० पु० अवाई, आन ।
आगमवक्ता० ना० पु० शिव, गु० जो आगम की बात बदे वा आगम का पाठकहोवे ।
आगमविद्या० ना० स्त्री० आगम कहने की विद्या ।
आगमज्ञानी० ना० पु० तान्त्रिक जो आगम को जानता होवै ।
आगर० ना० पु० अधिक बावर ।
आगरा० ना० पु० नगर विशेष ।
आगूरी० ना० स्त्री० कोठरी ।
आगलान्त० अव्य० गलेलग ।
आगा० ना० पु० सामना, अगवाड़ा ।
आगामी० गु० आनेहारा, अवैया ।
आगार० ना० पु० घर, मकान ।
आगिल० गु० पहिला ।

आगू० } अव्य० सामने, बढ़िके, अग्रे ।
आगे० }

आगोट० ना० स्त्री० चौकसी, कैद ।
आग्रह० ना० पु० उपकार, जिहालत, ग्रहण ।
आघात० ना० पु० चोट, मारपीट ।

आघार॰ ना॰ पु॰ घृत, घी, छिड़काव।

आघु॰ ना॰ पु॰ मोल, मर्य्यादा, यथा बिहारीलालसप्तशतिकायां। दोहा (जन्म जलधि पानिप विमल भौजग आघु अपार, रहे गुणी है गरपरे भलो न मुक्ताहार)।

आंगिरस॰ ना॰ पु॰ बृहस्पति।

आचमन॰ ना॰ पु॰ आचमन, अर्थात् भोजन वा पूजा करने के पहिले थोड़ा जल हथेली में रखके पीना वा कुल्ली करना।

आचरण॰ ना॰ पु॰ करतूत, चाल, व्यवहार, आचार, शास्त्रोक्त क्रिया।

आचार॰ ना॰ पु॰ विचार करना, पाखण्ड, परहेज़, खटाई फ़ारसी।

आचारी॰ गु॰ जो मनुष्य शास्त्रोक्त क्रिया यत्न समेत करे।

आचार्य्य॰ ना॰ पु॰ वेदका उपदेशक, गुरु।

आच्छादन॰ ना॰ पु॰ वस्त्र, ढकना, चोंघी, पोशाक।

आच्छादित॰ गु॰ वस्त्रयुत, ढकाभया।

आछे॰ गु॰ अच्छेका बहुवाक्य।

आज॰ अव्य॰ अद्य, इमरोज़।

आजनेय॰ ना॰ पु॰ घोड़ा यथा (आजनेयाः कुलीनाःस्युर्विनीताःसाधुवाहिनः इत्यमरः)।

आजा॰ ना॰ पु॰ दादा, पिताका पिता।

आजाना॰ अ॰ क्रि॰ अचानक आना, पहुंचना।

आजि॰ ना॰ पु॰ युद्ध, समर, लड़ाई।

आजीव॰ ना॰ पु॰ } जीविकानिर्वाह, मआश।
आजीविका॰ स्त्री॰ }

आटना॰ स॰ क्रि॰ भरना।

आटा॰ ना॰ पु॰ चौस, सूजी, पिसान।

आठकी॰ ना॰ पु॰ तिल जिनमें से तेल निकलताहै।

आड़॰ ना॰ स्त्री॰ ओट, परदा।

आड़ना॰ स॰ क्रि॰ ओटकरना, आड़देना।

आडम्बर॰ ना॰ पु॰ उद्योग, अभिमान, हर्ष।

आड़ा॰ गु॰ तिरछा, टेढ़ा।

आड़ी॰ ना॰ पु॰ रक्षक, ना॰ स्त्री॰ गाने में स्वरविशेष, टेढ़ी, तिरछी, बेंड़ी।

आड़ेआना॰ अ॰ क्रि॰ रक्षाकरना, बचावहोना।

आढ्य॰ गु॰ धनाढ्य, धनी, स्वामी।

आतङ्क॰ ना॰ पु॰ भयभीत, दुःख, ठाठ डर, प्रताप, दबरत।

आततायी॰ गु॰ डकैत, हत्यारा, परस्त्रीहारक।

आतप॰ ना॰ पु॰ घाम, धूप।

आतपत्र॰ ना॰ पु॰ छत्र।

आतपी॰ गु॰ धूपसे विकल।

आता॰ ना॰ पु॰ सीताफल।

आतिथेय॰ } गु॰ अतिथि का सत्कारकरना,
आतिथ्य॰ } अतिथिपालन, मेजबानी।

आतुर॰ गु॰ दुःखी, रोगी, व्याकुल, घाबरा।

आतू॰ ना॰ स्त्री॰ गुरुवायिन।

आत्मघात॰ ना॰ पु॰ अपनीहत्या, निजघात।

आत्मघाती॰ गु॰ निज जीवहन्ता, अधर्मी, जीवको दुःखदाता।

आत्मज॰ ना॰ पु॰ पुत्र, लड़का।

आत्मनामी॰ गु॰ जो आप से प्रसिद्ध है।

आत्मपालक॰ गु॰ आपस्वार्थी, आपकाजी।

आत्मभू॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

आत्ममात्र॰ ना॰ पु॰ समस्तजीव, जीवभर।

आत्मरक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ निज जीव की रक्षा, इन्द्रवारुणी औषधि।

आत्मरक्षक॰ गु॰ निजजीव पालक।

आत्मश्लाघा॰ ना॰ स्त्री॰ निज मुखसे अपनी बड़ाई।

आत्महा॰ गु॰ निजजीवघाती, धर्मरहित।

आत्मा॰ ना॰ पु॰ स्त्री॰ जीव, मन, बुद्धि, देह, स्वभाव, धन, अन्तर, अहंकार, आप।

आत्मिक॰ गु॰ मनका, अपना।

आत्मिकता॰ ना॰ स्त्री॰ अपनाहत।

आत्मीय॰ गु॰ आत्मिक, अपना।

आदर॰ ना॰ पु॰ सत्कार, सन्मान, प्रेमसेलेना।

आदरार्थ॰ गु॰ जिसमें आदर पाया जाता है।

आदर्श॰ } ना॰ पु॰ दर्पण, टीका ।
आदर्शन॰ }

आद्रक॰ ना॰ स्त्री॰ अदरक ।

आदान॰ ना॰ पु॰ लेना ।

आदि॰ गु॰ पहिला, जइत्यैरह, शुरूअ ।

आदिअन्त॰ गु॰ आरम्भ से समाप्तितक, वा आदि और अन्त, आद्यन्त ।

आदिक॰ अव्य॰ इत्यादि और सब ।

आदित॰ } ना॰ पु॰ सूर्य्य ।
आदित्य॰ }

आदित्यवार॰ ना॰ पु॰ प्रथमदिन, इतवार ।

आदित्यहृदय॰ ना॰ पु॰ ग्रंथविशेष ।

आदितेय॰ ना॰ पु॰ देवता, अदितिजात ।

आदेश॰ ना॰ पु॰ आज्ञा, अनुमति, योगीलोगों का प्रणाम, व्याकरणमें एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलने को कहते हैं ।

आदौ॰ अव्य॰ प्रथम, पहिले ।

आद्य॰ गु॰ पहिला, प्रथम का ।

आद्योपान्त॰ गु॰ पूरा, सब, समस्त ।

आधुनिक॰ गु॰ इसकालका ।

आधर्ष॰ ना॰ पु॰ भय, डर, कठिन ।

आधा॰ गु॰ अर्द्ध, $\frac{1}{2}$ ।

आधान॰ ना॰ पु॰ गर्भ, गर्भ का धारण ।

आधार॰ ना॰ पु॰ प्रतिपालक, अधिकरण, सहारा, योगमें एकचक्र का नाम ।

आधारी॰ गु॰ सहारा पानेवाला ।

आधासीसी॰ ना॰ स्त्री॰ अर्धकपाली ।

आधि॰ ना॰ स्त्री॰ मनकी पीड़ा, उदासी ।

आधिक्य॰ ना॰ पु॰ बढ़ती, अतिशयता ।

आधिपत्य॰ ना॰ पु॰ ऐश्वर्य्य, स्वामित्व ।

आधीन॰ गु॰ वश, आज्ञाकारी, तावेदार ।

आधीनता॰ } ना॰स्त्री॰ नम्रता, आज्ञाको पालन करना, लल्लोपत्तो, तावेदारी ।
आधीनताई॰ }

आन॰ गु॰ और, अन्य, ना॰ स्त्री॰ आज्ञा, संकोच, सौगन्द ।

आनक॰ ना॰ पु॰ दुन्दुभी, डंका ।

आनदेव॰ ना॰ पु॰ और देवता ।

आनन॰ ना॰ पु॰ मुख, अव्य॰ और, नहीं ।

आनना॰ स॰ क्रि॰ लाना ।

आनन्द॰ ना॰ पु॰ } हर्ष, सुख, खुशी ।
आनन्दता॰ स्त्री॰ }

आनन्दित॰ गु॰ खुश, हर्षित, निहाल ।

आनन्दी॰ गु॰ सुखी, खुश ।

आनव॰ } क्रि॰ लाऊंगा ।
आनिहौं॰ }

आनुकूल्य॰ ना॰ पु॰ सहायता ।

आनुपूर्वी॰ ना॰ स्त्री॰ मूलावधि, क्रम ।

आनुमानिक॰ गु॰ युक्ति, सिद्ध ।

आन्ध्र॰ ना॰ पु॰ तैलंगदेश ।

आप॰ ना॰ पु॰ पानी, सर्व॰ स्वकीय, निज ।

आपकाज॰ ना॰ पु॰ अपनाकाम ।

आपकाजी॰ गु॰ जो अपने काम में लगा रहताहै ।

आपण॰ ना॰ स्त्री॰ प्रण, शर्त ।

आपत्ति॰ ना॰ स्त्री॰ विपत्ति, आफ़त, दोष ।

आपद॰ } ना॰ स्त्री॰ विपत्ति, अभाग, कठिनता ।
आपदा॰ }

आपन्न॰ गु॰ प्राप्त, शरण्य, ग्रस्त, अभागा ।

आपपत्ति॰ ना॰ पु॰ वरुणदेवता ।

आपरूप॰ गु॰ आप, विशेष ईश्वर ।

आपस॰ सर्व॰ अपने, भाई बन्द ।

आपस्तम्ब॰ ना॰ स्त्री॰ स्मृतिविशेष ।

आपाधान॰ ना॰ पु॰ युद्ध, समर ।

आप्त॰ गु॰ जो विश्वासके योग्यहै, प्राप्त, सच्चा ।

आप्लुत॰ गु॰ जो नहायचुका ।

आफ़रीयो॰ स॰ क्रि॰ दिया, बख़्शा, यह शब्द अर्बी का है ।

आफ़ू॰ } ना॰ स्त्री॰ अफ़यून, अफ़ीम ।
आफ़ूक॰ }

आबाल० ना० पु० लड़कापन, बालकता।
आभरण० ना० पु० भूषण, गहना, जेवर।
आभा० ना० स्त्री० भड़क, शोभा, चमक।
आभार० ना० पु० बोझ।
आभास० ना० पु० अभिप्राय, थोड़ा अंश, क्षेत्रविशेष।
आभीर० ना० पु० भीलादि, गोप, अहीर।
आभूषण० ना० पु० अलंकार, गहना।
आम० गु० ना० पु० कच्चा, आम्रफल।
आमय० ना० पु० रोग।
आमर्ष० ना० पु० क्रोध, गुस्सह, डाह।
आमर्षण० ना० पु० क्रोध करना।
आमर्षि० अ० क्रि० क्रोधयुक्तहोकर।
आमलक०, आमला० } ना० पु० आंवलाफलविशेष।
आमान्न० ना० पु० कोरा अनाज, सीधा।
आमाशय० ना० स्त्री० पेटकी थैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है।
आमिष० ना० पु० मांस, गोश्त।
आमिषाहार० ना० पु० मांसखाना।
आमिषाहारी० गु० मांसखानेवाला।
आमोद० ना० पु० आनन्द, हर्ष, सुगन्ध, सुबास।
आम्बर० ना० स्त्री० वस्तुविशेष अर्थात् कहवा।
आम्र० ना० पु० आंबका फल वा वृक्षविशेष।
आय० ना० पु० लाभ, धनागम।
आयत० गु० लंबा, दीर्घ, घर, चौड़ा, ना० पु० घाम, धूप।
आयतन० ना० पु० घर, मकान।
आयत्त० गु० नम्र, अधीन, साज।
आयस्तु० ना० पु० आज्ञा, हुक्म।
आया० ना० स्त्री० लड़कों को खिलानेवाली।
आयास० ना० पु० परिश्रम, मिहनत।
आयु० ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर।
आयुध० ना० पु० हथियार, अस्त्रशस्त्र।

आयुदा०, आयुर्दाय०, आयुर्बल०, आयुष्०, आयुस्० } ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर, हयात।
आरक्त० गु० लाल, सुर्ख।
आरग्वध० ना० स्त्री० किरवाली।
आरज० ना० पु० मर्यादिक, मानी, उत्तम, जनश्रेष्ठ, आर्य।
आरण्ड० ना० पु० रण्ड, अण्डी का वृक्ष।
आरति० ना० स्त्री० दुःख, अतिप्रेम, इश्क वा पूजा प्रसिद्ध।
आरती० ना० स्त्री० दीपक जलायके देवता को दिखाना।
आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उत्थान, शुरूअ, लगा लगाना।
आरा० ना० पु० ताक़, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष।
आराति०, अराति० } ना० पु० शत्रु, वैरी।
आराधक० गु० सेवक, भजन करनेहारा।
आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा।
आराधना० स० क्रि० पूजा करना, अर्चना।
आराम० ना० पु० उपवन, बागीचह, चैन।
आरि० ना० स्त्री० झगड़ा, जिद्द, हठ, व्रजविलासे यथा (देखत रही खिलौना चन्दा, आरि न कीजिय बालगोविन्दा)।
आरण्य०, अरण्य० } ना० पु० जंगल, वन, पुस्तकविशेष।
आरिष्ट०, अरिष्ट० } गु० कठिन, दुःखद, बुरा।
आरुक० ना० पु० आडूका फल वा वृक्ष।
आरुष्क० ना० पु० भिलावांवृक्ष।
आरूढ़० ना० पु० सवार, गु० जो चढ़ाहोवे।
आरे० ना० पु० आराका बहुवचन।
आरोग्य० ना० पु० क्षेम, कुशल, नीरोग।

आरोपित० गु० कल्पना कियागया, बनाया गया, सौंपा गया।

आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट।

आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढ़ना सीढ़ी,
आरोहण० ना० पु० } जीना।

आर्त्त० }
आरत० } गु० पीड़ित, दुःखित, व्याकुल।

आर्द्र० गु० गीला, सीला।

आर्द्रा० ना० स्त्री० छठा नक्षत्र।

आर्य्य० गु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ।

आर्य्यावर्त्त० ना० पु० वह पवित्रदेश जो पूर्व समुद्र तटसे पश्चिम सिन्धु तट तक और हिमालय से विन्ध्याचल तक है।

आर्सी० ना० स्त्री० भूषणविशेष जो स्त्रियां अंगूठे में पहिनती हैं, दर्पण।

आल० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष, पीला, हरताल।

आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद।

आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब।

आलय० ना० पु० घर, मकान।

आलबाल० ना० पु० थाला, थांवला।

आलस० ना० पु० ढील, सुस्ती, शिथिलता।

आलसी० गु० ढीला, सुस्त, शिथिल।

आलस्य० ना० पु० आलस।

आला० ना० गु० आरा, ताक, ताख जिसमें चिराग आदि रखते हैं।

आलान० ना० पु० खूंटा जिसमें हाथी बांधा जाता है बेड़ी, जंजीर।

आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप।

आलि० ना० स्त्री० सखी, पंक्ति।

आलिंगन० ना० पु० परस्पर गलेलगाना।

आलिंगित० गु० प्रसंगित, भोगीहुई।

आली० ना० स्त्री० सखी।

आलु० }
आलू० } ना० पु० विलायती कन्दविशेष।

आलोक० ना० पु० ज्योति, दृष्टि, चापलोसी।

आलोकन० ना० पु० दृष्टि देकर देखना।

आवझ० ना० पु० बाजा विशेष।

आवरण० ना० पु० ढाल, आच्छादन, विरूप, भँवर, घेरा।

आवर्त्त० ना० पु० भँवर जो पानीमें होता है।

आवर्दा० ना० स्त्री० आयुर्दाय, उमर।

आवनो० अ० क्रि० आना।

आवभक्ति० }
आवभगत० } ना० स्त्री० मान, सन्मान, आदर।
आवभगति० }

आवलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति।

आवश्यक० गु० निश्चय कर्त्तव्य, ज़रूरीकाम।

आवश्यकता० ना० स्त्री० जरूरत।

आवा० ना० पु० ब्रह्मा देशकी राजधानी। कुम्हार जिसमें बर्त्तन पकाताहै, अ० क्रि० आया।

आवाई० ना० स्त्री० चर्चा, समाचार।

आवागमन० }
आवागवन० } ना० पु० आनाजाना।

आवाजाई० ना० स्त्री० पीछेपड़ना, आना जाना।

आवाती० ना० स्त्री० अवाई।

आवांधा० ना० स्त्री० भूमिखण्ड।

आवास० ना० पु० घर।

आवाहन० ना० पु० सादर बुलाना, बुलाना।

आविर्भाव० ना० पु० प्रकटहोना।

आविर्भूत० गु० प्रकटवस्तु।

आविष्ट० गु० जो भूतादिक करके भरतहैं।

आवृत० गु० घिराहुआ, वेष्टित।

आवृत्ति० ना० स्त्री० उद्धरिणी, पढ़ाहुआ, दुहराना, ढब।

आसक्त० गु० मोहित, गटपट, लीन और अतिरत।

आशक्ति॰ ना॰ पु॰ चाह, प्यार।
आशंका॰ ना॰ स्त्री॰ भय, डर, सन्देह, शक।
आशय॰ ना॰ पु॰ अभिप्राय, आश्रय, मतलब, मज़मून।
आशर॰ ना॰ पु॰ निशाचर, दैत्य।
आशा॰ ना॰ स्त्री॰ आसरा, भरोसा।
आशावन्त॰ गु॰ आसरिका, उम्मेदवार।
आशावसन॰ गु॰ नंगा, तृष्णारहित।
आशावान्॰ गु॰ आशावन्त।
आशिष॰ ना॰ पु॰ }
आशिषा॰ स्त्री॰ } दुआ, भला मनाना, अच्छा चाहना।
आशीर्वाद॰ पु॰ }
आश्चर्य्य॰ गु॰ अद्भुत, ना॰ पु॰ अचम्भा, विस्मय।
आश्चर्य्यवन्त॰ गु॰ तअज्जुब में, अचम्भित।
आश्नक॰ ना॰ पु॰ रुधिर, लोहू, खून।
आश्रम॰ ना॰ पु॰ हिन्दूलोगों में चारि आश्रम अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ संन्यासी ४ और ऋषियों के रहनेका स्थान, घर।
आश्रमी॰ गु॰ आश्रम धरनेवाला।
आश्रय॰ ना॰ पु॰ आसरा, समीपता, गु॰ अधीन, शरण, छल।
आश्रित॰ गु॰ आधीन, काबू, परवश।
आश्वास॰ ना॰ पु॰ भरोसा, समाप्ति, अध्याय।
आश्विन॰ ना॰ पु॰ कुवार सातवां मास।
आषत॰ ना॰ पु॰ अक्षत चावलादि।
आषर॰ ना॰ पु॰ अक्षर, वर्ण।
आषाढ़॰ ना॰ पु॰ अषाढ़ चौथा महीना।
आस॰ ना॰ स्त्री॰ आशा, भरोसा।
आशंसार्थ॰ गु॰ जिससे इच्छा का बोध होता है।
आसक्त॰ गु॰ आशक्त, फरेफतह।
आसक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ आशक्ति, प्रीति, प्रेम।
आसन॰ ना॰ पु॰ बिस्तर, सेज, योगासन, बैठने के लिये कुशा वा काष्ठ वा ऊन की वस्तु, बैठक, जांघ के भीतरी ओर।
आसनगत॰ गु॰ बैठा हुआ।
आसनी॰ ना॰ स्त्री॰ ऊन वस्त्रादि बिछौना।
आसन्न॰ गु॰ निकट, पास।
आसन्नकोण॰ ना॰ पु॰ पास का कोना।
आसन्नभूत॰ ना॰ पु॰ निकटही व्यतीतभया।
आसपास॰ गु॰ लगभग।
आसमुद्र॰ ना॰ पु॰ समुद्रपर्यन्त।
आसय॰ ना पु॰ आशय।
आसर॰ ना॰ पु॰ आशर, दैत्य।
आसव॰ ना॰ स्त्री॰ मदिराविशेष, शराब।
आसा॰ ना॰ स्त्री॰ आशा।
आसाम॰ ना॰ पु॰ देशविशेष।
आसावरी॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनीविशेष, कपोतविशेष, कपड़ाविशेष।
आसिख॰ ना॰ स्त्री॰ आशिष्।
आसीन॰ गु॰ बैठाहुआ।
आसीविष॰ ना॰ पु॰ सांप।
आसीस ना॰ स्त्री॰ आशीर्वाद।
आसु॰ गु॰ शीघ्र, शिताबी।
आसुग॰ गु॰ बाण, वायु, सूर्य्य।
आस्तोष॰ गु॰ शीघ्र प्रसन्न होनेवाला।
आसुर॰ ना॰ पु॰ असुर वा कोई असुर।
आसुरी॰ ना॰ स्त्री॰ राक्षसीमाया, निशाचरी।
आस्कत॰ ना॰ स्त्री॰ आलस्य।
आस्कती॰ गु॰ आलसी।
आस्ति॰ ना॰ पु॰ वेदधर्मोंकाफल, साधुता, धर्मशक्ति, हस्ती।
आस्तिक॰ ना॰ पु॰ वेद के धर्मों के फल का विश्वासी, साधु।
आस्था॰ ना॰ स्त्री॰ टेक, सभा, परिश्रम।
आस्पद॰ ना॰ पु॰ स्थान, पद, खिताब।
आस्पोत॰ ना॰ पु॰ कचनारवृक्ष।
आस्रप॰ ना॰ पु॰ असुर, दैत्य।
आस्वाद॰ ना॰ पु॰ रसका अनुभव।
आह॰ ना॰ स्त्री॰ साहस, वीरता, धीरज।
आहट॰ ना॰ पु॰ घेरा, शब्द, आवाज़।

आहा० अव्य० खेद का सूचक शब्द।
आहार० ना० पु० भोजन, खाना।
आहारी० गु० भोजन करनेवाला, भोजन के योग्य।
आहि० अव्य० है।
आहुत० / आहुति० } ना० स्त्री० देवताओं के लिये होमने के लिये जो वस्तु घृतादि।
आहवनीय० ना० पु० अग्निविशेष।
आहुक० ना० पु० उग्रसेन राजा का पिता।
आहुतदान० ना० पु० ब्राह्मण को बुलाकर घर पर दान देना इस को मध्यम दान कहते हैं।
आहूनिक० ना० पु० प्रतिदिन धर्मका कार्य।
आहूनिकगति० ना० स्त्री० एक दिनकी चाल, प्रति एक ग्रह का नित्यभचक्र।
आह्ला० ना० पु० जलार्णव।
आह्लाद० ना० पु० हर्ष, आनंद।
आह्लादित० गु० हर्षित, आनन्दित।
आह्वान० ना० पु० आवाहन, पुकारना।
आक्षेप० ना० पु० दुर्वचन, निन्दा।
आक्षोडन० ना० पु० आखेट।
आत्रेय० ना० पु० अत्रि का पुत्र।
आत्रेयी० ना० स्त्री० नदीविशेष जो बंगाले में है।
आज्ञा० ना० स्त्री० आदेश, हुक्म।
आज्ञाकार० / आज्ञाकारी० } गु० जो आज्ञापर चले, सेवक, ताबेदार।
आज्ञाद० ना० पु० जो आज्ञा देवे, हाकिम।
आज्ञानुयायी० गु० आज्ञावत् बर्तनेहारा।
आज्ञानुसार० ना० पु० हुक्म के बमूजिब।
आज्ञानुवर्त्ति० गु० ताबेदार, सेवक।
आज्ञाभिलाषी० गु० आज्ञाचाहनेवाला।
आज्ञार्थ० गु० आज्ञा का बोध जिससे होता है।
आज्ञालंघन० ना० पु० उदूलहुक्मी, हुक्म न मानना।

(इ)

इक० गु० एक १।
इकटक० ना० पु० एक ताक से देखना।
इकट्ठा० / इकट्ठी० / इकठौरा० / इकठौरी० } गु० जो एक जगह में जमाहोवे।
इकसार० गु० सरीखा, सदृश, समान।
इकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें इकार है।
इक्का० गु० अकेला, अद्वितीय, एका।
इंगलण्ड० ना० पु० देशविदेश, जिसमें लण्डन नगर प्रसिद्ध है।
इंगलण्डीय० गु० जो इंगलण्ड का है।
इंगितज्ञ० पु० इच्छा समान चलनेवाला।
इंगित० ना० पु० सैन, संकेत, आगमन, खोज।
इच्छा० ना० स्त्री० मनोरथ, चाह।
इच्छाचारी० गु० मनोवत्गामी, बन्धरहित।
इच्छित० गु० इच्छा समाना, चाहा हुआ।
इच्छितफल० ना० पु० चाहाहुआ फल वा अर्थ।
इच्छानुसार० ना० पु० इच्छावत्, चाहना।
इछन० ना० पु० नेत्र, दृष्टि।
इडा० ना० स्त्री० धरती, देवी, बाईं श्वास।
इत० / इतै० } अव्य०, यहां, इधर।
इतना० गु० यह शब्द परिमाण वा अवधि का ज्ञापक है।
इतनी० ना० स्त्री० सैन्य, गु० इस प्रमाण।
इतर० गु० अन्य, रहित, नीच।
इतरलोग० ना० पु० छोटीजाति, लोकान्तर।
इति० अव्य० समाप्ति का बोधक है, अधिक, इसप्रकार।
इत्थाल० ना० पु० मिलान, सामना, मुक़ाबिलह।
इत्यादि० ना० पु० आदिक, वग़ैरह।
इतिहास० ना० स्त्री० वृत्तांत, प्राचीन कथा, पुराणादि की वार्त्ता, तारीख़।

इतो०
इतौ० } गु० इतना।

इदम्० सर्व० यह।

इदानीम्० अव्य० यहां, इसजगह।

इधर० अव्य० यहां, इस ठौर।

इन्दारा० ना० पु० बड़ा पका कूआं।

इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।

इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौधा विशेष।

इन्दु० ना० पु० चंद्रमा।

इन्दुर० ना० पु० उंदुर, चूहा।

इन्दौर० ना० पु० नगरविशेष।

इन्द्र० ना० पु० देवताओंका राजा, प्रधान।

इन्द्रगोप ना० पु० बीरबहूटी।

इन्द्रजित्० ना० पु० मेघनाद, गु० जो इंद्रको जीते।

इन्द्रपुरी० ना० स्त्री० इंद्रका नगर।

इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिल्लीनगर।

इन्द्रबधू०
इन्द्रबधूटी० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा, लाल रंगका वर्षा में होताहै, इंद्र की पत्नी।

इन्द्रयव० ना० पु० कुटज का फल, इंद्रजौ, औषधिविशेष।

इन्द्रवारु०ना०पु०
इन्द्रवारुणी०स्त्री०
इन्द्रविषादिनी० } औषधिविशेष।

इन्द्राणी०
इन्द्रायणी० } ना० स्त्री० शची, इंद्र की पत्नी।

इन्द्रायन० ना० पु० वृक्षविशेष वा उसकाफल जो अतिसुंदर और कड़वा होता है।

इन्द्रासन० ना० पु० इंद्रका सिंहासन।

इन्द्रिय०
इन्द्री० } ना० स्त्री० जिनसे रूप रसादिका ज्ञान होता है वह दोप्रकार की दश है पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा, लिंग, मुख, और पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।

इन्धन० ना०पु० जलाने की लकड़ी आदि ईंधन।

इभ० ना० पु० हाथी।

इभपालक० गु० महावत, फीलवान।

इभ्य० ना० पु० स्वामी।

इमम्० सर्व० यह, गु० ऐसा, इसप्रकार।

इमि० गु० इसप्रकार।

इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती।

इलायची० ना० स्त्री० जलविशेष, एला।

इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक।

इल्ला० ना० पु० मसा।

इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे।

इष्ट० गु० पूजित, प्यारा, वांछित, ना० पु० देवता, मनुष्य चहीता, वस्तुचहीती।

इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवकी सेवाकरे वा ध्यावे।

इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारी।

इष्टित० गु० विचारित, जो माना गया।

इष्वासन० ना० पु० धनुष्, कमठा, कमान।

इषु० ना० पु० बाण, तीर, आश्विन मास, और गणित में ५।

इषुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कमठा।

इषुधीपति० ना० पु० धनुर्द्धर अर्जुनादि।

इस्त्री० ना० पु० लोहे का यंत्र जिससे धोबी कपड़े सँभालता है।

इस्पात० ना० पु० पक्का लोहा।

इह० सर्व० यह।

इहलोक० ना० पु० मनुष्यलोक, यह लोक।

इक्षु० ना० ऊख, गांडा, गन्ना।

इक्षुगंधा०
इक्षुवल्ली० } ना० स्त्री० विदारीकन्द।

इक्षुसार० ना० पु० रस, मिठाई, गुड़।

इक्ष्वाकु० ना० पु० सूर्यवंशियों में प्रथमराजा।

[ई]

ईंट० ना० स्त्री० माटी की वस्तु जिससे भीति उठाते हैं।

ईंडुवा॰ ना॰ पु॰ शिरपर बोझ रखनेका टेकन जो कपड़ा वा सन मूंजआदिका होताहै।

ईकारान्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें ईकार है।

ईख॰ ना॰ स्त्री॰ ऊख, उखारी, इक्षु।

ईठ॰ गु॰ इष्ट, प्रिय, मित्र, ना॰ पु॰ गगन, देवता।

ईठि॰ ना॰ स्त्री॰ दोस्ती, प्रीति, सखी।

ईढि॰ ना॰ स्त्री॰ अपनेको अधिकजानना, हठ।

ईति॰ ना॰ स्त्री॰ बाधा, दुःख।

ईद॰ ना॰ स्त्री॰ मुसल्मानों और यहूदियों में एक पर्व्वहोता है रमज़ान के पीछे, अरबी शब्द है।

ईदृश॰ गु॰ ऐसा।

ईर्षा॰ ना॰ स्त्री॰ हिसक, द्वेष, डाह, हसद।

ईश॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, प्रभु,स्वामीविशेष, शिवजी, विष्णु, नारायण।

ईशता॰ ना॰ स्त्री॰ प्रधानता, महत्त्व, माया, सिद्धिविशेष।

ईश्वर॰ ना॰ पु॰ प्रभु, स्वामीविशेष, परमात्मा, शिवजी, विष्णु, नारायण।

ईश्वरता॰ ना॰ स्त्री॰ }
ईश्वरत्व॰ ना॰ पु॰ } मायायोगमाया, कुदरत।

ईश्वराराधन॰ ना॰ पु॰ परमेश्वरका भजन।

ईशान॰ ना॰ पु॰ सदाशिव, ईशानकोण।

ईशानकोण॰ ना॰ पु॰ पूर्व उत्तर का कोना।

ईषत्॰ }
ईषद्॰ } गु॰ थोड़ा२, अल्प।

ईस॰ ना॰ पु॰ ईश, मालिक।

ईह॰ }
ईहा॰ } ना॰ स्त्री॰ चेष्टा, इच्छा, उत्यन।

ईक्षण॰ ना॰ पु॰ चक्षु, आंखि, दृष्टि।

(उ)

उचाई॰ ना॰ स्त्री॰ }
उचान॰ ना॰ पु॰ }
उचाव॰ ना॰ पु॰ }
उचाहट॰ स्त्री॰ } उचापा, उन्नति, बलंदी।

उचाना॰ स॰ क्रि॰ ऊंचाकरना, उठाना।

उडेलना॰ स॰ क्रि॰ धक्कादेकर गिराना, डालना।

उकठा॰ गु॰ सूखाकाष्ठ वा वृक्ष।

उकत॰ ना॰ स्त्री॰ उक्ति, कहन।

उकताना॰ अ॰ क्रि॰ घबराना, थकना, कुढ़ना।

उकताऊ॰ ना॰ पु॰ उपजाऊ पक्षी।

उकतारना॰ स॰ क्रि॰ सँभालना, पक्ष करना।

उकसना॰ अ॰ क्रि॰ उठना, ऊपरको चढ़ना वा बढ़ना।

उकसाना॰ }
उकासना॰ } स॰ क्रि॰ उठाना, चढ़ाना।

उक्त॰ गु॰ कथित, कहाहुआ।

उक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ कथन, भाषा, चतुराई, कहना।

उखड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ उजड़ना, निजस्थानसे हटना।

उखड़हा॰ गु॰ उखड़ाभया।

उखड़ना॰ }
उखाड़ना॰ } स॰ क्रि॰ उजाड़ना, निजस्थान से हिलाना।

उगना॰ अ॰ क्रि॰ उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना।

उगलना॰ स॰ क्रि॰ मुखमें कोई वस्तु डाल कर फिर निकालना।

उगाल॰ ना॰ पु॰ जो चबाय के मुखमें से फेंका।

उगाहना॰ स॰ क्रि॰ जमअ करना, तहसीलना।

उगाही॰ ना॰ स्त्री॰ व्याजलेना वा वह रुपया जो महाजन आठके नव वा नवके दश वा दशके ग्यारह प्रतिमास एक २ रुपया करके लेता है।

उग्र॰ गु॰ क्रोधी, कठोर, भयंकर, तेज, ना॰ पु॰ श्रीशंकर जी।

उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, बच और लहसुन, गु० जिसकी गन्ध कठिन है।

उग्रसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता।

उघटना० स० क्रि० किसी पर उपकार करके कहना वा बात मारना, ताना देना।

उघड़ना० अ० क्रि० नंगा होना, खुलना।

उघरे० गु० खुले, प्रकटे।

उघाड़ना० } **उघारना०** } स० क्रि० नंगाकरना, खोलना।

उघारी० गु० नंगी, खुली।

उचकना० अ० क्रि० कूदिके उठना, उछलना।

उचकाना० स० क्रि० ऊपर को उठाना वा चढ़ाना।

उचक्का० गु० चोर, ठठाईगीर।

उचटना० अ० क्रि० अलग २ होना, बिछुड़ना, न लगना, उलटना, फिसलना।

उचरंग० ना० पु० पतंगा।

उचरना० अ० क्रि० बात निकलना, उखड़ना।

उचाट० गु० उदासी, जी न लगना।

उचाटना० स० क्रि० उदासकरना, उखाड़ना।

उचारना० स० क्रि० उच्चारणकरना, निकालना।

उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब।

उचिलना० अ० क्रि० फटना, छुटिजाना।

उचेलना० स० क्रि० मिलीहुई वस्तु को अलग२ करना, उधेड़ना।

उच्च० गु० ऊंचा।

उच्चाटन० ना० पु० जी भड़कना, जीका न लगना।

उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाखाना।

उच्चारण० ना० पु० शब्दकाकहना वा निकलना।

उच्चारना० स० क्रि० उचारना, बात कहना।

उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा।

उच्छिन्न० गु० निर्मूल, उखड़ा, खराब।

उच्छ्रित० गु० उछलता भया।

उच्छिष्ट० ना० पु० जूठनि वा जूठा, भोजन अवशेष।

उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, आशा।

उछंग० ना० स्त्री० गोद, कनियां।

उछरना० } **उछलना०** } अ० क्रि० कूदना, उठना।

उछालना० स० क्रि० कुदाना, ऊपर को फेंकना।

उछाह० ना० स्त्री० आनन्द, खुशी।

उजड़ना० अ० क्रि० नाश होना, मिटना, भगना, वीरान होना।

उजला० गु० उज्ज्वल, सफ़ेद, निर्मल।

उजागर० गु० यशवन्त, चटकीला, सुन्दर।

उजाड़० गु० सूना, वनखण्ड, वीरान।

उजाड़ना० स० क्रि० सूनाकरना, नाशकरना, वीरान करना।

उजालना० स० क्रि० उजला करना।

उजाला० ना० पु० ज्योति, तेज, प्रकाश।

उजारी० ना० स्त्री० चांदनी।

उजास० ना० पु० उजेला।

उज्जल० } **उज्ज्वल०** } गु० निर्मल, चोखा, चमकीला, साफ़, सुन्दर।

उझकति० गु० झांकति, ताकत।

उझकना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० निझाना।

उटंगन० ना० स्त्री० पौधा विशेष, और नदी जो ग्वालियर के पास है।

उठंगन० ना० पु० टेकन।

उठना० अ० क्रि० खड़ाहोना।

उठबैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधनविशेष।

उठवैया० ना० पु० उठानेवाला।

उठान० ना० पु० उत्थान, दिखाई।

उठाना० स० क्रि० खड़ाकरना, ऊपर लेजाना।

उड़ना० अ० क्रि० भागना।

उड़ान० ना० स्त्री० उड़ने की चाल।

उड़ाना० स० क्रि० उड़ादेना, भगादेना।

उड़ाऊ० ना० पु० लुटेरा, बहुत खर्च करवैया।

उडु० ना० पु० पक्षी, नक्षत्र, मेघ, मद्य।

उडुगण॰ ना॰ पु॰ तारागण।

उडुप॰ ना॰ पु॰ घरनई, बेड़ा।

उड़िया॰ ना॰ स्त्री॰ उड़ैसादेश की भाषा।

उड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ नाव।

उड़ैसा॰ ना॰ पु॰ देशविशेष जहां श्रीजगन्नाथ पुरुषोत्तम विराजमान हैं।

उड्डान॰ ना॰ स्त्री॰ उड़ान, संस्कृत में नपुंसक।

उढ़ना॰ स॰ क्रि॰ ओढ़ना, ना॰ पु॰ ओढ़ने का वस्त्र।

उढ़ाना॰ स॰ क्रि॰ ओढ़ना, ढांपना।

उत॰ अव्य॰ ऊपर, उधर, जिस शब्द के प्रथम में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया जाता है।

उतंग॰ } **उत्तुंग॰** } गु॰ ऊंचा, रामायणे यथा (अति उतंग जलनिधि चहुंपासा)।

उतरना॰ अ॰ क्रि॰ नीचेआना।

उतला॰ गु॰ उतावला।

उताना॰ गु॰ उलटा, ऊपर को पावँकिये।

उतार॰ ना॰ पु॰ नीचेआना, नीचला।

उतारना॰ स॰ क्रि॰ नीचेलाना, दूरि करना।

उतारा॰ ना॰ पु॰ टाल्ह, अपमान, छुड़ौती, पारजाना।

उतावल॰ ना॰ स्त्री॰ शीघ्रता, जल्दी।

उतावला॰ गु॰ वेगी, शीघ्र, फुर्तीला।

उतावली॰ ना॰ स्त्री॰ शीघ्रता, फुर्ती, गु॰ फुर्तीली।

उताहिल॰ गु॰ शीघ्र, जल्द।

उत्कट॰ गु॰ बरजस्तः उसी समय, तेजअधिक।

उत्कण्ठा॰ ना॰ स्त्री॰ अभिलाषा, चाहना।

उत्कर्ष॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ाई।

उत्कल॰ ना॰ पु॰ उड़ैसा देश, उड़ैसा के बासी।

उत्क्रम॰ ना॰ पु॰ ऊपर चढ़ना।

उत्कृष्ट॰ गु॰ अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

उत्तमगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ मालती।

उत्तमांग॰ ना॰ पु॰ शिर, शीश।

उत्तमाशा॰ ना॰ स्त्री॰ आफ्रिका के दक्षिण की अन्तरीप, केपगुडहोप।

उत्तर॰ ना॰ पु॰ प्रश्न का बोधक, जवाब, दक्षिण के सन्मुख की दिशा, राजाविराट् का पुत्र।

उत्तरकेन्द्र॰ ना॰ पु॰ जिस को भास्कराचार्य शास्त्री ने निज प्रभृति में सुमेरु लिखा है, यह स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है।

उत्तरकोशल॰ } **उत्तरकोशला॰** } ना॰ पु॰ अवधदेश।

उत्तरखण्ड॰ ना॰ पु॰ उत्तर का देश।

उत्तरा॰ ना॰ स्त्री॰ राजाविराट् की कन्या जो अभिमन्यु को विवाही थी।

उत्तराधिकारी॰ ना॰ पु॰ मरने के पीछे जो धनाधिकारी।

उत्तराफाल्गुनी॰ ना॰ स्त्री॰ बारहवांनक्षत्र।

उत्तराभाद्रपद॰ ना॰ पु॰ छब्बीसवां नक्षत्र।

उत्तरायण॰ ना॰ पु॰ माघादि छः मास।

उत्तरार्द्ध॰ गु॰ पिछिला आधा।

उत्तराषाढ़॰ ना॰ स्त्री॰ इक्कीसवां नक्षत्र।

उत्तराहा॰ गु॰ जो उत्तर दिशा का है।

उत्तरी॰ गु॰ उत्तरका।

उत्तरीय॰ ना॰ स्त्री॰ ओढ़नी, रामचन्द्रिकायां यथा (पदपद्म की शुभ घूंघरी, मणि, नीलहाटक सों जरी, युत उत्तरीय विचारिकै, भुवडारि दी पग टारिकै) गु॰ उत्तर देश का पदार्थ वा मनुष्यादि।

उत्तरोत्तर॰ अव्य॰ आगे आगे।

उत्तानपत्र॰ ना॰ पु॰ दोनों अरण्ड।

उत्तानपाद॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष, ध्रुवका पिता।

उत्ताल॰ गु॰ शीघ्र, जल्दी, वेग।

उत्तीर्ण॰ गु॰ पार पहुँचा, निर्भुक्त।

उत्तू॰ ना॰ पु॰ चुनाति, चुनाई वस्त्रादि की।

उत्थान॰ ना॰ पु॰ उठान, उद्योग।

उत्थापन० ना० पु० उठावना, न थपना।
उत्थित० गु० उठा हुआ।
उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश।
उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा।
उत्पल० ना० पु० कमल, कोई।
उत्पाटन० ना० पु० जड़समेत उखाड़ना।
उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव।
उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदाकरना।
उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० ढील, सदृशता।
उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्यका त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा।
उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अधीरज।
उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द।
उथपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना।
उथपना० स० क्रि० उठादेना, उखाड़ डालना।
उथपित० गु० उठाया गया।
उथलना० अ० क्रि० उलटना।
उथलपुथल० गु० उलट पुलट।
उथला० गु० छिछला, थोड़ा गहिरा।
उदक० ना० पु० जल, पानी।
उदघाटी० ना० स्त्री० उदयता, उदयाचलकी घाटी।
उदधि० ना० पु० समुद्र।
उदधिनन्द० ना० पु० चन्द्रमा।
उदनपाक्य० ना० पु० पियावासा, पौधा।
उदन्वान्० ना० पु० समुद्र, सागर।
उदमाते० गु० मत्त, मस्त, मखपूर।
उदय० ना० पु० प्रकटना, रोशन, ज्योति।
उदयगिरि० } उदयाचल० } ना० पु० पर्वत विशेष जहां सूर्योदय होता है।
उदयास्त० ना० पु० सूर्योदय से सूर्यास्ततक, उदयाचलसे अस्ताचलतक।
उदर० ना० पु० पेट।
उदरनि० ना० पु० पेटका बहु वचन भाषा में।
उदरवृद्धि० ना० पु० जलन्धर रोग विशेष।
उदरे० गु० फटे।
उदात्त० ना० पु० ऊंचा स्वर।
उदान० ना० पु० पंच प्राणमेंसे एक।
उदार० गु० पु० दाता, सखी।
उदारता० ना० स्त्री० दातापन, दातव्यता।
उदास० ना० पु० एकान्त, गु० निराला, निर्मोह, दुःखसुखसमानज्ञाता, मनमलिन।
उदासी० ना० पु० एकान्ती, ना० स्त्री० मलिनता, गु० मनमलिन, एक प्रकार के सन्तोंका का धर्म यथा नानकपन्थी, जो मनुष्य शत्रुमित्र रहित संसार में विचरै।
उदासीन० गु० जिसका कुल शील नहीं जाना। अर्थात् पाहुन, समानवर्ती, गृहस्थाश्रमरहित।
उदाहरण० ना० पु० दृष्टान्त, मिसाल।
उदित० आविर्भूत, प्रकाशित, रोशन।
उदीची० ना० स्त्री० उत्तर दिशा।
उदीच्य० ना० पु० ऐरावती नदी के उत्तर और पश्चिम का देश।
उदुम्बर० ना० पु० गूलरवृक्ष, तांबाधातु।
उदूखल० ना० पु० गूगल।
उद्गार० ना० पु० डकार, वमन, छर्दि।
उद्गारवाची० गु० हर्ष दुःखादि भाव बताने हारा।
उद्घाटन० ना० पु० कूप से पानी निकालने के लिये डोल रस्सी, चरसा, खुलैया।
उद्दाल० ना० पु० कचनार।
उद्दालक० ना० पु० एकमुनिका नाम है।
उद्दिष्टलोहित० ना० पु० लालचन्दन।
उद्दीप्त० गु० प्रज्वलित, अतिप्रकाशित।
उद्देश० } उद्देश्य० } ना० पु० अन्वेषण, प्रीतिकी कामना निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहाजावे।
उद्धत० गु० कुचाल, अभिमानी, ना० पु० राजाकामल्ल।
उद्धार० ना० पु० अऋण, त्राण, रक्षा, छुट्टी।

उद्धारण० ना० पु० छोड़ना, छूटना।
उद्धारना० स० क्रि० छुड़ाना, प्राण देना।
उद्भव० ना० पु० जन्म, पैदायश।

उद्भिज० } ना० पु० वृक्षतृणादि जो पृथ्वी पर
उद्भिद० } उगते हैं।

उद्यत० ना० पु० गु० परिश्रमी, तैयार।
उद्यम० ना० पु० उद्योग, उपाय, रोज़गार।
उद्यान० ना० पु० राजाका उपवन, चाल निमित्त।
उद्योग० ना० पु० उद्यम, उत्थान।
उद्योत० ना० पु० प्रकाश, चमक।
उद्वाह० ना० पु० विवाह।
उद्विग्न० गु० अधीरज, व्याकुल।
उद्योग० ना० पु० व्याकुलता, घबराहट, गड़बड़, दुःख।

उद्बोध० ना० पु० स्मरण।
उधर० अव्य० वहां।
उधार० ना० पु० करज़।
उधारन० ना० पु० छुड़ाने हारा।
उधारना० स० क्रि० छुड़ाना, मुक्तिदेना।
उधेड़ना० स० क्रि० सुलझाना, खोलना।
उनचास० गु० चालीस और नौ ४९।
उनतालीस० गु० तीस और नौ ३९।
उनतीस० गु० बीस और नौ २९।
उनये० गु० घटा, दबिआये।
उनसठ० गु० पचास और नौ ५९।
उनासी० गु० सत्तर और नौ ७९।
उनींदे० गु० नींदभरे।
उनीस० गु० दश और नौ १९।
उन्दुर० ना० पु० चूहा, मूस।
उन्नत० गु० ऊंचा, बलन्द।
उन्नति० ना० स्त्री० उंचाई, बढ़ती।

उन्मत्त० } गु० मतवाला, विक्षिप्त, सिड़ी और
उन्मद० } अष्टभैरव में एक उन्मत्तनामी है।

उन्माद० ना० पु० चित्तभ्रम, सिड़पन।

उन्मादन० ना० पु० रोगविशेष जिस में चित्त भ्रम होकर सिड़पन होजाता है।
उन्मुख० ना० पु० ऊर्ध्व मुख, ऊपर देखना।
उन्मेष० ना० पु० पलक, झपक।
उन्हार० ना० स्त्री० ढाल, गु० रूप, समान, सदृश।
उप० अव्य० समीप, यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी अधिकाई कभी समीपता कभी न्यूनता आदिक होजाता है।

उपकण्ठ० ना० पु० किनारा, तट।
उपकरण० ना० पु० सामग्री, सामान।
उपकानन० ना० पु० कृत्रिमवन, बाग़।
उपकार० ना० पु० कृपा, सहायता, अहसान।
उपकारी० गु० कृपावन्त, सहायक, मुमिद, लाभयुत, फायदःमन्द।

उपकालिका० } ना० स्त्री० कलौंजी।
उपकुंचिका० }

उपक्रम० ना० पु० प्रारम्भ, धोखा।
उपगति० गु० जिसवस्तु के लिये वाचादिया।
उपग्रह० ना० पु० बंधुआ, कृपा, सहायता, ग्रहसम्बन्धी तारा।
उपचार० ना० पु० उपाय, सेवा, वैद्यकाई, व्यवहार, घूस।
उपज्ञ० ना० स्त्री० जो तत्काल में कहाजावे अथवा पायाजावे।
उपजना० अ० क्रि० उगना, बढ़ना, जन्मना।
उपजा० गु० जन्मा, उगा, पैद हुआ।
उपजाऊ० गु० उपजनेहारा।
उपजाना० स० क्रि० उत्पन्नकरना, सिरजना।
उपजित० गु० जो उत्पन्न भया, जन्मित।
उपजीविका० ना० स्त्री० जीविका, वृत्ति।
उपड़ना० अ० क्रि० उखड़ना।
उतपात० ना० पु० रोग, फुर्त्ती, ऊष्मता, पीड़ा।
उपदंश० ना० पु० रवाद, सुनाक।

उपदा० ना० स्त्री० भेंट।
उपदेश० ना० पु० शिक्षा, मन्त्र, दान।
उपदेशक०
उपदेशी० } गु० जो उपदेश देवे, गुरु।
उपद्रव० ना० पु० उत्पात, अन्याय और विग्रह, बखेड़ा।
उपद्रवी० गु० बखेड़िया, उत्पाती।
उपद्वीप० ना० पु० द्वीप समीप, छोटाटापू।
उपधान० ना० स्त्री० तकिया, रजाई।
उपधि० गु० साथी राहका, धोखा।
उपनन्द० ना० पु० नंदकी सन्तान वा उनके सम्बन्धी।
उपनयन० ना० पु० ब्राह्मणादि तीन वर्णों का यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ धारणके हेतु संस्कार।
उपनाम० ना० पु० पदवी, खिताब वा एकही मनुष्य का द्वितीयनाम अथवा कुटुम्बीनाम यथा—लाला, साहु, तिवारी।
उपनिषद्० ना० स्त्री० वेदका रहस्यभाग।
उपनेत्र० ना० पु० चश्मह, ऐनक।
उपपति० ना० पु० जार, द्वितीय कन्त स्त्रीका।
उपपत्ति० ना० स्त्री० मुख्यता, सबूत।
उपपातक० ना० पु० महापाप, यथा गोवधादि।
उपमा० ना० स्त्री० समानता, दृष्टान्त, नजीर।
उपमान० ना० पु० सादृश्य, जिससे उपमा दीजावे यथा कमलनयन यहां कमल उपनाम और नयन उपमेय है।
उपमेय० ना० पु० जिसको उपमादीजाती है।
उपयुक्त० गु० योग्य।
उपयोगी० गु० अनुकूल, लाभकारी, मुफीद।
उपराग० ना० पु० चन्द्रमा सूर्य्य का ग्रहण वा विषयभोग।
उपराजा० ना० पु० युवराज, राजा का नायब।
उपरान्त० अव्य० पीछे, पश्चात्।
उपराम० ना० पु० संसारी सुख की निवृत्ति, वैराग्य, ऊपरी।
उपराला० ना० पु० सहायता, मदद, अधिक।
उपरि० अव्य० ऊपर।
उपरोध० ना० पु० संकोच, सहायता, बड़ाई, गौरव।
उपर्णा० ना० पु० अंगौछा, एकपट्टा, ओढ़नी।
उपल० ना० पु० पत्थर।
उपलक्षण० ना० पु० थोड़ा जिससे समूचा समझाजावे, गु० जिससे गुण जानाजावे।
उपला० ना० पु० कण्डा।
उपवन० ना० पु० कृत्रिम वन, आराम, बाग।
उपबर्ह०
उपबर्हण० } ना० पु० तकिया, सिरहाना।
उपवास० ना० पु० व्रत, लंघन, रोजह।
उपवीत० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ।
उपवेद० ना० पु० जो विद्या वेदों से निकली है और चारि उपवेद हैं अर्थात् आयुष्, गन्धर्व, धनुष, धर्मशास्त्र।
उपशम० ना० पु० शान्ति, समाई।
उपशास्त्र० ना० पु० विद्या जो शास्त्रसे निकली है।
उपस० ना० स्त्री० दुर्गन्धि, सड़ाहिंद।
उपसना० अ० क्रि० उकसना, सड़ना।
उपसर्ग० ना० पु० क्रिया के साथ संयुक्त जो प्र, पर, अप, सम् इत्यादि।
उपस्थ० ना० पु० स्त्री० लिंग, योनि।
उपस्थित० गु० सम्मुखागत, प्राप्त, तैयार।
उपसागर० ना० पु० छोटा समुद्र, समुद्र का भाग।
उपहार० ना० पु० भेंट, नजर, पूजा।
उपहास० ना० पु० ठट्ठा, हँसी।
उपाख्यान० ना० पु० पुराणकी कथा।
उपाटना० स० क्रि० उखाड़ना।
उपादान० ना० पु० विभेदरूप, निमित्त कारण।
उपाधि० ना० स्त्री० उपद्रव, अन्याय, समीप, प्राप्त, माया, बाधा, ना० पु० स्वामी, मालिक, धर्मकी चिन्ता, गु० छल, कपट।

उपाधी० गु० अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी।
उपाध्या० ना० पु० ब्राह्मण जातिविशेष।
उपाध्याय० ना० पु० अध्यापक, पढ़ानेहारा।
उपाना० स० क्रि० सिरजना, उत्पन्न करना, उपार्जन करना।
उपानत्० ना० पु० जूता।
उपान्त्य० ना० पु० अन्त्य अक्षर का पूर्ववर्णादि।
उपाय० ना० पु० उद्योग, यत्न, रीति, तदबीर।
उपायी० गु० उद्योगी, यत्नी।
उपार्जन० ना० पु० विद्या वा धनादिका संग्रह, कमाई, प्राप्त।
उपार्जित० गु० जो प्राप्तभया, कमाया।
उपालम्भ० ना० पु० उलाहना।
उपास० ना० पु० व्रत, उपवास।
उपासक० } उपासा० } गु० जो उपासना करे, सेवक।
उपासना० ना० स्त्री० सेवा, टहल, अनुवृत्ति देवादि विषय भावनाविशेष।
उपास्य० गु० उपासना के योग्य, आराध्य।
उपेक्षा० ना० स्त्री० धोखा, त्याग।
उफनना० } उफनाना० } अ० क्रि० उबलना, जोशखाना।
उफाल० ना० पु० कूदन, कूदनि, कूदना।
उबकना० अ० क्रि० वमनहोना, जीमलकनाकी।
उबकाई० ना० स्त्री० वमन, जीकी मलक।
उबकाई० अ० क्रि० वमनकरना, उछालकरना।
उबटन० ना० पु० वस्तु आटा वा बेसन वा सरसों जिससे देहका मैल छुड़ाते हैं।
उबटना० स० क्रि० उबटन लगाना।
उबरना० अ० क्रि० बचना।
उबरा० गु० बचा।
उबलना० अ० क्रि० खलबलाना, खौलना।
उबाल० ना० पु० खलबलाहट के पीछे उफनाना।
उबसना० अ० क्रि० सड़ना, कुगन्धि करना।
उबसाना० स० क्रि० सड़ाना।
उबारना० स० क्रि० बचाना, छुड़ाना।
उबारु० ना० पु० बचाव, छुटकारा।
उबालना० स० क्रि० पकाना, उसीजना।
उभक० ना० पु० रीछ, भालू।
उभय० सर्व० गु० दो।
उभरना० अ० क्रि० उठना, निकलना, उमड़ना।
उभार० ना० पु० उठान, फुलावट, घुमड़।
उभारना० स० क्रि० फूलना० उठाना।
उभौ० ना० पु० दोनों।
उमगा० गु० फूला, उठा।
उमगाना० स० क्रि० फुलाना, उठाना, मन बढ़ाना।
उमंग० ना० स्त्री० मगनता, धुन, तृष्णा, चाहक।
उमंगना० अ० क्रि० उमंग से आगेजाना।
उमंगी० गु० धुनी, अभिलाषी।
उमण्डना० } उमड़ना० } अ० क्रि० उभरना, घिरना।
उमरी० ना० स्त्री० गूलरवृक्ष।
उमह्ना० अ० क्रि० उमड़ना।
उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी।
उमानाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
उर० ना० पु० छाती, गोदी, हृदय।
उरग० ना० पु० सांप, सर्प।
उरगना० स० क्रि० सहना, जोगवना, रामचन्द्रिकायांयथा (आइ भरत्थ कहा धौं करें जिय भाय गुनौ जो दुख देत तौले उरगौ बातगुनौ)।
उरण० ना० स्त्री० भेंड़ी।
उरगाद० } उरगारि० } ना० पु० गरुड़, मयूर औरन्योला।
उरझना० अ० क्रि० अटकना, लगना।
उरला० गु० इधरका।
उरु० ना० स्त्री० जंघाका ऊपरीभाग, गु० बहुत।
उर्णा० ना० स्त्री० भेंड़ी।

उर्मि॰ ना॰ स्त्री॰ लहरी, बीची।
उर्द॰ ना॰ पु॰ माष, अन्नविशेष।
उर्वरा॰ ना॰ स्त्री॰ उपजाऊ धरती, खेती के योग्य।
उर्विज॰ ना॰ पु॰ जो धरती में उपजाहै,मंगल।
उर्विजा॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीजानकीजी।
उर्वशी॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्यअप्सरा, मनवसी, धुकधुकी, आभरण।
उर्वी॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।
उरमण्डन॰ ना॰ पु॰ कुच, स्तन, चूंची।
उरहन॰ ना॰ पु॰ गिल्ला, शिकायत।
उरोज॰ ना॰ पु॰ कुच, स्तन।
उलझनि॰ ना॰ स्त्री॰ फँसाव, अटकाव।
उलझना॰ अ॰ क्रि॰ फँसना, लपटना, स॰ क्रि॰ झगड़ना।
उलझाना॰ स॰ क्रि॰ फँसाना, अटकाना, भिड़ाना, लपटाना।
उलझेड़ा॰ ना॰ पु॰ उलझन, फँसाव।
उलटना॰ स॰ क्रि॰ पलटना, फेरना, अ॰ क्रि॰ औंधा होना, उलटिजाना।
उलटा॰ गु॰ औंधा, पलटा।
उलटाना॰ स॰ क्रि॰ औंधाना, पलटना।
उलटापुलटा॰ गु॰ गटपट, नीचेऊपर।
उलथना॰ अ॰ क्रि॰ लहराना।
उलथा॰ ना॰ पु॰ उल्था, तर्जुमा, रागिनीविशेष, नृत्यभेद।
उलहना॰ ना॰ पु॰ दोष, निन्दा, गिल्ला,अ॰ क्रि॰ उगना, लहलहाना।
उलाहना॰ ना॰ पु॰ गिल्ला, शिकायत।
उलूक॰ ना॰ पु॰ उल्लू, दिवान्ध, घूघूपक्षी।
उलूखल॰ ना॰ पु॰ ओखरी।
उलूपी॰ ना॰ स्त्री॰ मछली, बभ्रुवाहनकी माता।
उल्का॰ ना॰ पु॰ लूका, अग्नि वा तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल।
उल्कापात॰ ना॰ पु॰ ताराछूटना, लूकागिरना, उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य।
उल्था॰ ना॰ पु॰ उल्था, तर्जुमा, नृत्यविशेष।
उल्मुक॰ ना॰ पु॰ लूका, कोयल, जलीलकड़ी।
उल्लंघन॰ ना॰ पु॰ अन्यथा वा भंग करना वा न मानना, लांघिजाना।
उल्लाल॰ ना॰ पु॰ छन्दविशेष।
उल्लास॰ ना॰ पु॰ मेल, लेश।
उल्लू॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष, मूर्ख, अहमक़।
उल्लूपन॰ ना॰ पु॰ मूर्खता, अहमक़ी।
उशीर॰ ना॰ पु॰ तृणविशेष की जड़ जिस में गन्धि होती है खश।
उशना॰ ना॰ पु॰ शुक्राचार्य्य, स्मृतिविशेष।
उष्ट्र॰ ना॰ पु॰ ऊंट।
उष्ण॰ ना॰ पु॰ गर्म, तप, तपन, गरमी।
उष्णकटिबन्ध॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्यरेखा के उत्तर २३½ अंश और दक्षिण २३½ अंशतक।
उष्णज॰ ना॰ पु॰ वनस्पति जो पृथ्वी पर उगते हैं।
उष्णीष॰ ना॰ पु॰ पगड़ी, मुकुट।
उसन्ना॰ अ॰ क्रि॰ उबलना, पकना।
उसरना॰ अ॰ क्रि॰ टलना, पीठदेना।
उसाना॰ स॰ क्रि॰ उबालना, चुरकाना।
उसारा॰ ना॰ पु॰ ओसारा, डेवढ़ी।
उसास॰ ना॰ पु॰ श्वास, दम।
उसासी॰ ना॰ स्त्री॰ फुरसत, कल।
उसाहि॰ गु॰ कुसमय, बेमौसम।
उसीजना॰ स॰ क्रि॰ उबलना।
उसीसा॰ ना॰ पु॰ सिरहाना, तकिया।
उस्तर॰ गु॰ सैंत, बिनमोल।
उहरना॰ क्रि॰ बैठना, दबना।

(ऊ)

ऊंघ॰ ना॰ स्त्री॰ सोवान, झपकी, नींद।
ऊंघना॰ अ॰ क्रि॰ नींदआना, झपकीआना।
ऊंघाई॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंघ।
ऊंचा॰ गु॰ उच्च, बलंद।
ऊंट॰ ना॰ पु॰ पशुविशेष।

ऊटकटारा० ना० पु० भरभेंड़ा।
ऊटकटीला० ना० पु० पौधाविशेष।
ऊकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऊकार है।
ऊख० ना० स्त्री० गन्ना वा गन्नों का खेत।
ऊखल० ना० पु० बड़ी ऊखली।
ऊखाड़ी० ना० पु० गन्नों का खेत।
ऊत० ना० पु० मनुष्य जो संतानहीन मरे, विरोध, अविवाहित, अतिदुष्ट वा मूर्ख।
ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवाब।
ऊत्क्रम० गु० विपरीत क्रम, विना मिलान, बेसिलसिलः।
ऊदबिलाव० ना० पु० जलजन्तुविशेष।
ऊदा० गु० भूरा।
ऊदाई०, ऊदाहट० } ना० स्त्री० कपिल, भूरापन।
ऊधो० ना० पु० श्रीकृष्णका एक सखा।
ऊन० ना० स्त्री० भेड़ी आदि के बाल, थोड़ा, न्यून।
ऊनविंश०, ऊनविंशति० } ना० पु० उन्नीस।
ऊना० ना० पु० खड्गविशेष, धोप।
ऊनी० गु० जो ऊन से बना है।
ऊपर० ना० पु० उपरि।
ऊपरिस्थ० गु० ऊपर ठहरा भया।
ऊबट० गु० औघट, अगम्य, कुमार्ग।
ऊमरि० ना० स्त्री० गूलरिका वृक्ष।
ऊर्ज्ज० ना० पु० कार्त्तिकमास।
ऊर्ण० ना० पु० मेषादिके लोम, ऊन।
ऊर्णनाभि० ना० स्त्री० मकड़ी।
ऊर्णायु० ना० स्त्री० भेड़ी।
ऊर्ध्व० गु० ऊपर।
ऊर्ध्वकण्डा० ना० स्त्री० बड़ी सतावरि।
ऊर्ध्वतिक्त० ना० पु० चिरायता।
ऊर्ध्वपुण्ड्र० ना० पु० वैष्णवीतिलक।
ऊर्ध्वरेता० ना० पु० संन्यासी, ऋषि और जितेन्द्रिय जिसका किसीप्रसंग में काम पतन न हो।
ऊर्ध्वश्वास०, ऊर्ध्वस्वास० } ना० पु० ऊपरकी श्वासा।
ऊर्ध्वं० अव्य० ऊपर।
ऊर्मिला० ना० स्त्री० संज्ञाविशेष।
ऊलूआ० ना० पु० तृणविशेष।
ऊषण० ना० पु० कालीमिरच और पीपरामूल।
ऊष्मा० ना० स्त्री० गर्मी, क्रोध, रोष।
ऊपर० ना० पु० ऊसर।
ऊषरपा० ना० पु० खारीलोन।
ऊषा० ना० स्त्री० बाणासुर की कन्या।
ऊषाकाल० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का।
ऊसर० ना० पु० वह धरती जिसमें अन्नआदि उत्पन्न नहीं होता है।
ऊह० ना० पु० तर्क।

(ऋ)

ऋक्०, ऋग्० } ना० पु० प्रथम वेद।
ऋकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्त में ऋकार हो।
ऋचा० ना० स्त्री० वेदके मंत्र।
ऋजु० गु० सरल, सीधा।
ऋजुभुज० गु० सीधीरेखा वा भुजा मेंड़।
ऋजुभुजक्षेत्र० ना० पु० वह क्षेत्र जो कई सूधीरेखाओं से घिराहो।
ऋण० ना० पु० उधार, कर्ज़।
ऋणक० गु० कर्ज़दार।
ऋणिया० गु० धरता, करज़ी।
ऋणी० पु० करजदार।
ऋतु० ना० स्त्री० वसंतादि छः, अर्थात् वसंत १, ग्रीष्म २, वर्षा ३, शरद् ४, हेमन्त ५, शिशिर ६, और रज, समय, मौसम।
ऋतुमती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से।
ऋतुराज० ना० पु० वसंतबहार।

ऋद्धि० } नो० स्त्री० पार्वती जी, औषधि, पौ-
ऋधि० } धा विशेष, धन, सम्पदा।

ऋषि० ना० पु० वेदज्ञ, मुनि और तपस्वी।

ऋषिपति० ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान, बहु विद्यानिधान, भागवतधर्मी।

ऋषिमित्र० ना० पु० शान्तप्रिय, फकीरों का दोस्त, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र बोधक।

ऋषिराज०
ऋषीश० } ना० पु० ऋषिपति।
ऋषीश्वर०

ऋषभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ।

ऋक्ष० ना० पु० भालू, रीछ, तारा।

ऋक्षपति०
ऋक्षराज० } ना० पु० जाम्बवन्त और चन्द्रमा।
ऋक्षेश०

[ए]

ए० अव्य० ग्यारहवां अक्षर, सम्बोधनका सूचक।

एक० गु० गिनती का प्रथम अंक, अद्वितीय १।

एककाल० गु० समान समय, और एकसमय।

एककालीन० गु० समानकाल में उत्पन्न भया, हम उमर।

एकटक० ना० पु० एक ताकसे देखना।

एकट्ठा० गु० जो एक स्थान में जमाकिया वा भया है।

एकतराज्वर० ना० पु० अन्तरिया, तिजरा वा तिजारी।

एकतही० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मिरजाई।

एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल, समानता।

एकतान० गु० एकमति, दुबिधारहित।

एकदा० अव्य० एकसमय।

एकरस० गु० षट्भाव विकाररहित।

एकरूप० ना० समभाव।

एकलोटा० } गु० जो लड़का अपने मातापिता
एकजोता० } का अकेलाहोवे।

एकवचन० गु० बात एक मुख्य नर।

एकवर्णात्मक० गु० जिस शब्दमें एकअक्षरहै।

एकसर० गु० एकमति, दुबिधारहित।

एकसा० गु० समान, बराबर।

एकसार० समान, एकरस।

एकक्षत्र० ना० पु० विनाखटके, एकहीराज्य।

एकत्र० अव्य० एकठौर, एकस्थान।

एकत्रता० ना० स्त्री० एकठौरहोना।

एकाई० ना० स्त्री० एकता।

एकाएकी० अव्य० अचानक, एकबार में।

एकाकार० गु० समान रूप, कलिधर्म्म,एकजाति, एकाचार, ब्राह्मणादि का विशेष वर्ण धर्मको त्यागिके पश्चात् समान रहना।

एकाकी० गु० अकेला।

एकाग्र० गु० एकमन, एकमति, दुबिधारहित।

एकांक० गु० निश्चयकरि, सत्य।

एकादशी० ना० स्त्री० पक्षकी ग्यारहवींतिथि।

एकाधिपति० ना० पु० अनेकदेशोंका एकराजा।

एकान्त० गु० निराला, निपट, निर्जनस्थान।

एकान्तर० ना० पु० एकओर।

एकान्तरकोण० ना० पु० एकओरका कोना।

एकायन० गु० एकमति, एकमार्ग।

एकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें एकारहो।

एकाक्ष० ना० पु० काक, काना।

एकैआंक० अव्य० निश्चयकरि सत्य।

एकैक० गु० प्रत्येक, हरएक।

एड़० ना० स्त्री० घोड़ेको दौड़ाने वा चलाने के निमित्त पांवके पिछले भागकी ठोकरमारना।

एड़ी० ना० स्त्री० पांवका पिछलाभाग।

एण० ना० पु० पाप, हानि, मृग, हरिण, घर, कपट।

एणी० ना० स्त्री० हरिणी।

एणीन० ना० स्त्री० एणीका बहुवाक्य।

एणमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।

एतदर्थ० अव्य० इसलिये।

एतना० गु० इतना, इसक़दर।

एतान० गु० इतने, इसक़दर, इसप्रकार।

एतादृश॰ गु॰ ऐसे, इसप्रकार।

एतावता॰ अव्य॰ इसकरके, इसकारण।

एतावन्मात्र॰ गु॰ इतनाही, यहीकेवल।

एरण्ड॰ ना॰ पु॰ अरण्ड, रेंड।

एलवा॰ } ना॰ पु॰ औषधि विशेष
एलवालुक॰ } अर्थात् मुसब्बर।
एलवालु॰ }

एला॰ ना॰ स्त्री॰ इलायची।

एलोई॰ ना॰ पु॰ हे हमारे ईश्वर।

एव॰ }
एवं॰ } अव्य॰ इसप्रकार, और।
एवम्॰ }

एवमस्तु॰ अव्य॰ ऐसाही हो।

[ऐ]

ऐंच॰ ना॰ पु॰ संकोच, खैंच।

ऐंचना॰ स॰ क्रि॰ खैंचना।

ऐंठ॰ ना॰ स्त्री॰ बल, मड़ोड़।

ऐंठना॰ स॰ क्रि॰ मरोड़ना, बलदेना, अ॰ क्रि॰ बलखाना, मरुड़िजाना।

ऐकाधिपत्य॰ ना॰ पु॰ अद्वितीय देशाधिपत्य, पदवी।

ऐकाहिक॰ ना॰ पु॰ अन्तरिया।

ऐक्य॰ ना॰ पु॰ एकता, समानता।

ऐगुन॰ गु॰ औगुण।

ऐनमैन॰ गु॰ ज्योंकात्यों।

ऐन्द्रजालिक॰ ना॰ पु॰ नटवर, दिठबंध।

ऐरावत॰ ना॰ पु॰ इन्द्रका हाथी।

ऐरावती॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।

ऐवक्का॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।

ऐश्वर्य्य॰ ना॰ पु॰ विभव, माहात्म्य, सम्पत्ति, प्रताप, बढ़ती।

ऐश्वर्यवान्॰ } गु॰ सम्पत्ति करके सुशो-
ऐश्वर्यशाली॰ } भित।

ऐसा॰ गु॰ इसप्रकार, इसके समान।

ऐहिक॰ गु॰ इसलोक के भोग, जो इहांहैं।

[ओ]

ओ॰ अव्य॰ सम्बोधन, करुणा, स्मृति।

ओंठ॰ ना॰ पु॰ ओष्ठ, होंठ।

ओंडा॰ गु॰ गम्भीर।

ओंधा॰ गु॰ औंधा, रस्सी जो छप्पर में बांधते हैं।

ओक॰ ना॰ पु॰ घर, आश्रय, ठिकाना, ना॰ स्त्री॰ उबकाई।

ओकना॰ अ॰ क्रि॰ वमन करना, उछाल करना।

ओकारान्त॰ गु॰ जिसके अन्तमें ओकार है।

ओखली॰ ना॰ स्त्री॰ गाली, उलूखल।

ओघ॰ ना॰ पु॰ समूह, बहुतायत।

ओछा॰ गु॰ छिछोरा, हलका, छोटा।

ओज॰ ना॰ पु॰ प्रताप, बल, तेज।

ओझ॰ ना॰ पु॰ पचौनी, झोंझ, पेट।

ओझड॰ ना॰ स्त्री॰ झोंक, धक्का।

ओझडी॰ ना॰ स्त्री॰ पचौनी, आंत।

ओझल॰ ना॰ स्त्री॰ ओट, छुपाव, गु॰ जो छुपा है।

ओझा॰ ना॰ पु॰ भोकस, टोनहा, यंत्री वा शाक्तधर्मी।

ओट॰ ना॰ स्त्री॰ आड़, पक्ष।

ओटना॰ स॰ क्रि॰ आड़ करना, बचाना, रेतना, रुईसे बिनौला निकालना, रोकना।

ओटा॰ ना॰ पु॰ आड़, बैठन।

ओड़न॰ ना॰ स्त्री॰ ढाल, फरी।

ओडना॰ स॰ क्रि॰ सहना, रोकना।

ओडा॰ ना॰ पु॰ खांचा, बड़ा, टोकरा।

ओढ़ना॰ स॰ क्रि॰ पहिरना, ना॰ पु॰ रजाई, पट्टू, लोई आदि।

ओढ़नी॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्रियों का ओढ़ना।

ओत॰ ना॰ स्त्री॰ बढ़ोतरी, बचती, हीनता।

ओतप्रोत॰ ना॰ पु॰ तानाबाना, चौड़ाई, लम्बाई में ग्रन्थित, पलटे पर विवाह।

ओदन॰ ना॰ पु॰ भात, चावल पके।

ओदा॰ गु॰ गीला, भीगा।
ओधे॰ गु॰ अधिकारी, लागे।
ओप॰ ना॰ स्त्री॰ सुन्दरता, चमचमाहट, घोट।
ओपना॰ स॰ क्रि॰ घोटना, साफकरना।
ओपनी॰ ना॰ स्त्री॰ वह किसान जिस पर जिला करते हैं।
ओपी॰ अव्य॰ उधर, कि, गु॰ साफ की।
ओर॰ ना॰ स्त्री॰ कगार, मार्ग, अलँग।
ओरी॰ गु॰ पक्ष, पक्षी, मदद, ना॰ स्त्री॰ ओलती।
ओल॰ ना॰ पु॰ सूरण, जिमीकन्द, मनोती, बदले।
ओलती॰ ना॰ स्त्री॰ ओरौनी, ओरी।
ओला॰ ना॰ पु॰ जलमय पत्थर और चीनी शकर का जो बनता है।
ओषधि॰ ना॰ स्त्री॰ जो पौधा फल झरजाने के पीछे फिर से उत्पन्न हो।
ओष्ठ॰ ना॰ पु॰ दांतों का ढकना, होंठ।
ओस॰ ना॰ स्त्री॰ जो रात्रि समय छोटी २ फुहार पड़ती है, शीत।
ओसर॰ ना॰ स्त्री॰ कलोर भैंस।
ओसरा॰ ना॰ पु॰ } पारी, बारी, पंती।
ओसरी॰ ना॰ स्त्री॰ }
ओसीसा॰ ना॰ पु॰ उसीसा, सिरहाना।
ओहो॰ अव्य॰ वाहवाह, आहा।

[औ]

औ॰ अव्य॰ और।
औंगी॰ ना॰ स्त्री॰ चुप्पी, झगापन, चुपड़ीहुई गाड़ी।
औंघाना॰ अ॰ क्रि॰ झपकीआना।
औंड॰ ना॰ पु॰ बेलदार।
औंडा॰ गु॰ गम्भीर।
औंधना॰ अ॰ क्रि॰ उलटना, उमण्डना।
औंधा॰ गु॰ उलटा।
औंधाना॰ स॰ क्रि॰ उलटाना।
औकारान्त॰ गु॰ जिसके अन्तमें औकारहै।
औघट॰ गु॰ अगम्य, जहां जाय न सके।
औचक॰ } अव्य॰ अचानक, नागहान।
औचट॰ }
औछ॰ ना॰ पु॰ जड़विशेष।
औटन॰ ना॰ पु॰ जलाव।
औटना॰ स॰ क्रि॰ जलाना, सुखाना।
औत्तानपादि॰ ना॰ पु॰ ध्रुव, भक्त प्रसिद्ध।
औत्कर्ष्य॰ ना॰ पु॰ श्रेष्ठता, उत्तमता।
औत्सुक्य॰ ना॰ पु॰ चिन्ता, व्याकुलता, पछितावा।
औथरो॰ गु॰ उथला, कम गहरा।
औदात॰ गु॰ अवदात, श्वेत।
औदार्य॰ ना॰ पु॰ दातापन, उदारता।
औदासीन्य॰ ना॰ पु॰ विषयों में वैराग्य।
और॰ अव्य॰ पुनः, फिर, गु॰ अधिक, दूसरा।
औरस॰ ना॰ पु॰ व्याहिताका पुत्र।
और्ध्वदैहिक॰ ना॰ पु॰ मृतक की क्रिया।
औषध॰ } ना॰ स्त्री॰ रोगनाशक द्रव्य, दवा, इलाज।
औषधि॰ }
औषधिपति॰ } ना॰ पु॰ चन्द्रमा।
औषधीश॰ }

[क]

क॰ अव्य॰ ना॰ पु॰ जल, सुख, अग्नि, शिर, काम, सुवर्ण।
ककड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ फल वा तरकारी विशेष।
ककरहा॰ } ना॰ पु॰ बारहखड़ी, वर्ण।
ककहरा॰ }
ककार॰ ना॰ पु॰ क।
ककुभा॰ ना॰ स्त्री॰ दिशा और छन्दविशेष।
ककुष्ट॰ ना॰ पु॰ नींबवृक्ष।
ककुस्त॰ ना॰ पु॰ धनियां मसाला, कशनीज।
ककोरना॰ स॰ क्रि॰ खोदना, खरोचना।
कखरी॰ ना॰ स्त्री॰ कांख, बगल।
कखवारी॰ } ना॰ स्त्री॰ कांखका फोड़ा।
कखौरी॰ }

कगर० ना० स्त्री० छोर, अन्त, किनारा ।

कंक० ना० पु० कुहीपक्षी ।

कंकण० ना० पु० हाथका भूषण विशेष ।

कंकर० ना० पु० जिस से चूना बनताहै, बहुत कड़ी मिट्टी, नीच ।

कंकाली० ना० स्त्री० डाकिनी ।

कंगनी० ना० स्त्री० पौधाविशेष, मालकंगुनी ।

कंगरोड़० ना० पु० रीड़, पक्षीविशेष ।

कंगाल० गु० अधनी, भिखारी, दरिद्री ।

कंगालता० ना० स्त्री० दरिद्रता, निर्धनता ।

कंगालिन० ना० स्त्री० डाकिनी, डायन, दरिद्रिनि ।

कंगनी० ना० स्त्री० कंगनी ।

कंगरा० ना० पु० गुम्मद, मठादिक, काकवारः ।

कंघा० ना० पु० } बाल झाड़नेके लिये काष्ठादि की वस्तु ।
कंघी० ना० स्त्री० }

कच० ना० पु० बाल, केश ।

कचकना० अ० क्रि० मुरकना, गिराना ।

कचकचाना० अ० क्रि० किरकिराना, भिनभिनाना ।

कचकाना० स० क्रि० मुरकाना ।

कचनार० ना० स्त्री० वृक्षविशेष ।

कचपचिया० ना० पु० गुच्छतारोंका,कृत्तिका ।

कचरा० ना० पु० } फल विशेष ।
कचरी० ना० स्त्री० }

कचहरी० ना० स्त्री० सभा, समाज, मजलिस ।

कचाई० ना० स्त्री० [illegible], कच्चापन ।

कचालू० ना० पु० कन्दविशेष ।

कचियाहट० ना० स्त्री० घिनघिनाना ।

कचूर० ना० पु० औषध विशेष ।

कचौरी० ना० स्त्री० पूरी पीठी वा धोईभरी ।

कच्चा० गु० आम, अनाड़ी, अनपका ।

कच्छ० ना० पु० कछुवा वा द्वितीय विष्णुजीका अवतार, देश जो गुजरात के पासहै कछनी ।

कच्छप० ना० पु० कूर्म, कछुआ ।

कच्छी० गु० जो कच्छदेश का घोड़ा आदिहो ।

कछ० ना० स्त्री० काछ ।

कछना० स० क्रि० धोना, पोछना, ना० पु० काछ ।

कछनी० ना० स्त्री० काछबांधना ।

कछलम्पट० गु० कुकर्मी, व्यभिचारी, अजितेन्द्रिय ।

कछवाहा० ना० पु० राजपुत्र का वर्ण जो श्री रामचन्द्रके पुत्र कुशनामीसे उत्पन्न भया ।

कछार० ना० स्त्री० नदी की तराई वा किनारा ।

कछारना० स० क्रि० छांटना, धोना ।

कछु० सर्व० कुछ, किंचित् ।

कछुरा० ना० पु० जवासा ।

कछू० सर्व० कुछ, किंचित् ।

कज० ना० पु० कंज, कमल ।

कजरा० ना० पु० काजल, गु० काजललगाये ।

कजरारे० गु० काजललगाये हुये ।

कजला० गु० काला, काजल लगाय ।

कज्जल० ना० पु० काजल, अंजन, सुरमा ।

कज्जलगिरि० ना० पु० काजलका पर्वत ।

कञ्चन० ना० पु० सुवर्ण, कनक, जातिविशेष ।

कञ्चनक० ना० पु० कचनार, मैनफल ।

कञ्चनी० ना० स्त्री० कंचन जाति की स्त्री, मोची, पतुरिया, सोन की पुतली ।

कञ्चु० } ना० स्त्री० चोली, अंगिया ।
कञ्चुकी० }

कञ्ज० ना० पु० कमल ।

कञ्जर० ना० पु० जातिविशेष जो रस्सी वा सिरकी बेचते हैं ।

कञ्जा० गु० जिसकी आंख की पुतली नीली पीली हैं, ना० पु० वृक्ष वा उसका फल ।

कञ्जिया० ना० स्त्री० आंखकी फुड़िया, छोटी फुड़िया ।

कञ्जूस० गु० सूम, कृपण, लालची ।

कञ्जूसी० ना० स्त्री० कृपणता ।

कटक॰ ना॰ पु॰ सैन, फ़ौज, दल, नगर, विशेष जो उड़ैसा देशमें है।
कटकट॰ ना॰ पु॰ झगड़ा, दांतोंसे दांतलड़ाना।
कटकटाना॰ स॰ क्रि॰ चबाना किसी वस्तुका।
कटकटेरि॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।
कटकना॰ ना॰ पु॰ बांधना, उपाय, ठेका।
कटकाया॰ ना॰ स्त्री॰ सेमरवृक्ष।
कटघरा॰ ना॰ पु॰ कटहरा।
कटंकटी॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।
कटना॰ अ॰ क्रि॰ कटिजाना, लज्जितहोना, घायल होना, मोहित होना।
कटनी॰ ना॰ स्त्री॰ कटाई, अनाज काटने का समय वा काटने की वस्तु यथा कैंची।
कटफल॰ ना॰ पु॰ कायफल।
कटम्भरी॰ ना॰ स्त्री॰ स्यौना वृक्ष।
कटरा॰ ना॰ पु॰ हाट, चौक।
कटहरा॰ ना॰ पु॰ कटहरा, बड़ापिंजड़ा।
कटहू॰ गु॰ काटनेवाला।
कटा॰ ना॰ स्त्री॰ माराजाना बहुत लोगोंका।
कटाक॰ ना॰ स्त्री॰ जो दस्त दर्दहोकर आवै।
कटाना॰ स॰ क्रि॰ किसीपदार्थके टुकड़ेकराना।
कटार॰ ना॰ पु॰ खंजर।
कटारा॰ ना॰ पु॰ औषधि, पौधा विशेष।
कटारी॰ ना॰ स्त्री॰ खंजर, छुरी।
कटाह॰ ना॰ पु॰ कड़ाह, कड़ाही।
कटाक्ष॰ ना॰ पु॰ वानरविशेष, ना॰ स्त्री॰ तिरछी चितवन।
कटि॰ ना॰ स्त्री॰ लंक, कमर।
कटित॰ गु॰ खपत।
कटिबन्ध॰ ना॰ पु॰ पृथ्वीके लघु भाग करनेके लिये उसके पांच कटिबन्ध नियत किये अर्थात् शीत कटिबन्ध दो, और सम कटिबन्ध दो २, उष्ण १।
कटीला॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष, गु॰ कांटोंवाला सजीला, सावन्त।

कटु॰ }
कटुक॰ } गु॰ कडुवा, कड़ा, बुरा।
कटुकी॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी औषधि।
कटुग्रन्थ॰ ना॰ स्त्री॰ पिपरामूल।
कटुत्कटे॰ }
कटुभद्र॰ } ना॰ स्त्री॰ सोंठि।
कटुभी॰ ना॰ स्त्री॰ मालकंगुनी।
कटुरोहिणी॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी औषधि।
कटैया॰ ना॰ स्त्री॰ पौधा कांटोंवाला विशेष।
कटोरा॰ ना॰ पु॰ }
कटोरी॰ ना॰ स्त्री॰ } भोजन करने का पात्र विशेष।
कट्ठा॰ ना॰ पु॰ काठका जिसपर कपड़ा धोतेहैं।
कण्टकी॰ गु॰ रोमांचित, रोमखड़ेहुये।
कठन्दर॰ ना॰ पु॰ काष्ठोदर, रोगविशेष।
कठड़ा॰ ना॰ पु॰ }
कठड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ }
कठरा॰ ना॰ पु॰ }
कठरी॰ ना॰ स्त्री॰ } काठ की थाली वा पात्र विशेष।
कठवत॰ ना॰ स्त्री॰ काठका बर्त्तन विशेष।
कठारी॰ ना॰ स्त्री॰ काठका बर्त्तन, कमण्डल।
कठिन॰ गु॰ निष्ठुर, कठोर, कड़ा, मुश्किल।
कठिनता॰ ना॰ स्त्री॰ }
कठिनत्व॰ ना॰ पु॰ } कठोरता, निठुरता, कड़ापन, सख्ती।
कठिया॰ ना॰ स्त्री॰ काठकी छोटीमाला, काठका छोटासा पात्र।
कठिल्ल॰ ना॰ पु॰ करेला तरकारी।
कठेठो॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ी, कठिन।
कठोर॰ गु॰ निठुर, कड़ा, असह, ना॰ पु॰ बेल वृक्ष वा उसका फल।
कठोरता॰ ना॰ स्त्री॰ निठुरता, निठुराई।
कठोलिया॰ ना॰ स्त्री॰ काठका छोटासा पात्र।
कठौता॰ ना॰ पु॰ }
कठौती॰ ना॰ स्त्री॰ } काठका बड़ापात्र।
कड़क॰ ना॰ स्त्री॰ धड़ाका, चटक, गर्जनि, स्फूर्त्ति।
कड़कना॰ अ॰ क्रि॰ चटकना, धड़कना, गरजनी।

कड़खा० ना० पु० युद्धमें बढ़ावा देनेकी बात कहना।
कड़खैत० गु० भाट जो बढ़ाव देता है।
कड़ुआ० गु० तीता, तीक्ष्ण, निठुर, योद्धा।
कड़ुवाहट० ना० स्त्री० तीक्ष्णता।
कड़ा० गु० कठोर, दृढ़, मगरा, ढीठ,निठुर, ना० पु० लोहेका वा चांदी आदिका भूषण जो हाथमें पहिनते हैं।
कड़ाड़ा० ना० पु० नदीका ऊंचा किनारा।
कड़ाह० ना० पु० दुग्धादि औटने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनानक का भोग।
कड़ाही० ना० स्त्री० छोटा कड़ाह।
कड़ी० ना० स्त्री० कांडी, धरनी, धन्नी।
कड़ुं० ना० स्त्री० खुजली, खारिश।
कढ़ाना० अ० क्रि० निकलना, उठना, चितना।
कादिल्लक० ना० पु० लालपुनर्नवा।
कढ़ी० ना० स्त्री० भोजन विशेष जो बेसन औ दही से बनता है।
कढुआ० ना० पु० उधार, कर्ज।
कण० ना० पु० धान्य, अनाज, राज्यग्राह्यद्रव्य चार्य:।
कणा० ना० स्त्री० पीपरी।
कणमूल० ना० पु० पीपरामूल।
कणासुफल० ना० पुं० अंकोलऔषधि।
कणिका० ना० स्त्री० सोनजुही, अणु, लेश, टुकड़ा, जर्र:।
कणी० ना० स्त्री० छिटक, टुकड़ा, जर्र:।
कण्टक०ना० पु० कांटा, गोखुरू, शत्रु, कृपण, पित्तपापड़ा।
कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फलविशेष।
कण्टकारि० } ना० स्त्री० छोटीकटाई, सफेद
कण्टकिनी० } घीकुवारि।
कण्टकिफल० ना० पु० कटहल।
कण्टकी० ना० पु० बिल्व, बेलु।
कण्टफल० ना० पु० गोखुरू।
कण्टार० गु० कटीला।
कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सफेदकटाई।
कण्टिया० ना० स्त्री० आंकड़ी।
कण्ठ० ना० पु० गला, घांटी, उपस्थित, मुखाग्र।
कण्ठगत० गु० गले में जान वा लब।
कण्ठमाल० } ना० स्त्री० गलेकीमाला, मुख्य-
कण्ठमाला० } रोग जिसमें गला सड़जाता है।
कण्ठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बहुयन्त्रयुत बनाते हैं।
कण्ठस्थ० ना० पु० मुखाग्र।
कण्ठा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला।
कण्ठाग्र० गु० मुखाग्र, जबानी।
कण्ठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण।
कण्ठी० ना० स्त्री० छोटीमाला तुलसी आदिकी।
कण्ठीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर।
कण्ठ्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कंठ से होवे।
कण्डा० ना० पु० उपला।
कण्डी० ना० स्त्री० छोटाउपला।
कण्डुपुष्पी० ना० स्त्री० शंखाहुली।
कण्डू० ना० पु० रोगविशेष, स्त्री० जमुहाई।
कण्डूघ्न० ना० स्त्री० पवारं, औषधि।
कण्डेरा० ना० पु० धुनियां, जाति विशेष जो तीर बनाते हैं, कमानगर।
कण्व० ना० पु० मुनिविशेष।
कत० अव्य० कहां, क्योंकर, किसलिये।
कतना० अ० क्रि० काताजाना।
कतरन० } ना० पु० काटन।
कतरा० }
कतरना० स० क्रि० काटना।
कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची।
कतराना० स० क्रि० कटवाना।
कतहु० अव्य० कभी।
कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का पैसा।
कतीरा० ना० पु० गोंदविशेष।
कत्त० अव्य० कहां, क्योंकर।

कत्था॰ ना॰ पु॰ खदिर, खैर।

कत्तायल॰ ना॰ पु॰ कालाहरिण।

कथक॰ गु॰ पौराणिक, पवांरिया, कथिक।

कथन॰ ना॰ पु॰ कहना, वाक्य का प्रयोग कहना।

कथना॰ अ॰ क्रि॰ कहना।

कथनीय॰ गु॰ कहने के योग्य।

कथा॰ ना॰ स्त्री॰ कहानी, वृत्तांत, पवांरा।

कथित॰ गु॰ कहाहुआ।

कथोपकथन॰ ना॰ पु॰ आलाप, परस्पर बात चीत।

कथ्य॰ ना॰ स्त्री॰ हर्र, गु॰ कहने योग्य।

कद्॰ अव्य॰ कब।

कदध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ अतिमार्ग, कठिनमार्ग।

कदन॰ ना॰ पु॰ नाशक, बधिक।

कदम्ब॰ ना॰ पु॰ समूह, वृक्षविशेष, कदम।

कदम्बक॰ ना॰ पु॰ समूह, गिरोह।

कदर्य॰ गु॰ लोभी, कंजूस।

कदली॰ ना॰ पु॰ केलावृक्ष।

कदक्षर॰ ना॰ पु॰ कुत्सित वर्ण।

कदा॰ अव्य॰ कब।

कदाचार॰ गु॰ शास्त्र से विपरीत व्यवहार।

कदाचित्॰, **कदापि॰** } अव्य॰ जो कभी होता हो, शायद।

कदेन॰ ना॰ पु॰ दुःख, क्लेश।

कद्रू॰ ना॰ स्त्री॰ कालीनाग की माता, कश्यपजी की स्त्री।

कधू॰ अव्य॰ कभी।

कन॰ ना॰ पु॰ कण, अणु।

कनक॰ ना॰ पु॰ सोना, धतूरा।

कनकटा॰ गु॰ बूचा।

कनकाचल॰ ना॰ पु॰ सुमेरुपर्वत जो मनुष्य को अगम्य है।

कनखजूरा॰ ना॰ पु॰ गोजर, कीट प्रसिद्ध।

कनल॰ ना॰ पु॰ भिलावां।

कनवाई॰ ना॰ स्त्री॰ कान छेदना।

कनागत॰ ना॰ पु॰ आश्विनकृष्णपक्षमें पितरों का श्राद्ध।

कनिक॰ ना॰ पु॰ चून, पिसान, आटा।

कनियाना॰ स॰ क्रि॰ संकोच से कतरायजाना, आंख छुपाना।

कनियाहट॰ ना॰ स्त्री॰ खींच, संकोच।

कनिष्ठ॰ गु॰ छोटा।

कनिष्ठा॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवीं अंगुली, नीचली।

कनिष्ठिका॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवी अंगुली।

कनिहा॰ गु॰ घूना।

कने॰ अव्य॰ पास, साथ।

कनेर॰, **कनेल॰** } ना॰ पु॰ करवीरवृक्ष जिसका फूल देवतों को चढ़ता है।

कनैया॰ ना॰ पु॰ कर्णवेधन, ना॰ स्त्री॰ डाली।

कनौज॰ ना॰ पु॰ प्राचीन नगर, विशेषदेश।

कनौजिया॰ गु॰ कनौजदेशका वासी।

कन्त॰ ना॰ पु॰ स्वामी, भर्त्तार, प्रियतम, मालिक।

कन्था॰ ना॰ स्त्री॰ कथड़ी, गूदड़ी, नीतौ यथा (शनैःकन्था शनैःपन्था शनैःपर्वतलंघनम्, शनैर्विद्या शनैर्वित्तमेते पंचशनैःशनैः)।

कन्द॰ ना॰ पु॰ जड़ विशेष वा जो जड़ में फलता है यथा, सूरण, घुइयां, आलू और मेव धूलि।

कन्दरा॰ ना॰ स्त्री॰ खोह, गुफा।

कन्दराल ना॰ पु॰ अखरोट।

कन्दर्प॰ ना॰ पु॰ कामदेव।

कन्दलकन्द॰ ना॰ पु॰ जिमीकन्द।

कन्दला॰ ना॰ पु॰ कोंचबीज।

कन्दासी॰ ना॰ स्त्री॰ पियाबासा।

कन्दुक॰ ना॰ पु॰ कैथावृक्ष वा उसकाफल, गेंद।

कन्ध॰ ना॰ पु॰ कांधा।

कन्धर॰ ना॰ पु॰ गला, मेघ।

कन्धा॰ ना॰ पु॰ कांधा।

कान्धियाना॰ स॰ क्रि॰ कोई वस्तु कांधे पर रखना।

कन्धेली० ना० स्त्री० खोगीर, जो घोड़ों को उढ़ाते हैं।

कन्यका० ना० स्त्री० कुमारी, कन्या।

कन्या० ना० स्त्री० बेटी, छठीराशि, दश वर्षतक की लड़की।

कंस० ना० पु० श्रीकृष्णका मामू।

कन्हाई० } **कन्हैया०** } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक नाम।

कपना० अ० क्रि० थरथराना।

कपकपी० ना० स्त्री० थरथराहट, फुरफुरी।

कपट० ना० पु० छल, फरेब, खोटाई और भगल।

कपटभू० ना० स्त्री० मायाभूमि, तिलस्माती जमीन।

कपटी० गु० छली, खोटा, बहुरूपिया।

कपड़ा० ना० पु० वस्त्र।

कपड़ोंसेहोना० अ० क्रि० रजोधर्म होना, ऋतुमती होना।

कपर्दी० ना० पु० श्रीमहादेवजी बरगद।

कपाट० ना० पु० किवाड़, पट।

कपार० } **कपाल०** } ना० पु० माथा, ललाट, भाग्य।

कपालभृत्० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

कपाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी और श्रीभैरवजी।

कपास० ना० स्त्री० रुईका वृक्ष, कर्पास।

कपि० ना० पु० बानर, बन्दर।

कपिकुञ्जर० ना० पु० श्रेष्ठ बानर।

कपितन० ना० पु० पारस, पीपल।

कपित्थ० ना० पु० कैथाका वृक्ष।

कपिध्वज० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।

कपिन्द्र० } **कपीन्द्र०** } ना० पु० मुख्य बानर और श्रेष्ठ बानर।

कपिपति० ना० पु० सुग्रीव, गु० जो बानरोंका राजा होवे।

कपिपिप्पली० ना० स्त्री० लालऊंगा।

कपिभूत० ना० पु० पारस, पीपल।

कपिल० ना० पु० मुनिविशेष, सांख्यशास्त्र के वक्ता, पीतलधातु।

कपिला० ना० स्त्री० पिंगलवर्णकीगाय, रेणुका।

कपिलदेव० ना० पु० आदिअवतार।

कपिल्य० ना० स्त्री० कपाला औषधि।

कपीश० ना० पु० सुग्रीव बानरोंका राजा।

कपूर० ना० पु० सुगन्धि विशेष, काफूर।

कपोत० ना० पु० कबूतर, परेवा।

कपोतवर्णा० ना० स्त्री० छोटीइलायची।

कपोताक्ष० ना० पु० नद विशेष।

कपोतिका० ना० स्त्री० मूली तरकारी।

कपोल० ना० पु० गाल।

कफ० ना० पु० खखार, श्लेष्मा, बलगम।

कफोब्धिज० ना० पु० समुद्रफेन।

कब० अव्य० कहां, कदा।

कबड्डी० ना० स्त्री० गपड्डी खेल विशेष।

कबन्ध० ना० पु० विनामस्तक की देह और पानी, मेघ, राहु, (उभेपूर्वापरेसंध्ये नित्यं पश्यामिभारत, उदयास्तमयेसूर्यं कबन्धैः परिवारित) इतिमहाभारते।

कबरा० गु० कर्बुर, चितला, अबलक।

कबारू० ना० पु० काम, उद्यम, तरकारी।

कभी० } **कभू०** } ना० पु० अव्य० कभी, कदापि, कधी।

कमठ० ना० पु० कछुवा।

कमठा० ना० पु० धनुष, कमान।

कमठी० ना० स्त्री० कछुई, धनुही।

कमण्डलु० ना० पु० दण्डियों का जलपात्र, करवा।

कमनीय० गु० सुन्दर, मनोवत।

कमन्दर० ना० स्त्री० सीपी यथा (मुक्तास्फोटाब्धि मंडूकी शुक्ति मौक्तिक मन्दरः) इति निघंटे।

कमरख० ना० पु० फलविशेष और वस्त्र विशेष।

कमल॰ ना॰ पु॰ पद्म ।

कमलज॰ }
कमलभव॰ } ना॰ पु॰ ब्रह्मा ।

कमलवायु॰ ना॰ पु॰ कांवर, रोगविशेष जिसमें देह और आंखी पीली होजाती हैं ।

कमला॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्मी, श्री ।

कमलाकर॰ ना॰ पु॰ तालाब ।

कमलासन॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा ।

कमलासिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती ।

कमलाक्ष॰ ना॰ पु॰ कमलनयन ।

कमलिनी॰ ना॰ स्त्री॰ पद्मिनी ।

कमाई॰ ना॰ स्त्री॰ उपार्जन, प्राप्ति, पैदायश ।

कमाऊ॰ गु॰ उद्यमी, यत्नी, देशविशेष पु॰ ।

कमाना॰ स॰ क्रि॰ उपार्जन करना, पैदा करना ।

कमेरा॰ गु॰ परिश्रमी, मिहनती ।

कमोदिनी॰ ना॰ स्त्री॰ कमलविशेष जो रातको खिलता है अर्थात् फूल ।

कमोरी॰ ना॰ स्त्री॰ मटकी, हंडी, दुग्धादि ।

कम्प॰ ना॰ पु॰ कपकपी, थरथराहट ।

कम्पना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना, थरथराना ।

कम्पवाय॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष जिसमें सारा शरीर कम्पा करता है ।

कम्पाहा॰ गु॰ थरथराहा ।

कम्पित॰ गु॰ कांपता भया ।

कम्पनी॰ ना॰ स्त्री॰ साहिब लोगों के बहुतों का मेल वा साझा, अंगरेजी शब्द ।

कम्बल॰ ना॰ पु॰ ऊनका वस्त्र ।

कम्बु॰ ना॰ पु॰ शंख, हाथी, कम्बासुर ।

कम्बुज॰ ना॰ स्त्री॰ हरसिंगार ।

कम्बुमालिनी॰ ना॰ स्त्री॰ शंखाहोली ।

कम्बोज॰ ना॰ पु॰ घोड़ा, राजाविशेष ।

कम्भारी॰ ना॰ स्त्री॰ औषधिविशेष ।

कम्बल॰ ना॰ पु॰ रोम वस्त्र, कम्बल ।

कर॰ ना॰ पु॰ हाथ, राजधन, महसूल, किरण, पुष्कर, विपया ।

करक॰ ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, दर्द ।

करकस॰ गु॰ कर्कश, लड़ाकू ।

करका॰ ना॰ पु॰ ओला, हिमोपल ।

कर्कशा॰ ना॰ स्त्री॰ लड़ाकी ।

करज॰ ना॰ स्त्री॰ अंगुली, नख ।

करट॰ ना॰ पु॰ कौआ ।

करटी॰ ना॰ पु॰ रांगा, ना॰ स्त्री॰ काकपत्नी ।

करण॰ ना॰ पु॰ साधन, कारकविशेष ।

करणी॰ ना॰ स्त्री॰ कर्म्म, क्रिया, थवई का एक हथियार कररा सम्बन्धी ।

करणीय॰ गु॰ अवश्य कर्त्तव्य ।

करतल॰ ना॰ पु॰ हथेली ।

करतलगत॰ गु॰ हाथ में ।

करताल॰ }
करताली॰ } ना॰ स्त्री॰ बाजा विशेष काठका हथेली की ताल ।

करतूति॰ ना॰ स्त्री॰ कर्त्तव्य, चाल, करणी ।

करतोया॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो बंगाले में है ।

करना॰ स॰ क्रि॰ बनाना, रचना ।

करनी॰ ना॰ स्त्री॰ करणी, कर्त्तव्य ।

करपल्लव॰ ना॰ पु॰ अंगुली वा उसका छोर ।

करपृष्ठ॰ ना॰ स्त्री॰ हाथकी पीठ ।

करबी॰ ना॰ स्त्री॰ ज्वारका पौधा ।

करभ॰ ना॰ पु॰ हाथी ।

करभप्रिय॰ ना॰ पु॰ पीलुवृक्ष ।

करभूषण॰ ना॰ पु॰ कंकणादि आभरण ।

करम॰ ना॰ पु॰ कर्म ।

करमर्दी॰ ना॰ पु॰ बड़ाकरौंदा ।

करमूल॰ ना॰ पु॰ कन्धा ।

करबार॰ गु॰ अल्पघातादि विघ्न ब्रजविलासे यथा, नन्द यशोमति भाग बड़ेरी, सुतकी करवर टरी केरेरी ।

करवाल॰ ना॰ पु॰ तलवार ।

करवीर॰ ना॰ पु॰ कनैलवृक्ष विशेष ।

करवीरक॰ ना॰ पु॰ कनैलवृक्ष ।

कररुह॰ ना॰ पु॰ नख, नाखून ।

करसम्पुट॰ ना॰ पु॰ हाथजोड़ना।

करहाट॰ ना॰ पु॰ सिफाकन्द, मैनफल।

करहाटक॰ ना॰ पु॰ सिफाकन्द।

करान्त॰ ना॰ पु॰ आरा।

करान्ती॰ गु॰ आरसे चीरनेहारे।

कराना॰ स॰ क्रि॰ बनाना, रचाना।

करायल॰ ना॰ पु॰ भोजनविशेष जूस।

करार॰ ना॰ पु॰ किनारा, गु॰ भयङ्कर, कराल।

करारा॰ ना॰ पु॰ कड़ारा, किनारा।

कराल॰ गु॰ भयङ्कर, टढ़ा, ना॰ स्त्री॰ विडंग औषधि।

कराली॰ ना॰ स्त्री॰ भयंकर, कठिन।

करावलि॰ ना॰ स्त्री॰ क्रिरणों का समूह।

कराहना॰ अ॰ क्रि॰ सांसभरना, दुःखकरना।

करिया॰ ना॰ पु॰ केवट, मल्लाह।

करिल॰ ना॰ पु॰ मठार जिसका शिर टूटाहो, बांसका नया पौधा।

करी॰ ना॰ पु॰ हाथी।

करीर॰
करीरक॰
करील॰ } ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष जो कांटों-वाला होता है।

करीष॰ ना॰ पु॰ गोबर की मांदि वा सूखे कण्डा और कोई २ कोयला बताते हैं।

करुणा॰ ना॰ स्त्री॰ दया, कोमलता।

करुणाकर॰ गु॰ दयाकर, दयाकी राशि, कोमलता की खानि।

करुणाकरना॰ स॰ क्रि॰ गुण कहिकर रोना, दया करना।

करेरा॰ गु॰ दृढ़, कड़ा, बलवान्।

करेरी॰ ना॰ स्त्री॰ दृढ़, कड़ी।

करेला॰ ना॰ पु॰ तरकारी विशेष।

करेत॰ ना॰ पु॰ सांप विशेष।

करोड़॰ गु॰ सौलाख १००००००० ।

करोड़ा॰ ना॰ पु॰ उगाहनेवाला, प्रधान।

करौंदा॰ ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फलविशेष।

कर्क॰
कर्कट॰ } ना॰ पु॰ चौथीराशिविशेष केकड़ा, गेंगटा।

कर्कटशृंगिका॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।

कर्कटा॰ ना॰ पु॰ बेरफलविशेष।

कर्कटाख्या॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।

कर्कटी॰ ना॰ स्त्री॰ ककड़ी, पिंडखजूर।

कर्कन्धु॰ ना॰ पु॰ बेरका वृक्ष वा फल।

कर्कल॰ ना॰ पु॰ अजमोद, सूक्ष्मवायु।

कर्कश॰ गु॰ कड़ा, कठोर, लड़ाका, असह।

कर्कशछदा॰ ना॰ स्त्री॰ केतकी।

कर्कार॰ ना॰ पु॰ कुम्हड़ा, खभड़ा।

कर्कोज॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।

कर्कोटक॰ ना॰ पु॰ मुख्य सर्प।

कर्कोटिका॰ ना॰ स्त्री॰ ककोड़ी औषधि।

कर्चूर॰ ना॰ पु॰ कचूर।

कर्चूरिका॰ ना॰ स्त्री॰ हाथकी चूड़ी, कचूरी।

कर्छा॰ ना॰ पु॰ कफगीर, बड़ा चमचा।

कर्छी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा कर्छा।

कर्ण॰ ना॰ पु॰ कान, पतवार, सूर्यसुत, कमान का रोद, वतर।

कर्णधार॰ ना॰ पु॰ मांझी, चढ़नदार।

कर्णफूल॰ ना॰ पु॰ कानका भूषणविशेष।

कर्णवेधन॰ ना॰ पु॰ कानकाछिदना, कनछेदन।

कर्णवेष्टन॰ ना॰ पु॰ कुंडल जो कानमें पहिनते हैं।

कर्णाट॰
कर्णाटक॰ } ना॰ पु॰ दक्षिण भरतखण्डका एक भाग विख्यात।

कर्णाखम्बित॰ गु॰ कानतक खींचना।

कर्णिकार॰ ना॰ पु॰ किदवाली ओषधि।

करणी॰ ना॰ स्त्री॰ क्रिया, कर्म, करण, जात।

कर्त्तव्य॰ ना॰ पु॰ करतूति, करने के योग्य।

कर्त्तव्यता॰ गु॰ स्त्री॰ चाल, करतूति।

कर्त्ता॰
कर्त्तार॰ } ना॰ पु॰ क्रियामें प्रधान होताहै, करनेवाला, सिरजनहार, प्रभु, भर्त्ता विशेष ब्रह्मा।

कर्तृकर्मभाव॰ ना॰ पु॰ कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध।